ISSN 2349-6614

जनवरी 2025

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

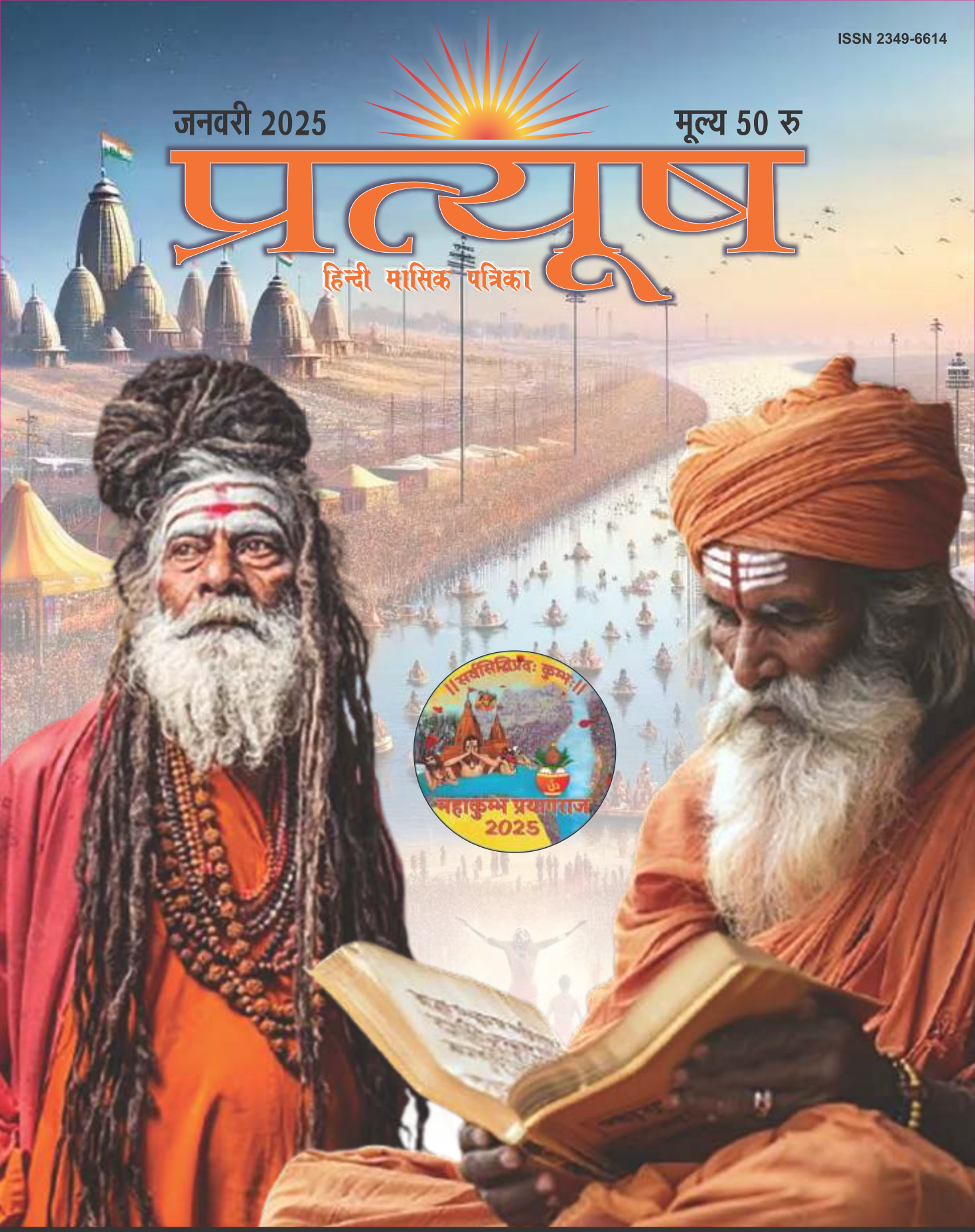

प्रयागराज: अमृत की तलाश में भारत

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

दुर्गेश कुमावत
डायरेक्टर
9929597689

विद्यार्थी रस भण्डार

गन्ने का शुद्ध ताजा रस

शक्तिनगर कॉर्नर, कस्तूरबा मातृ हॉस्पिटल के पास,
देहलीगेट, उदयपुर (राज.)

जनवरी 2025 वर्ष: 22 अंक: 09

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

नववर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

अंतरिक्ष मिशन

सुनीता विलियम्स की वापसी में क्यों हो रही देर?
पेज 08

उत्तरायण

मकर संक्रांतिः दिव्यता से सम्पर्क का अवसर
पेज 14

तन-मन

सांस नली में सूजन की बीमारी है अस्थमा
पेज 31

नेत्र सुरक्षा

हर तीसरा बच्चा दृष्टि दोष से पीड़ित
पेज 34

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

नववर्ष 2025 की हार्दिक शुभकामनाएं

टाया एस्टेट्स

अमृत वाटिका - राज वाटिका - श्याम वाटिका

टाया एस्टेट्स, सहेलियों की बाड़ी, उदयपुर

हरियाली से आच्छादित उदयपुर की सबसे सुंदर प्राकृतिक वाटिकाएं

बुकिंग हेतु सम्पर्क करें :

133, सुखसागर पैलेस, अशोक नगर, मेन रोड, उदयपुर, मो. : 9001997000, 9001998888

नए साल में सृजित करें, नए स्वप्न - संकल्प

समय का प्रवाह अनवरत है। दिन कोई हो, सप्ताह कोई हो, माह कोई हो या साल कोई हो, वह इन सबकी परवाह किए बिना अपनी गति से बहता - बढ़ता रहता है। वह न हमारी विफलताओं की चिंता करता है और न हमारी सफलता और उपलब्धियों की। कितना और क्या खो दिया और कितना और क्या हासिल किया, इन सबसे उसका न कोई मतलब है और न ही लेना-देना। हम समय के इसी प्रवाह में जीते हैं, लेकिन हमारे लिए ये बाकी सभी चीजें भी महत्व रखती हैं। समय के इसी प्रवाह की एक सर्द रात्रि नया साल आता है और हमें सोचने, समझने, और निर्णय करने का मौका देता है। बीते हुए साल में हमने जो खोया उसमें क्या याद रखना है, किसे भूलना है और क्या सबक लेकर आगे बढ़ना है इस पर विचार जरूर करना है क्योंकि वर्ष 2025 भी उस समय आया है जब देश के एक बड़े हिस्से में सर्दी अपने पुराने रिकार्ड तोड़ रही है। देश की राजधानी सहित महानगरों में प्रदूषण से लिपटा कोहरा परेशानी का सबब बना हुआ है। दूसरी तरफ कई तरह के असंतोष न सिर्फ सतह पर आ रहे हैं, बल्कि उग्र होते दिख रहे हैं। राजनैतिक दल जनता का हित चिंतन कम और अपने लिए सत्ता के ठीये ढूंढने में ही ज्यादा व्यस्त हैं। पड़ौस का एक देश, जिसे हमने आकार और पहचान ही नहीं दी बल्कि ऊंगली पकड़कर उठना-चलना सिखाया वह आज हमारे ही पांवों पर कुल्हाड़ी मारने को सज्ज है। कुछ देश लम्बे समय से युद्ध में उलझे हैं। लोग अपने हितों को लेकर सड़कों पर उतर रहे हैं, संसद में संविधान चर्चा के दौरान धक्का-मुक्की, हाथापाई खेदजनक है। यह लोकतंत्र में अच्छा संकेत नहीं है, सड़कों पर जमाव, पथराव और टकराव की स्थिति बनती है तो इसका अर्थ यह है कि व्यवस्था में गड़बड़ है। अतएव नये साल का पहला संकल्प ही यह होना चाहिए कि ऐसे अंतर्विरोधों को शांति और सहानुभूति के साथ विदा करेंगे। यदि बीमारी की जड़ गहरे ही जा रही है तो इलाज की प्रक्रिया भी कड़वी और तीखी होनी चाहिए। देश में पिछले वर्षों में ऐसी कुछ ताकतें प्रबल हुई हैं, जो ऐसे दैहिक, दैविक और भौतिक ताप को न सिर्फ बढ़ाने में यकीन रखती हैं, बल्कि इन्ही पर वे अपनी रोटियां सेंक कर तृप्ति की डकार लेती हैं। निश्चय ही नव वर्ष उत्सव मनाने का अवसर है, क्यों कि जीवन की निरन्तरता स्वयं में एक समारोह है। अंग्रेजी साहित्य के जानेमाने कवि-नाटककार एवं आलोचक टीएस एलियट कहते हैं कि 'पिछले साल के शब्दों के लिए पिछले साल की भाषा है। नए वर्ष के शब्द नए स्वर हैं तथा भविष्य के शब्दों में एक और प्रतीक्षा, एक और आरंभ है।' हमें नए पदचिह्न छोड़ते हुए चलना है। लोक कल्याण और समृद्धि के नए आयाम तक करते हुए शांति, संतोष और समरसता की ताजा बयार के साथ साफ शुरूआत करनी है। एक नई भाषा, नई दृष्टि और नई समझ के साथ राष्ट्रीय-वैश्विक सवालों को समाधान तक पहुंचाना है। संवाद की सभी प्रक्रियाएं खुली रखनी होंगी। नव वर्ष के आरंभ का अर्थ ही यह है कि हम नए स्वप्न सृजित कर उन्हें साकार करने के लिए स्वाभाविक प्रयत्न भी करें। साल तो नया आ गया लेकिन हमें भी कुछ नया करने के लिए तैयार होना होगा।

आज हम कम्प्यूटर की दुनिया में जी रहे हैं। इस दुनिया का एक चर्चित शब्द है 'रीबूट' करना। क्षणभर के लिए कम्प्यूटर को बंदकर फिर से चलाएं। बस इतने से समय में कंप्यूटर अपनी पुरानी सुस्ती और बाधा बने पुराने कबाड़ को एक तरफ फेंक देता है और फिर नवजीवन के साथ सक्रिय हो जाता है। नया साल भी हमारे लिए अपने जीवन को 'रीबूट' करने का एक मौका होता है। पुरानी बलाओं और बाधाओं से पीछा छुड़ाकर नए संकल्पों के साथ उत्साहधर्मिता और सबके मांगल्य का निर्वाह करें।

हिंदुओं का उत्पीड़न असह्य, अंतरिम सरकार के मुखिया युनूस जिम्मेदार, नई दिल्ली के संयम को अन्यथा न लें

भारत-बांग्लादेश रिश्ते टूटने की कगार पर

पलकी शर्मा

जब बांग्लादेश में शेख हसीना का तख्तापलट हुआ तो इसे भारत के लिए झटका बताया गया था। लेकिन अब उसके पांच महीने बाद भारत और बांग्लादेश के संबंध टूटने के कगार हैं। राजनयिक मिशनों को निशाना बनाया जा रहा है, राजनयिकों को तलब किया जा रहा है, राष्ट्रीय ध्वज का अपमान किया जा रहा है, हिंदू मंदिरों में तोड़फोड़ और उपासकों को प्रताड़ित किया जा रहा है। भारत से व्यापार में रोकटोक या उसके बहिष्कार की बात की जा रही है। यह सब कैसे हुआ? इसका उत्तर है- मोहम्मद युनूस और उनकी राजनीति। वे चुने हुए नेता नहीं हैं और कार्यवाहक के रूप में कमान संभाले हुए हैं। उनका काम व्यवस्था बहाल करना और चुनाव कराना था। लेकिन वे सुधारों की बात कर रहे हैं, जिसके लिए उनके पास कोई लोकप्रिय जनादेश नहीं है। वे वर्तमान अराजकता को ठीक करने के बजाय अतीत की कथित गलतियों से ग्रस्त हैं। युनूस और उनके समर्थक बांग्लादेश के संस्थापकों की विरासत को खत्म करने में व्यस्त हैं और इस प्रक्रिया में वे हिंदू अल्संख्यकों को निशाना बना रहे हैं। हाल ही में एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि उनकी अंतरिम सरकार को चुनाव कराने में चार साल तक का समय लग सकता है।

इस बीच, सड़कों पर इस्लामिक

कट्टरपंथियों का बोलबाला है। शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग तस्वीर से बाहर है। दो अन्य पार्टियां ढाका की सत्ता पर नजर गड़ाए हैं- खालिदा जिया की बीएनपी और जमात-ए-इस्लामी। कभी वे सहयोगी हुआ करते थे, लेकिन अब सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। चीन जमातियों और बीएनपी की मेजबानी कर रहा है। जमात का इतिहास दागदार है और उसकी राजनीति चरमपंथी है लेकिन चीन को परवाह नहीं। बीएनपी उसकी पुरानी दोस्त है। जब बीएनपी ने बांग्लादेश पर शासन किया, चीन को फायदा हुआ। उन्हें सैन्य सौदे और निवेश के अवसर मिले और ढाका ने भारत को दूर रखा।

भारत ने भी बीएनपी से सम्पर्क किया है, लेकिन जमात से बात करना मुश्किल होगा। यह एक कट्टरपंथी और भारत विरोधी संगठन है। नई दिल्ली के पास सीमित विकल्प है और वे बहुत आशाजनक नहीं हैं। दूसरी तरफ युनूस का रवैया स्थिति को बद से बदतर कर रहा है। समस्या को स्वीकार करने के बजाय वे भारतीय मीडिया को दोषी ठहरा रहे हैं। बांग्लादेश के सर्वोच्च न्यायालय में दायर एक याचिका में भारतीय समाचार चैनलों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई है और कहा गया है कि उनका कवरेज भड़काऊ

है। युनूस ने सर्वदलीय बैठक भी की थी, इसमें शेख हसीना की आवामी लीग को छोड़कर सभी दल थे। उन्होंने बांग्लादेश पर सांस्कृतिक आधिपत्य स्थापित करने के भारत के प्रयासों और उसके आर्थिक उत्पीड़न की निंदा की। साथ ही बांग्लादेश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के भारत के प्रयासों की भी निंदा की। ये बहुत कठोर और बेबुनियाद आरोप हैं। वे किस हस्तक्षेप की बात कर रहे हैं? भारत ने अंतरिम सरकार के गठन की कभी आलोचना नहीं की, भले ही वह असंवैधानिक था। न ही भारत ने शेख हसीना और उनके सहयोगियों पर कानूनी हमलों पर सवाल उठाया। भारत ने केवल तभी टिप्पणी की, जब हिंदू अल्पसंख्यकों पर हमला हुआ।

समस्या यह है कि अंतरिम सरकार अपनी स्थिति को लेकर असुरक्षित है। इसलिए उसे भारतीय हस्तक्षेप का डर सता रहा है। युनूस के मंत्रियों का कहना है कि भारत को अगस्त में हुए बदलाव को स्वीकार करना चाहिए। यह अजीब है क्योंकि प्रधानमंत्री मोदी ने व्यक्तिगत रूप से युनूस को बधाई दी थी। भारत बांग्लादेश की आंतरिक राजनीति का सम्मान करता रहा है, लेकिन बांग्लादेश की तरफ से ऐसा सम्मान हमारे लिए नहीं दिखा, इसलिए भारतीय जनमत बदल गया। जब हिंदूओं पर भीड़ द्वारा हमला किया गया, मंदिरों में तोड़फोड़ की गई और भारतीय ध्वज का अपमान किया गया, तभी भारत मुखर हुआ। चार महीने चुप रहने के बाद अब हसीना भी बोल रही हैं। पिछले दिनों उन्होंने अपने समर्थकों को वर्चुअली संबोधित किया और कहा कि उनके परिवार को मारने की साजिश की जा रही थी। उन्होंने युनूस पर नरसंहार का भी आरोप लगाया। भारत सरकार पर दबाव है। हिंदू समूह रैलियां कर रहे हैं। विपक्षी दल सवाल पूछ रहे हैं। व्यापार समूह निर्यात रोक रहे हैं। नई दिल्ली ने अब तक संयम दिखाया है। भारत ने परस्पर रिश्तों को बचाने के लिए एक और प्रयास के तहत विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री अको 9 दिसम्बर को ढाका भेजा। लेकिन उनका जाना तभी कारगर होगा, जब युनूस अपनी आंखों से पूर्वाग्रहों का चश्मा उतारेंगे।

-लेखक 'फर्स्ट पोस्ट' की मैनेजिंग एडिटर हैं।

विदेश सचिव की दो टूक

बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर बढ़ते हमलों के बीच पहली बार विदेश सचिव विक्रम मिसरी बातचीत के लिए 9 दिसम्बर को ढाका पहुंचे। वहां पहुंचते ही उन्होंने बांग्लादेश को दो टूक लहजे में कहा कि सबसे पहले हिन्दुओं और अन्य अल्पसंख्यकों की रक्षा और उनके धार्मिक स्थलों की सुरक्षा तय करनी होगी। उन्होंने अपने समकक्ष के सामने सख्ती से ये मुद्दा उठाया। विदेश सचिव मिसरी ने बांग्लादेश के विदेश सलाहकार से कहा कि भारत सकारात्मक, रचनात्मक और साझा हित चाहता है, इसलिए बांग्लादेश को भी उसी तरह का व्यवहार करना चाहिए। अपनी उच्च स्तरीय बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए मिसरी ने कहा कि मैंने बांग्लादेश प्राधिकरण की

अंतरिम सरकार के साथ मिलकर काम करने की भारत की इच्छा को रेखांकित किया है।

बांग्लादेश में 77-78 वर्षों के बाद इतिहास दोहराया जा रहा है। वही चीखें, वही रूह कांपता करुण क्रंदन, वही आंसूओं से डबडबाई आंखें, वही पाश्विक बलात्कार के बाद फेंकी गई वीभत्स लाशें, वही उजड़े हुए जलते हुए घर, वही खामोश, मूकदर्शक बना स्थानीय प्रशासन और वही असहाय हिंदू। विभाजन के समय का दृश्य पूरे बांग्लादेश में पुनः प्रस्तुत हो रहा है। वैसे बांग्लादेश के लिए यह नया नहीं है। 1971 में पश्चिमी पाकिस्तान के तानाशाह जनरल टिक्का खान ने ऑपरेशन सर्चलाइट चलाकर हिंदुओं का वंशच्छेद (जिनोसाइड) प्रारंभ किया था। गुरुवार 23 मार्च 1971 को चालू हुए इस आक्रमण में तत्कालीन पूर्व पाकिस्तान (अभी का बांग्लादेश) के 30 लाख हिंदुओं को मात्र कुछ ही महीनों में, पाश्विक तरीके से मार दिया गया था। चार लाख से ज्यादा जवान बहू-बेटियों के साथ दुष्कर्म किए गए थे। इन सब के बाद भी बांग्लादेश का साहसी हिंदू, जिजीविषा के साथ डटा रहा। उसने अपनी मातृभूमि को नहीं छोड़ा। बांग्लादेश के हिंदुओं के इस अदम्य साहस से चिढ़कर वहां के अतिवादी मुसलमानों ने 5 अगस्त 2024 से हिंदुओं के नरसंहार को दोहराना प्रारंभ कर दिया है। जुलाई 2024 को प्रारंभ हुआ छात्रों का आंदोलन प्रारंभ में तो तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना के विरोध में था। अनेक बाहरी ताकतें इस आंदोलन में शामिल थीं। किंतु जैसे ही 5 अगस्त को शेख हसीना ने इस्तीफा देकर देश से पलायन किया, वैसे ही यह सारा आंदोलन हिंदू-बौद्ध नागरिकों के विरोध में चला गया। जो महीने से जारी है, अत्याचार बढ़ते ही जा रहे हैं।

वह महज आठ दिन के लिए स्पेस स्टेशन गई थीं, पर उनकी वापसी वैज्ञानिक वजहों से आठ माह फरवरी 2025 तक टाल दी गई। नासा की ओर से कहा गया है कि वे मार्च अथवा अप्रेल में लौटेंगी। भारतीय मूल की अमरीकी नागरिक सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर जून 2024 में बोइंग स्टारलाइनर स्पेसक्राफ्ट से अंतरिक्ष के लिए रवाना हुए थे। 6 जून को दोनों अन्तरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आईएसएस) पहुंचे थे कि अचानक स्टार लाइनर में खराबी आगई।

सुनीता विलियम्स की वापसी में क्यों हो रही देर?

मनीष मोहन गोरे

अंतरिक्ष यात्रा कोई सामान्य बात नहीं है। इसकी मूल वजह विज्ञान ही है। पृथ्वी पर गुरूत्वाकर्षण बल के कारण सभी वस्तुएं और मनुष्य स्थिर बने रहते हैं और अपने कामकाज अच्छी तरह से करने में खुद को सक्षम पाते हैं। फिर, यहां का वातावरण जीवन के लिए अनुकूल भी है, मगर अंतरिक्ष में कोई वातावरण नहीं होता। वहां सांस लेने के लिए ऑक्सीजन नहीं है। ऐसे कठिन वातावरण व मानव जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों वाले अंतरिक्ष में पहुंचकर वहां अनुसंधान करना वास्तव में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है, जिसे इन दिनों सुनीता विलियम्स अपने साथी के साथ अंजाम दे रही हैं। अपने सहयात्री बुच विलमोर के साथ उन्हें सिर्फ आठ दिनों के लिए इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में अंतरिक्ष अनुसंधान व अन्वेषण करना था, लेकिन यान में तकनीकी खराबी के कारण उनकी वापसी की यात्रा आठ महीनों के लिए टाल दी गई। नासा की ओर से अक्टूबर में कहा गया था कि उन्हें फरवरी 2025 में स्पेसएक्स के क्रू 9 अंतरिक्ष यान से वापस पृथ्वी पर लाया जा सकता है। लेकिन दिसम्बर के मध्य में उनकी

वापसी में बदलाव की घोषणा करते हुए नासा ने कहा कि दोनों एस्ट्रोनोट अब मार्च अथवा अप्रेल में ही धरती पर लौट सकेंगे।

अंतरिक्ष में लंबे समय तक रुकना स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयुक्त नहीं होता। पिछले दिनों कुछ ऐसी तस्वीरें भी सोशल मीडिया में वायरल हुई थीं, जिनमें सुनीता विलियम्स कमजोर दिख रही थीं। उनमें यह बताया गया था कि ज्यादा समय तक अंतरिक्ष स्टेशन में रुकने से उनकी सेहत बिगड़ने लगी है। हालांकि, उस वायरल खबर के स्पष्टीकरण में एक सूचना भी साझा की गई थी कि वे चुस्त-दुरुस्त हैं और पूरी सक्रियता से अपने अनुसंधान में लगी हुई हैं। मगर यहां सवाल यह उठता है कि दुनिया की सबसे अनुभवी और दक्ष अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक नासा द्वारा तत्काल प्रबंध करके दो अंतरिक्ष यात्रियों को वापस क्यों नहीं लाया जा सकता, जबकि पिछले साल अक्टूबर के अंत में चार अंतरिक्ष यात्रियों की धरती पर सकुशल वापसी हुई है? जाहिर है, भारतीयों की नजर से यह गंभीर सवाल है। मगर हमें यहां यह समझना होगा कि अंतरिक्ष वास्तव में पृथ्वी से बिल्कुल स्वतंत्र अस्तित्व रखता है और अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए समर्पित उपकरण एवं यान भी विशिष्ट स्वरूप के साथ विकसित किए जाते हैं। अंतरिक्ष स्टेशन पर जाने वाले अंतरिक्ष यात्री विशेष निर्मित यान से जाते हैं, जिनमें उनके बैठने की निर्धारित क्षमता होती है। ऐसे में, नियत यात्रियों से अधिक यात्री को लेकर वापस लौटना संभव नहीं होता। संभवत: ऐसी ही तकनीकी बाधाएं सुनीता विलियम्स और बुच विलमोर को वापस लाने में हो रही होंगी। लोगों की यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि जब अंतरिक्ष मिशन के अन्य विज्ञानी अंतरिक्ष से वापस लौट पा रहे हैं, तो फिर विलियम्स और विलमोर को लाने में क्या समस्या

है। मगर यह विचार करते हुए हम इस बात की ओर ध्यान नहीं दे पाते कि अंतरिक्ष की यात्रा ट्रेन या वायुयान की यात्रा से हजारों गुना कठिन होती है। इसके अलावा, हरेक अंतरिक्ष यात्री, जो खास अनुसंधान के लिए अंतरिक्ष में गया है, उसे वहां भेजने और वापस लाने का समय पूर्व-निर्धारित होता है। नासा दुनिया की एक समर्थ और सुविधा-संपन्न अंतरिक्ष एजेंसी है, वह अपने शीर्ष पदाधिकारियों की विवेकपूर्ण अनुशंसा के आधार पर ही अपनी प्राथमिकताओं में तब्दीली करती है। वैसे भी, खगोल वैज्ञानिकों की सुरक्षा के लिए कोई भी ठोस कदम फौरन नहीं उठाना चाहिए, संभवत: इसीलिए सुरक्षा के एक-एक बिंदु का विश्लेषण करके ही नासा के अधिकारीगण किसी फैसले पर पहुंचते हैं। यह सही है कि नासा संगठन खगोल, वैज्ञानिकों के दल को नियमित रूप से प्रशिक्षण देकर नियत उद्देश्यों के साथ अंतरिक्ष में भेजता है और किसी अप्रत्याशित घटना से निपटने का भी प्रबंध उसके पास रहता है। सुनीता विलियम्स और बुच विलमोर की अंतरिक्ष स्टेशन से सुरक्षित वापसी में वह मूलत: सुरक्षा वजहों से ही बहुत तत्परता नहीं दिखा रहा होगा। उसके चिकित्सा दल को यह बात अच्छी तरह से मालूम है कि अंतरिक्ष की परिस्थितियों में बहुत लंबे वक्त तक रुकना जीवन के लिए संकटदायक हो सकता है। बहरहाल, हम उम्मीद ही कर सकते हैं कि नासा इन बातों का संज्ञान लेकर इन अंतरिक्ष यात्रियों की शीघ्र वापसी संभव करेगी।

(लेखक सीएसआईआर से सम्बद्ध वैज्ञानिक हैं)

अंतरिक्ष में सलाद की खेती

सुनीता विलियम्स फिलहाल सलाद की खेती पर ध्यान दे रही हैं। अंतरिक्ष स्टेशन कमांडर माइक्रोग्रैविटी में 'आउटरेजियस' रोमेन लेट्यूस के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य यह जांच करना है कि पानी की अलग-अलग मात्रा पौधों की वृद्धि को कैसे प्रभावित करती है, जो भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों और पृथ्वी पर संभावित कृषि उन्नति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सुनीता का मकसद यह जानना है कि पौधे सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण में अलग-अलग जल स्थितियों पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। पृथ्वी पर इससे क्या मदद मिल सकती है।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

卐 ॐ जय भोलेनाथ 卐

खाली बोतलें, काँच शीशी,
पेपर रद्दी, ओल्ड स्क्रेप
एवं अन्य डिस्पोजल
वस्तुओं के क्रेता एवं विक्रेता

विजय पंजवानी (विजु भाई)
मो. 7737746140, 9950271626
राकेश पंजवानी
मो. 9352524901, 7568267951

श्रीराम ओल्ड स्क्रेप

यूआईटी, शॉप नं. 8-9, आई.ओ.सी. डिपो के सामने,
हिरणमगरी सेक्टर 11, उदयपुर

प्रत्यूष

भारतीय लोकतंत्र की आत्मा उसका संविधान

गौरव शर्मा

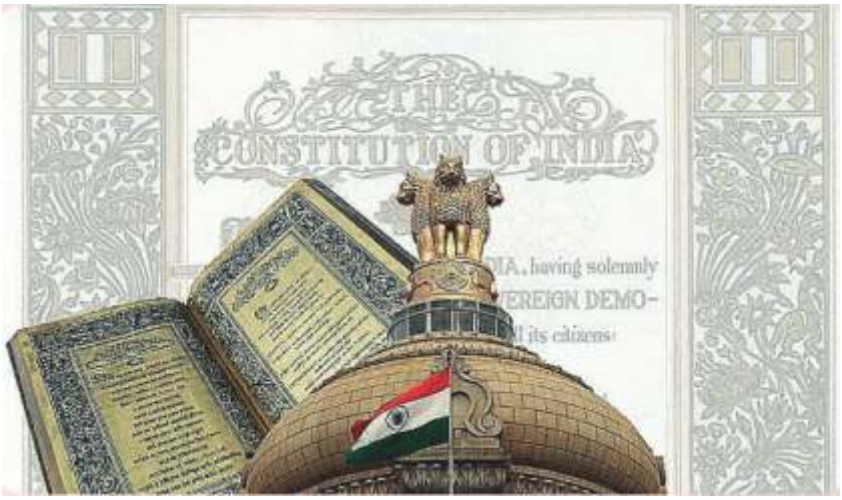

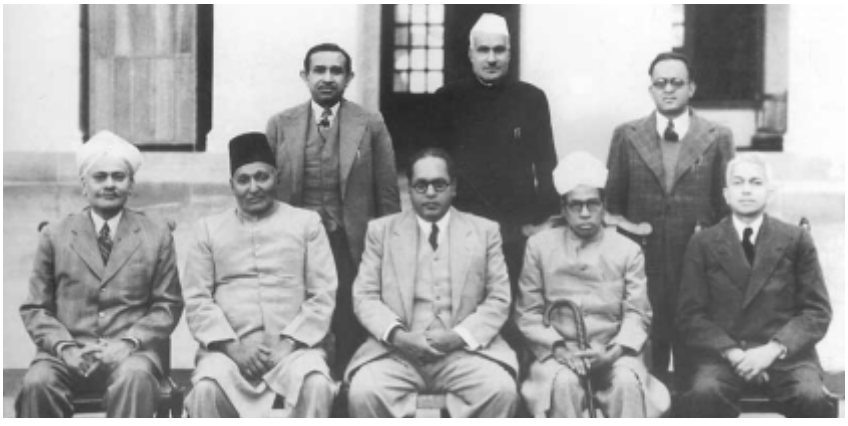

देश में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। संपूर्ण संप्रभु लोकतांत्रिक राज्य होने के महत्व को सम्मान देने के लिए गणतंत्र मनाया जाता है। अपनी आजादी के लगभग ढाई वर्षों के बाद भारत ने अपना संविधान 26 जनवरी 1949 को संविधान सभा द्वारा अंगीकृत किया एवं 26 जनवरी 1950 को पूर्ण रूप से लागू किया। भारतीय संविधान के निर्माण में दो वर्ष 11 माह और 18 दिन का समय लगा, जिसमें कुल 365 अनुच्छेद एंव 22 भाग हैं। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्व में मनोनीत संविधान निर्मात्री सभा ने इसे तैयार किया।

भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा एवं लिखित संविधान है जो भारतीय लोकतंत्र का आधार स्तंभ है। लोकतंत्र में प्रभुसत्ता जनता में निहित होती है। जनता ही स्वयं अपने ऊपर शासन करती है। भारत में लोकतंत्रात्मक राजव्यवस्था भारतीय संविधान की बुनियादी विशेषता है। लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को धर्म, जाति, सम्प्रदाय, लिंग के भेदभाव के बिना एवं आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, व्यावसायिक आधार पर समानता, कानून के समक्ष समानता एवं सरकार चुनने का अधिकार प्राप्त होता है। लोकतंत्र में जनता का मत सर्वोपरि होता है उसकी अनुमति से शासन होता है और जनता की प्रगति ही शासन का एकमात्र लक्ष्य माना जाता है। भारतीय संविधान उसके निर्माताओं के आदर्शों, सपनों तथा मूल्यों का दर्पण है। संविधान जनता की विशिष्ट सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक मूल्यों की प्रकृति, आस्था एवं आकांक्षा पर आधारित होता है और भारतीय संविधान निर्माताओं ने मूलभूत मूल्यों और आदर्शों को संविधान में समाहित किया है।

एक आदर्श लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं सर्वव्यापी लोकतंत्र, वयस्क मताधिकार, विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक व राजनीतिक समानता, मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य, लिखित संविधान एवं जनता के प्रति निर्वाचित प्रतिनिधियों का उत्तरदायित्व सम्मिलित होता है। जो लोकतंत्र को सर्वमान्य एवं आदर्श स्वरूप प्रदान करता है।

भारतीय संविधान में लोकतंत्र के सर्वमान्य गुणों का समावेश है जो प्रत्येक भारतीय को अधिकार स्वरूप प्राप्त होता है।

राष्ट्र की एकता और अखंडता एवं भारत की जनता के हितों की रक्षार्थ भारतीय संविधान के भाग 3 में अनुच्छेद 12 से 35 तक मूल अधिकार हैं, जो नगारिकों को प्राप्त हैं और जिस प्रकार भारतीय संविधान में नागरिकों को मौलिक अधिकार प्राप्त हैं उसी प्रकार नागरिकों के मूल कर्तव्य भाग 4 (क) अनुच्छेद 51क में उल्लेखित हैं। और साथ में राज्य के लिए भाग 4 में नीति निदेशक तत्व अनुच्छेद 36-51 में प्रदान किए गए हैं। बेरोजगारी, हिंसक घटनाएं, जातिगत विद्रोह, महिला यौन शोषण, उत्पीड़न, लगातार बढ़ती महंगाई, बाल शोषण, लिंग भेद, धार्मिक हिंसा, मोब लिचिंग आदि ऐसी चुनौतियां हैं जो भारतीय लोकतंत्र को खोखला करने वाली हैं। इस पर सख्ती से काबू पाना सरकार और समाज दोनों का दायित्व है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, वोट बैंक की भ्रामक राजनीति, दागी उम्मीदवारों की बढ़ती संख्या चुनाव में धन बल और हिंसा जैसी समस्याएं भी त्वरित समाधान मांग रही हैं। चुनाव सुधारों की महती आवश्यकता है न्याय प्रणाली को भी त्वरित बनाना समय की जरूरत है।

भारतीय गणतंत्र के प्रेरक ध्येय वाक्य

देश का मंत्र 'सत्यमेव जयते'

यह भारत सरकार का ध्येय वाक्य है। मुंडकोपनिषद से लिए गए इस वाक्य का अर्थ है – आखिर में सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं। सत्य ही बड़े लक्ष्यों तक पहुंचता है।

संसद का पथप्रदर्शक धर्मचक्र प्रवर्तनाय

यह वाक्य संसद भवन में अंकित है। इसका अर्थ है–भारत के शासक धर्म के रास्ते पर आगे बढ़ें, और इसका अनुसरण करें। बुद्ध ने सारनाथ में जो पहला उपदेश दिया था उसे धर्मचक्र प्रवर्तन कहते हैं। यह वाक्य वहीं से लिया गया है।

शिक्षा का संकल्प असतो मा सद्गमय

सीबीएसई का यह ध्येय वाक्य बृहदारण्यक उपनिषद् से लिया गया है। अर्थ है हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो। यूजीसी का ध्येय वाक्य है ज्ञान–विज्ञानं विमुक्तये यानी ज्ञान ही जड़ता मिटाता है।

स्वास्थ्य का लक्ष्य शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम्

यह अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) का ध्येय वाक्य है। भावार्थ है शरीर सभी कर्तव्यों को पूरा करने का साधन है। यह पंक्तियां कालीदास की रचना कुमारसंभवम् महाकाव्य से ली गई है।

सेना की शक्ति हैं ये वाक्य

वायु सेना– नभ:स्पृशं दीप्तम्

यह वाक्य भागवत गीता से लिया गया है। यह कृष्ण–अर्जुन के संवाद का हिस्सा है। इसका भावार्थ है– गर्व के साथ आकाश को छूना। इस श्लोक में विष्णु के गुणों के बारे में बताया गया है कि उसका रूप चमकदार, कई रंगों वाला और प्रकाशमान नेत्र वाला है।

थल सेना– सर्विस बिफोर सेल्फ

थल सेना के इस मोटो का भावार्थ है– हर सैनिक में स्वयं से पहले सेवा का भाव रहता है। हमेशा देश की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण सबसे पहले आता है।

नौसेना–शं नो वरुण:

नौ सेना का ध्येय वाक्य तैत्तिरीय उपनिषद् की प्रार्थना से लिया गया है। यह जल के देवता वरुण की प्रार्थना है। इसका भावार्थ है– जल देवता वरुण हमारे लिए मंगलकारी रहें। हमें शांति प्रदान करें।

बीएसएफ– जीवन पर्यन्त कर्तव्य

सीमा सुरक्षा बल के जवानों का ध्येय वाक्य है – जीवन पर्यंत कर्तव्य। भावार्थ है कर्तव्य पथ पर हमेशा बढ़ते रहें। इनका घोष है– भारत माता की जय।

भारतीय तटरक्षक – वयं रक्षाम:

भारतीय तटरक्षक के मोटो वयं रक्षाम: का अर्थ है, हम रक्षा करते हैं। भारतीय तटरक्षक का काम है समुद्र में मौजूद ऑयल, मछली और खनिजों सहित हमारे समुद्र और तटों की रक्षा करना।

न्याय की शक्ति यतो धर्मस्ततो जय:

यह सुप्रीम कोर्ट का ध्येय वाक्य है। अर्थ है– जहां धर्म है वहां जीत है। यह वाक्य महाभारत से लिया गया है। मूल श्लोक है यत: कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जय:। भावार्थ यह है कि विजय हमेशा धर्म के पक्ष में रहती है।

ज्ञान की प्रार्थना तत् त्वं पूवन् अपावृणु

यह केन्द्रीय विद्यालय का ध्येय वाक्य है, जो ईशावास्योपनिषद् से लिया गया है। इसका अर्थ है–सत्य का मुख सुनहरे ढक्कन से ढका है। हम सत्य को जान सकें और देख सकें, इसलिए हे! सूर्य ढक्कन हटा दीजिए।

सत्य का निश्चय धर्मो रक्षति रक्षित:

यह रिसर्च एंड एनालिसिस विंग का ध्येय वाक्य है। इसका भावार्थ है– तुम धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। यह वाक्य मनुस्मृति से लिया गया है।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

लोकेश जैन
डायरेक्टर
9413025265

मोहनलाल शिवलाल जैन

झाड़ू के निर्माता

झाड़ू, ब्रुश, हाउस कीपिंग, लकड़ी के सामान एवं जनरल सामान के विक्रेता

13, देहलीगेट अन्दर, उदयपुर (राज.)

जीवन और जगत के व्याख्याकार डॉ. तारा प्रकाश जोशी

वेदव्यास

डॉ. तारा प्रकाश जोशी मेरी जीवन यात्रा के एक ऐसे आख्यान हैं, जिन्हें मैं कभी भुला नहीं सकता। वो हमारे बीच नहीं हैं। मैं अपने दुख और अकेलेपन को राहत देने के लिए उनसे जुड़ी कुछ बातें याद कर रहा हूं। वो उम्र में, अनुभव में, अध्ययन और सृजन में मुझसे बहुत आगे थे। मैं 1971 में आकाशवाणी जयपुर में, अनुबंध कलाकार के रूप में काम करता था और कलाकारों की बंधुआ मजदूरी तथा न्याय और अधिकारों को लेकर धरने- प्रदर्शन और नारेबाजी किया करता था। मजदूर संगठन 'ऐटक' से जुड़े आकाशवाणी कलाकार संघ का अध्यक्ष था। यहीं पर शांति भंग की आशंका को लेकर आकाशवाणी प्रशासन, प्राय: पुलिस को बुलाया करता था और तारा प्रकाश जोशी नगर दंडनायक के रूप में वहां आया-जाया करते थे। यहीं से मेरी उनकी दोस्ती शुरू हुई थी।

इसी दौर में बांदा (उत्तरप्रदेश) के प्रगतिशील लेखक सम्मेलन के बाद भरतपुर में भी प्रगतिशील लेखक संघ का सम्मेलन हुआ था। तारा प्रकाश जोशी उसके संयोजक और डॉ. जगतपाल सिंह सह-आयोजक थे। तारा प्रकाश जोशी के आग्रह पर मैं भी उनके साथ काव्य पाठ के लिए तब भरतपुर गया था। वहीं पर 1973 में राजस्थान के लिए प्रगतिशील लेखक संघ का जोशी के प्रस्ताव पर मुझे प्रथम संगठन संयोजक बनाया गया था।

उनके साथ मेरी सहयात्रा किस तरह देश में प्रगतिशील साहित्य चेतना की मशाल बनी, उस इतिहास को हमारी पुरानी पीढ़ी अधिक और नई पीढ़ी कम जानती है। विगत को याद करते हुए-आज 51 साल बाद मुझे लगता है कि शायद हम दोनों ही एक-दूसरे के लिए बने थे। हमारे सामाजिक सरोकार ही हमें जोड़ते थे और हमारी चुनौतियां ही हमें विश्वसनीय बनाती थीं। ये ही समय था जब भारत की सभी भाषाओं में लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता का परचम-प्रगतिशील साहित्य चेतना से ओत-प्रोत था। 1936 से लेकर 2020 तक की ये सरगर्मी बताती है कि आज प्रगतिशील चेतना का संघर्ष आसमान से जमीन पर आ गया है और भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति का प्रगतिशील सपना एक नए वैश्विक-सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पराभव और दमन से गुजर रहा है।

राजस्थान में तारा प्रकाश जोशी और प्रगतिशील लेखक संघ आज इसीलिए मुझे प्रासंगिक लगते हैं क्योंकि समाज में अब विघटनकारी ताकतों का बोलबाला है। विचार केंद्रित सभी आवाजें बुझ गई हैं तो, संघर्ष का स्थान लेखक के जीवन को सरकार और बाजार के समझौतों में धकेल रहा है। हम अपने जीते जी ही अप्रासंगिक हो रहे हैं। ये समय मुझे अनिवार्यता और मुखरता की याद दिलाता है। हम दोनों ने अपना दायित्व इस तरह बांटकर आगे बढ़ाया था कि तारा प्रकाश जोशी तो श्रेष्ठ सृजन की पाठशाला चलाते थे और मैं कुशल संगठन संयोजक का कर्तव्य निभाता था। हम दोनों की इस जुगलबंदी का ही परिणाम था कि कभी राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़कर ही लेखक अपने का सम्पूर्ण मानता था। सैकड़ों कलम के सिपाही इस विचारधारा की मुहिम में बनते, उठते, लड़ते और बढ़ते मैंने देखे हैं। 1973 से 2020 तक ही हमारी साझा समझ से नई पीढ़ी को ये आग्रह करना चाहता हूं कि अब हम साहित्य, समाज और समय की नई आपदाओं को समझें और सृजन के पुनर्जागरण को नई आवाज दें। तारा प्रकाश जोशी मेरे ऐसे साथी और सलाहकार थे जिन्होंने कभी किसी सम्मान, पुरस्कार, अनुदान के लिए कहीं आवेदन नहीं किया और हम लोगों ने भी कभी उनके सृजनधर्म का मूल्यांकन नहीं किया है। जोशी जी की पूरी काव्य चेतना के लिए उनका अंतिम गीत संग्रह 'प्रत्यूष की पदचाप' भी यदि आप पढ़ सकें तो मेरा अनुरोध सार्थक बन जाएगा। तारा प्रकाश बेहद सहज, सरल और निर्भीक फकीर-दार्शनिक की तरह चलते-फिरते थे। वे हिंदी के गीत साहित्य में परम्परा के परिष्कृत रचनाकार थे और गीतकारों को बहुत प्रेम करते थे। नई कविता की छंद मुक्त रचनाकारों के प्रति वो उत्साहित नहीं थे। छल-बल और तिकड़मबाजी से दूर रहकर, वे जीवन और जगत के सम-सामयिक व्याख्याकार गीतकार थे। गीत के प्रति उनकी ईमानदारी और मनुष्य की उदासी का संघर्ष उन्हें आज भी स्मरणीय बनाता है। उन्होंने अपने प्रचार-प्रसार के लिए कभी कोई आयोजन-प्रायोजन नहीं करवाया और नई पीढ़ी को सदैव प्रोत्साहित किया। जोशी जी 25 जनवरी, 1933 को जोधपुर में जन्में और 6 अक्टूबर, 2020 को जयपुर में दिवंगत हुए। वे मुझसे 8 साल बड़े थे और जयपुर के गुरु कमलाकर के साहित्य सदावर्त और डॉ. हरिराम आचार्य को अपना पारखी मानते थे और रांगेय राघव पर केंद्रित उनका मानवतावाद से प्रेरित शोध प्रबंध पढ़ने का आग्रह करते थे। आप उनकी अन्य पुस्तकें-कल्पना के स्वर, शंखों के टुकड़े, समाधि के प्रश्न, जलते अक्षर, जयनाथ (उपन्यास), द्वापर के आंसू, त्रेता का परिताप, जल मृग जल (नाटक) तथा दूधां (राजस्थानी नाटक) भी यदि पढ़ सकें तो आभार मानूंगा।

हाल ही में जयपुर में लेखक के विवाह की 55वीं वर्षगांठ मनाई गई। उनके परिवार के साथ मुख्यअतिथि पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत।

Happy New Year

RAMADA®

Udaipur Resort & Spa

Rampura Circle, Kodiyat Road, Udaipur - 313 001
Tel.: 91-294-3053800 / Fax 91-294-3053900
accounts@ramadaudaipur.com, www.ramadaudaipur.com

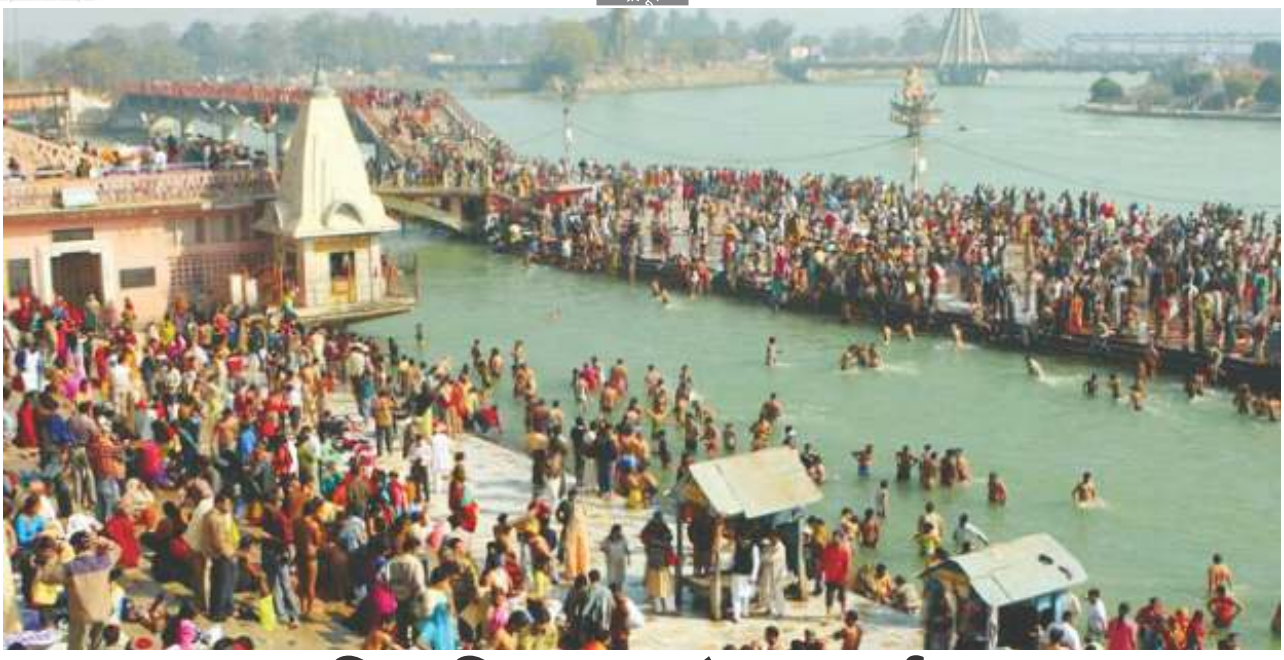

मकर संक्रांति : दिव्यता से सम्पर्क का अवसर

श्रीश्री रविशंकर

पौष मास में जब सूर्य देवता धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तभी मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है। इसी दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाता हैं। संक्रांति के दिन ही बाण शैया पर लेटे भीष्म पितामह ने देह-त्याग किया था। इसी दिन मां गंगा राजा भगीरथ के पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम होते हुए सागर में जा मिली थीं। यह स्नान-दान और लोक कल्याण का पर्व है। स्कंदपुराण के अनुसार, मकर संक्रांति के दिन यज्ञ में दिए गए द्रव्य को ग्रहण करने के लिए देवता पृथ्वी पर पधारते हैं।

त्योहारों के बारे में हमेशा कुछ ऐसा होता है, जो खूबसूरत ही होता है। वास्तव में, भारतीय त्योहरों में कहीं न कहीं गहरा संदेश और अनुष्ठानों में अनोखापन होता है। हर पर्व-त्योहार और अनुष्ठान उन दिव्य गुणों की पहचान है, जो हमारे अंदर भी निहित होते हैं।

दिवाली जैसे हमारे अंदर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्रकाश से हमारा पुनर्मिलन करवाती है, उसी तरह मकर संक्रान्ति हमारी दिव्य विरासत से हमें रूबरू करवाती है, जो हमारे चारों और बिखरी है और इसे सभी के साथ साझा करने के मानवीय दायित्व का भी आभास करवाती है।

मकर संक्रान्ति प्रारंभ होती है, हमारी पहली फसल के लेने और उसे सब में बांटने से कठिन मेहनत और उसके बाद उसके फल को प्राप्त कर उसे आपस में बांटने के लिए उत्सव मनाया जाता है। गांवों में, पहली गन्ने की फसल, पहली चावल की खेप दिव्यता को समर्पित करते हैं और आपस में भी बांटते हैं। तभी किसान अपनी पूरी फसल अपने लिए प्रयोग में लाता है।

संक्रान्ति का मूल भाव ही बांटने की संस्कृति है और यह सिर्फ फसल तक ही सीमित नहीं है। त्योहार हमें यह भी याद दिलाते हैं कि इस दिव्य विरासत को हम उन लोगों में भी बांटे, जो अपेक्षाकृत कम भाग्यशाली हैं, जो त्योहार नहीं मना पा रहे हैं।

संक्रान्ति के साथ एक और परम्परा जुड़ी हुई है कि इस दिन गुड़-तिल बांटे जाते हैं। इसके पीछे भी बहुत बड़ा संदेश है। तिल जहां हमारे अस्तित्व की सहजता को दर्शाता है, वहीं गुड़ दुनिया की सारी मिठास इस प्रतीकात्मक तथ्य के पीछे उद्देश्य ही यह है कि सबके पास यह आशीर्वाद हो कि वे सहज, सामान्य, अहंकारहित हों और हमेशा मीठा ही बोलें।

हम तिल की तरह हैं। हमारा इस ब्रह्मांड में होने का महत्व क्या है ? जीवन क्या है ? हमारा जीवन छोटे से तिल के समान है, एक कण देखा जाए तो कुछ नहीं।

तिल बाहर से काला होता है और अंदर से सफेद। यह दर्शाता है कि हमें अपने अंदर उजाला यानि शुद्ध रखना है। यदि आप तिल को थोड़ा-सा रगड़ें तो वह बाहर भी सफेद हो जाता है, अर्थ यही है कि हम जब हमारे बाहरी आवरण उतार देते हैं, तो पाते हैं कि हम अंदर से उतने ही पवित्र हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि हम सहज, सामान्य और मीठें हैं, ठीक उसी तरह जैसे तिल और गुड़ हैं। जब भी कोई खुद को बहुत बड़ा मानने लगता है, तो उसका पतन प्रारम्भ हो जाता है। यह एक प्रयोगवादी सत्य है। हम अपने आसपास कई लोगों को देखते हैं। जैसे ही हमारे अंदर अकड़ आती है कि मैं कुछ हूं, वैसे ही पतन की शुरुआत हो जाती है। मैं शक्तिशाली हूं और हमारी शक्तियां भी क्षीण होने लगती हैं। इसको जानना ही हमें पतन से रोक देता है और यह सिर्फ अध्यात्म की ही देन है।

वर्ष भर में 12 संक्रान्तियां होती हैं, जिनमें से मकर संक्रान्ति को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। जब सूर्य मकर राशि में आते हैं और जाड़े के मौसम की विदाई की प्रक्रिया आरमी

हो जाती है। जाड़े की तीव्रता के बाद सूर्य की रश्मियां सुखकारी होती हैं। यह वह समय है, जब हम बीज बोते हैं और उस बीजारोपण के साथ नई फसल की भूमिका रखते हैं।

मकर संक्रान्ति का महत्व इसलिए है कि सूर्यदेव उत्तरायण हो जाते हैं, वह उत्तरकी ओर होने लगते हैं। इसे उत्तरायण पुण्य काल कहा जाता है, जो देवताओं का समय है, दिव्यता का समय है। यह सही है कि पूरा साल ही वैसे तो दिव्य है, लेकिन इस समय को थोड़ा और अधिक दिव्य माना जाता है। इसके बाद ही सारे त्योहार प्रारम्भ होते हैं।

साल में दो दिन होते हैं, जब कोई भी अपनी आध्यात्मिक यात्रा की प्रगति का मूल्यांकन कर सकता है। एक है मकर संक्रान्ति और दूसरा गुरु पूर्णिमा। यह दोनों आपस में भी लगभग आधे-आधे साल के अंतर में ही आते हैं। इस मौके को तुरंत भुनाइये और अपने नवीन संकल्प इस दिन से प्रारंभ करिए।

जब आप इस अध्यात्म के रास्ते पर आ जाते हैं, तब आपके लिए कोई वर्ष, कोई दिन या कोई पल ऐसा नहीं होता है कि वह दिव्य न हो। मकर संक्रान्ति पर उस दिव्यता से सम्पर्क को महसूस करें और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ें।

कविता

मैं तो एक शुभकामना हूं

वेदव्यास

तीन सौ पैंसठ दिन
मैं तो एक शुभकामना हूं
मेरी स्मृतियां
अकाल और सुकाल में
युद्ध और शांति में
संघर्ष और मुक्ति में
एक साथ घूमती हैं।
मुझे तुमसे वह सब लेना है
मुझे तुम्हें वह सब देना है
जो अकाल
प्रकृति से लेता है,
और बीज
पेड़ को देता है।
मेरे शब्द
कोई अहसान नहीं हैं
मेरे अर्थ
कोई पहचान नहीं हैं
यदि मेरे विचार
तुम्हारे सहयात्री हैं
तो मेरा नाम
तुम्हारा ही जयघोष है।
जन्म और मृत्यु के बीच
जो भी मनुष्य के पास है
वह केवल उसका विश्वास है
तुम लहर की तरह
सागर में बहो, और
नगारे पर डंके की तरह बजो
ये नई तारीख, एक दिन
धनुष का बाण अवश्य बनेगी।

Happy New Year

HOTEL VENKTESH

A Place of Royal Hospitality

For Booking Contact :
098873 88428, 088758 58584

2/5, Dholi Magri, Shivaji Nagar, Nr. Railway Station, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2481083, E-mail : hotelvenkteshudr@gmail.com

संभल में मस्जिद सर्वे के दौरान हिंसा दुर्भाग्यपूर्ण

कैसे पहुंचे पाकिस्तान से कारतूस?

अदालत के आदेश की अवहेलना अनुचित, देश अपने संविधान की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है और संविधान की बुनियाद भी सामाजिक सद्भाव पर टिकी है। आज सरकार के साथ-साथ आम लोगों पर भी बड़ी जिम्मेदारी है। कानून को अपने हाथ में लेने की किसी को इजाजत नहीं।

नंद किशोर

उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद के संभल में एक और मस्जिद हिन्दू और मुसलमानों के बीच कानूनी लड़ाई का केन्द्र बनी हुई हैं। इसके परिणामस्वरूप दंगे हुए, भगदड़ मची, लोगों के वाहन जलाए गए और चार मौतें हुईं। फलत: शहर का जनजीवन ठहर सा गया। एक याचिका पर अदालत के न्यायाधीश द्वारा 16वीं सदी में बाबर द्वारा 1526 से 1530 के बीच बनाई गई एक मस्जिद के सर्वेक्षण का आदेश देने के बाद यह सब कुछ हुआ। इसकी शुरुआत तब हुई, जब एडवोकेट विष्णु शंकर जैन, जो ज्ञानवापी मस्जिद व कृष्ण जन्मभूमि विवादों में भी वकील हैं, ने दावा किया कि बाबर द्वारा इस जामा मस्जिद का निर्माण कल्कि भगवान के ऐतिहासिक हरिहर मंदिर को तोड़कर किया गया है। उन्होंने हिंदू धर्मग्रंथों को उद्धृत करते हुए कहा कि इस स्थल का हिंदुओं के लिए धार्मिक महत्व है क्योंकि यह कल्कि का जन्मस्थल है और कलियुग की समाप्ति के बाद भगवान कल्कि प्रकट होंगे। उन्होंने न्यायालय से आग्रह किया कि इस मंदिर का नियंत्रण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को दिया जाए। इस पर न्यायालय ने इस मस्जिद के सर्वेक्षण का आदेश दिया और इस प्रक्रिया की निगरानी के लिए एडवोकेट्स कमीश्नर को नियुक्त किया। रोचक तथ्य यह है कि पहला सर्वेक्षण शांतिपूर्ण रहा। मस्जिद समिति ने हिंदू-मुस्लिम प्रतिनिधियों की उपस्थिति में 8 नवम्बर को अपनी सहमति दी, किंतु 24 नवम्बर को जब अधिकारी दूसरे सर्वेक्षण के लिए वहां पहुंचे तो उपद्रव हो गया। इस बवाल की पुलिस छानबीन में जो तथ्य

क्या है विवाद

संभल की एक सिविल कोर्ट ने 19 नवम्बर को एक एडवोकेट्स कमिश्नर को संभल में शाही जामा मस्जिद का सर्वेक्षण करने का निर्देश दिया था। यह निर्देश अधिवक्ता जैन और सात अन्य लोगों द्वारा दायर याचिका के जवाब में जारी किया गया था, जिन्होंने दावा किया था कि मस्जिद का निर्माण मुगल काल के दौरान ध्वस्त मंदिर के ऊपर किया गया था। आदेश के बाद इसी सर्वे के दौरान पथराव और वाहन में आग लगाने की घटनाओं के बीच चार लोगों की मौत हो गइ। 19 नवम्बर को प्रारंभिक सर्वेक्षण के बाद, शाही जामा मस्जिद का दूसरा सर्वेक्षण करने के लिए सर्वेक्षणकर्ताओं की एक टीम के चंदौसी शहर में पहुंचने के बाद 24 नवम्बर को प्रदर्शनकारियों और पुलिसकर्मियों के बीच हिंसा भड़क उठी। शव परीक्षण में पुलिस गोलीबारी को मौतों का कारण नहीं माना गया।

उजागर हुए हैं, उनमें पाकिस्तान ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में बने कारतूस और अमेरिका निर्मित 12 बोर का एक खोखा मिलना शामिल है। ये वहां कैसे पहुंचे, क्या उपद्रव की पहले से तैयारी थी?

हिन्दुओं का दावा है कि बाबरनामा और अबुल फजल की आइने अकबरी में इस बात की पुष्टि की गई है कि जिस स्थल पर आज जामा मस्जिद खड़ी है वहां पर हरिहर मंदिर था। वे 1879 के ब्रिटिश पुरातत्वविद कार्ललाइल की रिपोर्ट का उल्लेख भी करते हैं, जिसमें कहा गया है कि मंदिर के अंदर और बाहर के स्तम्भ हिन्दू मंदिरों के स्तंभों की तरह दिखते हैं, इनको छिपाने के लिए उन पर प्लास्टर किया गया है और एक स्तम्भ से प्लास्टर हटाने से पता चला कि यह हिंदू मंदिर वास्तु कला के प्राचीन लाल स्तंभों की तरह है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि मस्जिद की अनेक विशेषताएं और अनेक वस्तुएं इसकी प्राचीनता को दर्शाती हैं और वे हिन्दू मंदिर से जुड़ी हुई हैं। इसके अलावा लेख में यह भी है कि शाही मस्जिद का निर्माण बाबर के दरबारी मीर हिंदू बेग द्वारा 1526 में एक मंदिर को मस्जिद बनाकर किया गया।

मस्जिद के सर्वे से आपा खोने वालों की आपत्ति का यह एक आधार हो सकता है कि आखिर स्थानीय अदालत के मस्जिद सर्वे के आदेश पर तुरंत अमल क्यों होने लगा, लेकिन क्या इस आपत्ति का जवाब पत्थरबाजी थी? जामा मस्जिद के सदर जफर अली की मानें तो भीड़ इसलिए भ्रमित हो गई, क्योंकि मस्जिद के सर्वे के क्रम में वजूखाने के हौज का पानी बाहर निकाले जाने से लोगों को लगा कि उसकी खुदाई शुरू हो गई है। यह अजीब और हास्यास्पद है, क्योंकि कथित भ्रमित लोग नकाब पहनकर पत्थरबाजी करते देखे गए। यह पहली बार नहीं, जब सरकार या अदालत के किसी फैसले के खिलाफ सड़कों पर उतरकर हिंसा की गई हो। नागरिकता संशोधन कानून के मामले में भी ऐसा ही देखने को मिला था। तब सड़कों पर उतरकर बड़े पैमाने पर हिंसा की गई थी, जबकि इस कानून का किसी भारतीय नागरिक से कोई लेना-देना नहीं था। इस हिंसा में सरकारी और गैर सरकारी संपत्ति को आग के हवाले किया गया था और दिल्ली में तो शाहीन बाग इलाके के करीब साल भर तक एक प्रमुख सड़क को घेरकर धरना दिया गया था। यही धरना बाद में दिल्ली में भीषण दंगे का कारण बना, जिसमें 50 से अधिक लोग मारे गए थे।

संभल हिंसा में चार लोगों की मौत के संबंध

न्यायिक आयोग ने की जांच

जामा मस्जिद सर्वे के दौरान हिंसा की जांच के लिए शासन द्वारा गठित न्यायिक आयोग की टीम 2 दिसम्बर को संभल में दो घंटे तक रही। आयोग के अध्यक्ष एवं इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश देवेन्द्र कुमार अरोड़ा और सदस्य पूर्व डीजीपी एके जैन ने पुलिस प्रशासनिक अधिकारियों के साथ हिंसाग्रस्त इलाकों में पैदल घूमकर हर पहलू की बारीकी से जांच की। टीम ने जामा मस्जिद के आसपास के इलाकों से अपनी जांच शुरु की। टीम ने उन सभी स्थानों पर जाकर जांच की, जहां फायरिंग पथराव और आगजनी की घटनाएं हुई थी। टीम ने जामा मस्जिद के अंदर जाकर भी हर संरचना का गहनता से निरीक्षण किया। साथ ही मस्जिद कमेटी के सदर व अन्य सदस्यों से भी बातचीत की। बाद में टीम ने डाक बंगले में मंडल और जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ बैठक भी की। टीम ने सर्वे से लेकर हिंसा भड़काने तक के सच को समझने के लिए हर पहलू का गहन अध्ययन किया।

में पुलिस अधिकारियों और जिला मजिस्ट्रेट (डीएम) के खिलाफ एफआइआर दर्ज कराने की मांग को लेकर इलाहाबाद हाइकोर्ट में 29 नवम्बर को जनहित याचिका दायर (पीआईएल) की गई है। यह याचिका हजरत ख्वाजा गरीब नवाज एसोसिएशन के सचिव मोहम्मद युसुफ ने दायर कराई है। याचिकाकर्ता ने यूपी सरकार को सभी दोषी पक्षों को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने का सख्त आदेश देने की भी मांग की है।

जिला अदालत की कार्यवाही रोकी

सुप्रीम कोर्ट ने संभल मस्जिद सर्वेक्षण विवाद में 29 नवम्बर को जिला अदालत की कार्यवाही पर रोक लगाते हुए याचिकाकर्ता शाही जामा मस्जिद समिति को इलाहाबाद हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाने और राज्य सरकार के इलाके में शांति और सद्भाव बनाए रखने का निर्देश दिया। इसके साथ ही वादी को कोई भी कागजात दाखिल न करने का निर्देश देते हुए अदालत ने कहा कि एडवोकेट्स कमिश्नर की सर्वेक्षण रिपोर्ट को सीलबंद लिफाफे में रखा जाए। प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की पीठ ने कहा कि उसे सिविल जज (वरिष्ठ प्रभाग) के 19 नवम्बर को दिए उस आदेश पर कुछ आपत्तियां हैं, जिसमें मस्जिद का सर्वेक्षण करने को कहा गया था।

हिंसा नहीं स्वीकार्य

यदि मस्जिद पक्ष का यह मानना है कि जामा मस्जिद के सर्वे का आदेश सही नहीं तो उसे ऊपरी अदालत का दरवाजा खटखटाना चाहिए था। अदालत के आदेश की अवहेलना करने के लिए हिंसा का सहारा लेने का कहीं कोई औचित्य नहीं और तब तो बिल्कुल भी नहीं जब निचली अदालत के किसी फैसले के खिलाफ ऊंची अदालतों में जाने का रास्ता खुला हो। यह सही है कि 1991 का पूजा स्थल अधिनियम किसी धार्मिक स्थल में बदलाव का निषेध करता है, लेकिन इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि यह अधिनियम ऐसे किसी स्थल के सर्वेक्षण की अनुमति भी प्रदान करता है और इसी कारण वाराणसी में ज्ञानवापी परिसर का सर्वेक्षण हुआ और धार में भोजशाला परिसर का भी। मथुरा में ईदगाह परिसर के सर्वेक्षण का मामला सुप्रीम कोर्ट के समक्ष विचाराधीन है। ये विवाद नए नहीं हैं। इन विवादों को सुलझाने की आवश्यकता हैं। अजमेर दरगाह को लेकर भी सवाल उठाए गए हैं। इसका एक तरीका न्यायपालिका का सहारा और दूसरा है आपसी सहमति। इससे बेहतर और कुछ नहीं। संभलकर चलने का समय है। न्याय के मंदिरों को ज्यादा सजग रहना होगा। ऐसे मामलों में पूरी तरह से तार्किक और तथ्य आधारित बने रहने में ही सबका हित है। भावनाओं में बहकर फैसला लेने या घातक टिप्पणी करने की इजाजत संविधान भी नहीं देता।

प्रत्यूष

कुंभलगढ़ दुर्ग में लोक-संस्कृति की इंद्रधनुषी छटा

अमित शर्मा

स्थापत्य एवं संगीत कला प्रेमी मेवाड़ के यशस्वी महाराणा कुंभा के अजेय दुर्ग कुंभलगढ़ में राज्य सरकार द्वारा आयोजित 18वें कुंभलगढ़ महोत्सव-2024 का समापन 3 दिसंबर को हुआ।

लोक संस्कृति और संगीत के इस अद्भुत आयोजन का रंगारंग आगाज 1 दिसम्बर को कला साधकों की इन्द्रधनुषी शोभायात्रा के साथ हुआ। यात्रा प्रताप सर्कल से होकर हल्लापोल, व्यूपाईंट और रामपोल से होते हुए दुर्ग स्थित गणेश मंदिर पहुंची। जहां पूजा-अर्चना के बाद राज्य के विभिन्न जिलों से आए कलाकार ढोल-नगाड़ों और पारम्परिक वाद्ययंत्रों की मनमोहक धुन पर नाचते-गाते यज्ञवेदी चौक पहुंचे जहां महाराणा कुंभा के चित्र की पूजा-अर्चना के साथ महोत्सव आरंभ हुआ। इस दौरान उपखंड अधिकारी गोविन्द सिंह रत्नू, पर्यटन विभाग की उपनिदेशक शिखा सक्सेना, प्रधान कमला दसाणा, होटल एसोसिएशन अध्यक्ष भारतपाल सिंह शेखावत, तहसीलदार पर्वत सिंह राठौड़ आदि उपस्थित थे।

इसके बाद सजे-धजे मंच पर बूंदी के सत्यनारायण ने कच्छी घोड़ी, जोधपुर के अप्पानाथ ने कालबेलिया नृत्य, मीना देवी बाड़मेर ने घूमर, आशा बाई बांरा ने चकरी, गोपाल धानुक बारां ने सहरिया, तगाराम बाड़मेर ने सफेद आंगी गैर व चरी नृत्य की प्रस्तुतियां दीं। जोधपुर के मंगणियार जीवननाथ के गायन पर दर्शक मंत्रमुग्ध थे। चित्तौड़ से आए दुर्गा शंकर ने बहरूपिया बनकर लोगों का खूब मनोरंजन किया इस बार लाखेला तालाब की पाल पर फूड कोर्ट भी लगा जिसमें लोगों ने विविध व्यंजनों का स्वाद लिया।

दूसरे दिन बाड़मेर के पारसमल और उनके समूह ने लाल आंगी गैर नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति और जीवननाथ व लंगा समूह के गायन ने दर्शकों को झूमने पर मज़बूर किया।

महोत्सव के तीसरे और अंतिम दिन बरखा जोशी व समूह का कथक नृत्य और फॉक फ्यूजन तथा मोहित गंगवानी का तबला वाद आकर्षण का केन्द्र रहा। इसके साथ विविध क्षेत्रों के लोक गीतों और लोकनृत्यों ने भी दर्शकों को खूब गुदगुदाया। महोत्सव ने आसपास क्षेत्रों के दर्शकों के साथ विदेशी पर्यटकों की भी सहभागिता रही। देसी ढोल की थाप पर नयनाभिराम गैर नृत्यों के दौरान दर्शकों के ठुमके भी देखते ही बनते थे।

इस त्रिदिवसीय प्रतियोगिता में साफा-पगड़ी बांधने, रंगोली, माण्डणे व रस्साकशी आदि की भी प्रतियोगिताएं हुई।

नवम पुण्यतिथि

जन्म
2 फरवरी, 1931

देवलोक
30 जनवरी, 2016

युग पुरूष एवं जन-जन के प्रेरणा स्त्रोत

पं. जीवतराम शर्मा (बाबूजी)

संस्थापक - राजस्थान बाल कल्याण समिति

की नवम पुण्यतिथि पर हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धानवत

गिरजा शंकर शर्मा, प्रबन्ध निदेशक

राजस्थान बाल कल्याण समिति परिवार

E-mail : jhadolrbks1@rediffmail.com I website : www.rbks.org

राजस्थान बाल कल्याण झाड़ोल द्वारा संचालित प्रकल्प

क्रम	विद्यालय प्रकल्प	क्रम	महाविद्यालय/उच्च शिक्षा प्रकल्प
1	रा.बा.वि.म. सीनियर सैकण्डरी विद्यालय, झाड़ोल	1	जे.आर. शर्मा पी.जी. महाविद्यालय, झाड़ोल
2	रा.बा.वि.म. उच्च प्राथमिक विद्यालय, झाड़ोल	2	गुरू पुष्कर जैन महाविद्यालय, झाड़ोल
3	रा.बा.वि.म. उच्च प्राथमिक विद्यालय, गोराणा	3	जे.आर. महाविद्यालय, रेलमगरा, राजसमन्द
4	राजस्थान पब्लिक मा.वि., झाड़ोल	4	जे.आर. महाविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही
5	शैक्षणिक परिसर सीनियर सैकण्डरी विद्यालय, बीड़ा	5	जे.आर. बी.एड महाविद्यालय, झाड़ोल
6	हुनर घर उच्च प्राथमिक वि. बाखेल, कोटड़ा	6	जे.आर. शर्मा महाविद्यालय, ऋषभदेव, उदयपुर
7	ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम संस्था कार्यक्षेत्र	7	जे.आर. महाविद्यालय, माउण्ट आबु, सिरोही
8	शिशु पालना गृह एवं बालवाड़ी कार्यक्षेत्र	8	जे.आर. नर्सिंग संस्थान, सागवाड़ा, डूंगरपुर
9	हिंदुजा फाउंडेशन स्कूल शिक्षा कार्यक्रम	9	जे.आर. शर्मा पी जी महाविद्यालय, फलासिया
10	जे.आर.शर्मा कौशल विकास कार्यक्रम	10	जे. आर. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, झाड़ोल
11	जे.आ. शर्मा छात्रवृत्ति कार्यक्रम	11	जे. आर. पी जी महाविद्यालय, प्रतापगढ़
12	विद्यालय विकास कार्यक्रम	12	जे. आर. कॉलेज, उदयपुर
13	बाल कल्याण शिक्षा कार्यक्रम	13	जे.आर. शर्मा पत्राचार एवं स्वयंपाठी शिक्षण कार्यक्रम
14	विद्यालय कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रम	14	हिंदुजा फाउंडेशन उच्च शिक्षा कार्यक्रम

आवासीय शिक्षा प्रकल्प

1	अनु.जनजाति कन्या छात्रावास-प्रथम इकाई झाड़ोल, उदयपुर	10	जे.आर. शर्मा बी.एड महिला छात्रावास झाड़ोल, उदयपुर
2	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास -द्वितीय इकाई, झाड़ोल, उदयपुर	11	निराश्रित बालगृह झाड़ोल, उदयपुर
3	अनु. जनजाति कन्या स्नातकोत्तर छात्रावास, झाड़ोल, उदयपुर	12	निराश्रित बालिकागृह झाड़ोल, उदयपुर
4	अनुदानित कन्या छात्रावास रेलमगरा, राजसमन्द	13	गुरूकुल बोर्डिंग हॉस्टल-बालक, झाड़ोल, उदयपुर
5	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास-सागवाड़ा, डूंगरपुर	14	हंसराज बालिका गृह, देवाली, उदयपुर
6	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास डूंगरपुर	15	जे. आर. शर्मा नर्सिंग हॉस्टल, सागवाड़ा, डूंगरपुर
7	शैक्षणिक परिसर आवासीय कन्या छात्रावास बीड़ा, झाड़ोल, उदयपुर	16	जे. आर. शर्मा हॉस्टल, प्रतापगढ़
8	निराश्रित बालिका गृह, सागवाड़ा, डूंगरपुर	17	कौशल विकास छात्रावास, सागवाड़ा
9	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास, सीजावड़	18	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास, सागवाड़ा

समस्त ग्रामीण सामुदायिक विकास इकाईयां (लाभान्वित गाँव 875)

राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं गुजरात के जनजाति बाहुल्य 22 जिलों में जलग्रहण, वाड़ी परियोजना, आजीविका विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, जागरूकता कार्यक्रम, कौशल विकास, आय संवर्धन एवं अन्य सामाजिक उत्थान कार्यक्रम, इन्दिरा रसोई, सेलटर होम आदि

क्रम	संस्था द्वारा स्थापित गौशालायें एवं फाउण्डेशन	क्रम	संस्था द्वारा स्थापित कम्पनीयां
1	सुरभि गौशाला धाम, बराड़ा, उदयपुर	1	वागड़ प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, डूंगरपुर
2	ब्रह्मानंद कपिल गौशाला, हंडिया, मध्यप्रदेश	2	झाड़ोल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, उदयपुर
3	जे.आर. शर्मा फाउण्डेशन, उदयपुर	3	सोमवाल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, उदयपुर
4	गोगुन्दा पॉटरी फाउण्डेशन	4	मेवाड़ पॉटरी प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड
5	6 इन्दिरा रसोई उदयपुर एवं डूंगरपुर	5	2 आश्रय स्थल डूंगरपुर
6	2 शहरी आजीविका केन्द्र उदयपुर एवं जोधपुर	6	31 कृषि एवं गैर कृषि उत्पादन प्रा.लि. कम्पनीज

प्रतिष्ठान

ऋषिराज एण्ड ब्रदर्स, मगवास	कमलेश्वर फर्निचर एण्ड वेल्डिंग वर्क्स, मगवास	जे.आर. शर्मा बिल्डर्स मगवास

'गुलामी के घी से आजादी की घास भली' - सुभाषचन्द्र बोस

मातृभूमि के लिए कर्तव्यबोध और आत्मानुशासन के साथ नेताजी सुभाषचनद्र बोस ने आजाद भारत की बुनियाद आजाद हिंद फौज और आजाद हिंद सरकार बनाकर कर दी थी। उनका मानना था कि अंग्रेज बिना खूनी क्रांति के हिन्दुस्तान नहीं छोड़ेंगे। निष्क्रिय प्रतिरोध विदेशी शासन को कुछ समय के लिए शांति रहित तो कर सकता है, मगर बिना भौतिक शक्ति के उन्हें नहीं निकाला जा सकता। उन्होंने कहा मैं गुलामी के घी से आजाद की घास को अच्छा समझता हूं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस 23 जनवरी 1897 को कटक (उड़ीसा) में पैदा हुए। उनके पिता जानकीनाथ और मां प्रभावती रामकृष्ण परमहंस के अनुयायी थे। कोलकाता के स्कॉटिश चर्च कॉलेज से दर्शनशास्त्र में स्नातक की उपाधि हासिल करने के बाद सिविल सेवा का सपना लिए वे लंदन गए। लंदन में वे सिविल सेवा परीक्षा में चौथे क्रम पर चयनित हुए, लेकिन उस दौरान जलियावाला नरसंहार ने उनके मन मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव डाला कि उनका मन अंग्रेजों के खिलाफ हो गया। 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शिखर नेतृत्व के लिए चुनाव में उन्हें सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। 21 जनवरी 1939 को द्वितीय बार उन्होंने फिर से अपनी दावेदारी प्रस्तुत की। सीतारमय्या से वे 1377 मतों के मुकाबले 1580 मतों से जीत गए। सीतारमय्या को गांधी जी का आशीर्वाद प्राप्त था। गांधी जी ने इस हार पर बयान दिया कि सीतारमय्या की हार उनसे अधिक मेरी हार है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस कांग्रेस के समझौता वादी रवैये के सख्त विरोधी थे। बोस का मानना था कि समय की अनुकूलता ध्यान में रखकर कांग्रेस को क्रांति के लिए तैयार हो जाना चाहिए। लेकिन गांधीजी ने एक इंटरव्यू में कहा वह (सुभाष) मानते हैं कि लड़ने के लिए हमारे पास पूरी ताकत है। ये उनके विचारों के पूर्णत: विरुद्ध है। आज हमारे पास लड़ने की कोई ताकत नहीं है।कांग्रेस की अंतर्कलह के कारण सुभाषचन्द्र बोस ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। उसी साल सुभाषचन्द्र बोस और उनके समर्थकों ने कांग्रेस के अंदर ही एक नए दल फॉर्वड ब्लॉक की स्थापना की। कांग्रेस ने उनके खिलाफ अनुशासन भंग की कार्यवाही करते हुए उन्हें तीन वर्ष के लिए पार्टी से बाहर कर दिया। सितम्बर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध शुरु हुआ। सुभाषचन्द्र बोस और उनके फॉर्वड ब्लॉक कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी सहित अन्य और पार्टियों ने राय दी कि यही मौका है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ चौतरफा युद्ध छेड़कर आजादी हासिल कर ली जाए, लेकिन गांधी जी इसके लिए तैयार नहीं थे। वे वेश बदलकर 17 जनवरी 1943 को आधी रात को मोहम्मद जियाउद्दीन का नाम करण कर कलकत्ता से गायब हो गए। वे पेशावर के रास्ते देश से बाहर निकल गए। भारत की स्वतंत्रता के लिए आईएनए और इंडिया इंडिपेंडंस लीग के रूप में विदेशी धरती पर जल रही मशाल को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के रूप में एक सशक्त नेतृत्व मिल गया। 12 जुलाई 1943 को नेताजी सिंगापुर आ गए। जापान ने नेताजी को बिना शर्त भारत को पूर्ण स्वतंत्रता के लिए समर्थन की पुष्टि कर दी थी। नेताजी 4 जुलाई 1943 को सिंगापुर के कैथे भवन में अपने देशवासियों के समक्ष प्रकट हुए। 21 अक्टूबर 1942 को पूर्वी एशिया के लगभग एक हजार प्रतिनिध अधिकारी, आईएनए और आईएलके, नर-नारी, जापानी सेना, सरकार के अधिकारी और सिंगापुर के नागरिक कैथ हाल में इकट्ठा हुए। नेताजी ने उस वक्त शपथ ली कि ईश्वर के नाम पर मैं यह शपथ लेता हूं कि भारत और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों को स्वतंत्र कराने के लिए मैं अपने जीवन की अंतिम सांस तक युद्ध जारी रखूंगा। झांसी की रानी रेजीमेंट की कमाण्डेट थी डॉ. लक्ष्मी नारायण, जिन्हें महिला विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। नेताजी ने जगह-जगह जाकर जनसभाएं की। लीग के मुख्यालय में अन्य विभागों का विस्तार करते हुए सामान्य विभाग को बल देने के लिए सात नए विभागों का निर्माण किया। 15 अगस्त 1945 की मंत्रिमंडल की बैठक के फैसले के अनुसार नेताजी, हबीबुर्रहमान, एस.ए. अय्यर, आबिद हसन, देवनाथ दास और कुछ अन्य साथियों के साथ टोकियो चले गए। वे सैमान में रूके। वहां से नेताजी को जापानी बमवर्षक में स्थानांतरित कर दिया गया। 23 अगस्त 1943 को टोकियो रेडिया ने बताया कि यह विमान हवाई उड़ाने भरते ही ध्वस्त हो गया। भारत में आज भी कुछ लोग उनकी इस मौत पर विश्वास नहीं करते। आजाद हिंद फौज द्वारा दिए गए राष्ट्रीय नारे जय हिंद ने ब्रिटिश सेना में खलबली मचा दी थी। नेताजी ने भारतीय जनता का आह्वान किया था कि तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। उनका भारतीय आजादी के लिए समर्पण अनोखा था। देश की जनता से भी वह ऐसा ही समर्पण चाहते थे। उन्होंने विदेशी धरती पर आजाद हिंद फौज का निर्माण कर भारत की आजादी के लिए अन्य देशों का समर्थन हासिल करके मजबूत विदेश नीति का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया।

-डॉ. महेश त्रिपाठी

Happy New Year

Hotel
Raj Shree Palace

The Royal & Luxury Stay

Opp. Garden Hotel, Gulab Bagh Road, Udaipur - 313001, Ph. : 0294-6505060
E-mail : hotelrajshreepalaceudr@gmail.com, Website : www.hotelrajshreepalace.com

प्रत्यूष

पीआरपी टेक्निक ब्लास्टोसिस्ट कल्चर एवं एम्ब्रीयो फ्रीजिंग

नवाचार से आईवीएफ में सफलता की दर बढ़ी

उन महिलाओं जिनमें बच्चेदानी की लाइनिंग बहुत कमजोर है या अंडाशय के समय से पहले काम बंद करने से जल्दी माहवारी बंद हो गई है, उनके लिए वरदान साबित हो रही है पीआरपी तकनीक।

क्या है पीआरपी?

रक्त प्लाज्मा में बहुल मात्रा में प्लेट्लेटस पाए जाते हैं, पीआरपी ऐसी तकनीक है जिसमें मरीज के शरीर से ब्लड (20-30 मिली) निकाल कर उसे विशेष तकनीक की मदद से ब्लड कंपोनेंट को अलग किया जाता है, जिसमें प्लेटलेट रिच पदार्थ काफी मात्रा में होते हैं इसमें ग्रोथ फैक्टर एवं हार्मोन्स होते हैं जिनकी रिजेनरेटिव क्षमता अभूतपूर्व होती है।

पीआरपी की उपयोगिता

कुछ मरीजों में यूटरस/बच्चेदानी की झिल्ली बहुत कमजोर होती है। सामन्यत: आईवीएफ के दौरान झिल्ली 7 से 12 एमएम होनी चाहिए। पहले इन महिलाओं को सरोगेसी की राय दी जाती थी। पीआरपी में मौजूद ग्रोथ फैक्टर एवं हार्मोन बच्चेदानी की झिल्ली में सुधार करते हैं एवं ऐसे मरीजों में आईवीएफ सफलता की दर बढ़ जाती हैं।

जिन महिलाओं में समय से पहले अंडाशय काम करना बंद कर देते हैं एवं मीनोपॉज आ जाता है, उसमें भी लेप्रोस्कोपी के दौरान अंडाशय में पीआरपी थैरेपी इंजेक्ट की जाती है एवं समय के साथ अंडाणु की मात्रा एएमएच में सुधार होता है वे स्वयं के अंडाणु से मां बन सकती हैं।

ब्लास्टोसिस्ट कल्चर एवं ट्रांसफर

अब भ्रूणों को प्रयोगशाला में ब्लास्टोसिस्ट चरण तक विकसित करना संभव है जो कि फर्टिलाइजेशन के पांचवे दिन होता है (जब भ्रूण में 500 कोशिकाएं होती हैं। आम तौर पर सबसे स्वस्थ भ्रूण ही ब्लास्टोसिस्ट चरण तक पहुंच पाते हैं क्योंकि वही मुख्य विकास तथा विभाजन की प्रक्रियाओं तक जीवित बच पाते हैं तथा एक बार ट्रांसफर होने के बाद इन्हीं के सबसे जयादा विकसित होने के अवसर रहते हैं और एक साथ कई गर्भ ठहरने का खतरा कम हो जाता है। अधिक बेहतरीन भ्रूणों का चयन होने से एक या दो भ्रूणों को ट्रांसफर करने से भी गर्भावस्था के अवसर बढ़ जाते हैं।

ब्लास्टोसिस्ट कल्चर यानि सर्वश्रेष्ठ भ्रूण का विकास

भ्रूणों का सहज प्राकृतिक विकास उनके बढ़ने व विभाजित होने की क्षमता निर्धारित करता है। कुछ अंडे शुरुआत में निशेचित हो जाते हैं। उनमें से कुछ, दूसरे दिन फोर सेल स्टेज तक पहुंच पाते हैं, तो कुछ तीसरे दिन आठवें चरण तक और उनमें से भी कुछ ही ब्लास्टोसिस्ट चरण तक विकसित हो पाते हैं। सरल भाषा में इसे सबसे योग्यतम का बचे रहना कहा जा सकता है। अमूमन 30-50 प्रतिशत भ्रूण ही ब्लास्टोसिस्ट तक पहुंच पाते हैं। ब्लास्टोसिस्ट कल्चर के लिए मीडिया का प्रयोग होता है जो जीवन को बनाए रखने वाले पोषक तत्वों से पूर्ण होता है अनुभवी एम्ब्रोलॉजिस्ट की देखरेख में प्रतिदिन भ्रूण को उनके विकास के अनुसार पृथक मीडिया की प्लेट में बदला जाता है।

आईवीएफ के साथ ब्लास्टोसिस्ट ट्रांसफर के लाभ

- रिसर्च के अनुसार ब्लास्टोसिस्ट कल्चर एवं ट्रांसफर से टेस्ट ट्यूब बेबी रिजल्ट में अहम बढ़ोतरी हुई है।
- ब्लास्टोसिस्ट कल्चर व ट्रांसफर का मुख्य लाभ है एक साथ कई गर्भ ठहरने से रोकना। इसका मतलब है कि एक साथ कई गर्भ ठहरने से प्रसूति में जो जटिलताएं होती है वो कम हो जाती है।
- कई बार टेस्ट ट्यूब बेबी प्रक्रिया में लाभान्वित नहीं हुए दंपती एवं अधिक उम्र की महिलाओं जिनमें बच्चेदानी की स्थिति अच्छी नहीं है, उनमें ब्लास्टोसिस्ट के परिणाम बहुत उत्साहजनक हैं।
- सेल्फ एग (स्वयं के अंडे) वाले मरीज जिनको दो या अधिक प्रेग्नेंसी की वजह से ओएचएसएस का खतरा रहता है वह भी एक या दो ब्लास्टोसिस्ट ट्रांसफर से खत्म हो जाता है।

भ्रूण विट्रिफिकेशन

क्या हैं भ्रूण विट्रिफिकेशन? यह भ्रूण के फ्रीजिंग की नवीनतम तकनीक है जिसमें भ्रूण अल्ट्रा रेपीड/600 गुना तीव्र गति से ठंडा किया जाता है जिससे फ्रीजिंग में बर्फ के क्रिस्टल बनने से होने वाली हानि कम हो जाती है। भ्रूण को विट्रिफिकेशन पश्चात (196) डिग्री सेंटीग्रेड पर लिक्विड नाइट्रोजन में स्टोर किया जाता है। पारंपरिक फ्रीजिंग की बजाय विट्रिफाइड फ्रीजिंग के लाभ हैं।

- अल्ट्राफ्रीजिंग/रेपिड फ्रीजिंग के कारण भ्रूण को कम से कम हानि-पिघलाने पर उत्तम जीवित भ्रूण की प्राप्ति

उच्च भ्रूण आरोपण दर

फ्रोजन एंब्रियो ट्रांसफर से स्वयं के अण्डे उपयोग में लेने वाली महिलाओं में खासकर पीसीओडी के मरीजों में स्वयं के अंडों में सफलता दर बढ़ाती है क्योंकि अंडा बनने वाले इंजेक्शन से अंडाशय का साइज 4 से 6 गुना बढ़ जाता है, जिसमें इंप्लांटेशन रेट कम होती है ऐसे में स्वयं के अंडों से भ्रूण बनाकर फ्रीज कर देते है और डेढ़ महीने बाद जब अंडाशय का साइज नॉर्मल आ जाता है तो भ्रूण प्रत्योरोपित कर देते हैं एक बार अंडे बनने के इंजेक्शन लगाने से भ्रूण बनाकर फ्रिज करने से दूसरे व दूसरे सायकल का खर्चा काफी कम हो जाता है।

लेखक - पुरुष नि:संतानता विशेषज्ञ हैं

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

एक वर्ष
परिणाम उत्कर्ष

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

महत्वपूर्ण फैसलों से बदलती राजस्थान की तस्वीर

संशोधित पीकेसी योजना के लिए राजस्थान, मध्य प्रदेश और केन्द्र सरकार के बीच एमओयू

शेखावाटी अंचल को बहुप्रतीक्षित यमुना जल उपलब्ध कराने के लिए राजस्थान, हरियाणा और केन्द्र सरकार के बीच एमओयू

ऊर्जा क्षेत्र में केंद्रीय पीएसयू के साथ 2.24 लाख करोड़ के एमओयू

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में 38,447 आवास पूर्ण
1 लाख 55 हजार नए आवासों की स्वीकृति

पीएम-सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना में 20 हजार रूफटॉप सोलर संयंत्र स्थापित

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में 30,297 आवास पूर्ण, 30,408 नए आवासों की स्वीकृति

लगभग 96 हजार कृषि कनेक्शन और 4 लाख 64 हजार घरेलू विद्युत कनेक्शन जारी

श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना के तहत 8 रूपये में भरपेट भोजन, प्रति थाली सरकार की तरफ से 22 रुपये का अनुदान

किसान सम्मान निधि में 70 लाख से अधिक कृषकों को 5500 करोड़ रुपये से अधिक राशि हस्तान्तरित

लगभग 26 हजार सोलर पम्प सेट की स्थापना के लिए लगभग 400 करोड़ रुपये का अनुदान

मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना एवं मा वाउचर योजना प्रारम्भ

5 नये मेडिकल कॉलेज बारां, बांसवाड़ा, नागौर, झुन्झुनूं एवं सवाई माधोपुर में प्रारम्भ

शहजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेन्ट समिट 2024 में लगभग 35 लाख करोड़ रुपये के एम.ओ.यू.

मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाअभियान के तहत 7 करोड़ से अधिक पौधे रोपित

सड़क निर्माण पर लगभग 15000 करोड़ रुपये व्यय

43000 से अधिक पदों पर नियुक्तियां

10.22 लाख ग्रामीण परिवारों को नल से जल, 5257 करोड़ रुपये व्यय

एमजेएसए 2.0 में 5000 गाँवों में 1 लाख वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर्स कार्य

दस नवीन नीतियां

- राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना
- राजस्थान फिनटेक पॉलिसी
- राजस्थान एमएसएमई पॉलिसी
- राजस्थान एनएलएसआई पॉलिसी
- इंटीग्रेटेड क्लीन एनर्जी पॉलिसी
- राजस्थान एवीजीसी-एक्सआर पॉलिसी
- राजस्थान एक जिला-एक उत्पाद नीति
- इंटीग्रेटेड क्लस्टर डेवलपमेंट स्कीम
- राजस्थान एक्सपोर्ट प्रोमोशन पॉलिसी
- राजस्थान टूरिज्म यूनिट पॉलिसी

निभाई जिम्मेदारी, हर घर खुशहाली

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

हार्दिक श्रद्धांजलि

हमारी पूज्यनीया

श्रीमती वरजू बाई

निधन 5 दिसम्बर 2021

(धर्मपत्नी स्व. श्री दल्ला जी डांगी) की *तृतीय पुण्यतिथि*
पर हम सभी परिवारजन ***हार्दिक श्रद्धासुमन*** अर्पित करते हैं।

आपके आदर्श और मार्गदर्शन ही हमारे प्रेरणा स्रोत हैं,
आपका आशीर्वाद एवं पुण्य स्मरण हमारी शक्ति है,
आपके दिव्य चरणों में शत्-शत् नमन्।

श्रद्धावनत

*कमल डांगी–अम्बाबाई (**पुत्र–पुत्रवधू**), भागुबाई–भैरूलालजी, जीवा बाई–हीरालाल, वसीबाई–खेमराज जी (**पुत्री–दामाद**), रमेश–दुर्गा, दिनेश–इन्द्रा (**पौत्र–पौत्रवधू**), सुशीला–मोहनजी (**पौत्री–पौत्री दामाद**), भव्या, रिव्या (**पड़पौत्री**), जतिन, भाविन (गल्लू) (**पड़पौत्र**) एवं **समस्त डांगी (काई) परिवार एवं स्टाफगण।***

फर्म

होटल वरजू विला | **अनुश्री वाटिका**

ओमेगा लेसियर लाउंज प्रा.लि. क्लब का भव्य शुभारंभ

पूर्व मंत्री श्रीचंद कृपलानी फीता काटकर उद्घाटन करते हुए तथा अतिथियों का स्वागत करते देव वासवानी और अभिषेक वासवानी।

उदयपुर। बड़ी मुख्य मार्ग पर ओमेगा लेसियर लाउंज प्राइवेट लिमिटेड क्लब-रेस्टोरेंट-गार्डन का उद्घाटन पूर्व यूडीएच मंत्री एवं निम्बाहेड़ा के विधायक श्रीचन्द कृपलानी द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि विधायक उदयपुर (ग्रामीण) श्री फूल सिंह मीणा थे। अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर गणेश आरती के साथ प्रतिष्ठान का शुभारम्भ किया। रेस्टोरेंट मालिक अभिषेक वासवानी ने बताया कि यहाँ एक साथ 500 व्यक्ति बैठ सकेंगे। कृपलानी ने इस

तरह के रेस्टोरेंट को टूरिस्ट और शहरवासियों के लिए सराहनीय कदम बताया। फूलसिंह मीणा ने रेस्टोरेंट को बड़ी क्षेत्र में बढ़ते हुए टूरिज्म के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। अभिषेक वासवानी ने बताया कि रेस्टोरेंट को एलरो क्लब लीज पर दे दिया गया है। सम्मारोह में विशिष्ट अतिथि टीवी कलाकार करन कुंद्रा ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में अभिषेक वासवानी, देव वासवानी, कमलेन्द्र सिंह पंवार, प्रताप चुघ, विजय आहूजा, हेमन्त भागवानी, सीमा पंचोली, पंकज शर्मा, सरपंच मदन पंडित, एलरो क्लब के हार्दिक, जतिन, जयनेश, कल्पेश, मेधा सहित कई गणमान्य उपस्थित रहे।

आध्यात्मिक लोकतंत्र का जीवंत स्वरूपः कुंभ

अमृत की तलाश में जुटेगा पूरा भारत

इस माह की 13 तारीख से 26 फरवरी महाशिवरात्रि तक प्रयागराज में कुंभ मेला लगेगा। समुद्र मंथन के बाद अमृतघट की बूंदे जहां-जहां टपकी थीं। वहां-वहां हर पांचवे वर्ष कुंभ लगता है। यह भारतीय संस्कृति की आस्था का महापर्व है। जिसमें विभिन्न आस्था, मान्यताओं, विश्वासों ओर परम्पराओं के लोग जुटते हैं, इस तरह यह समरसता का विशाल समागम भी है। इसमें भक्ति, अध्यात्म और दर्शन कुछ इस तरह घुले-मिले हैं कि यह विश्व की अनोखी विरासत बन गया है।

विष्णु शर्मा हितैषी

मकर संक्रांति से प्रयागराज में महाकुंभ का आरंभ हो रहा है। यह पर्व मानव इतिहास की सर्वाधिक पुरानी परम्पराओं में से एक है। किसी बहती नदी और जीवंत संस्कृति सा यह भी लगातार प्रवाहमान और जागृत है। इसके प्रमाण पुरातन वेद ग्रंथों में हैं। यही नहीं, यह भारतीय वांग्मय के ब्राह्मण एवं पुराण ग्रंथ में भी वर्णित है। रामायण और महाभारत में भी इससे संबंधित प्रसंग हैं। मान्यताओं के अनुसार इन दिनों देवताओं का वास, दिव्य आत्माओं का स्थानवास और अगनित श्रद्धालुओं का कल्पवास होता है। इस अवसर पर यहां के जलकणों में अमृत के अंश की पुरातन सनातन मान्यता है। यह सभी के मंगल एवं कल्याण के लिए आहूत एक दिव्य आयोजन है। इस प्रयागराज कुंभ का ध्येय वाक्य सर्वसिद्धिप्रदः कुंभः अर्थात सभी का मनोरथ पूर्ण हो है। ऐसे में माघ महीने की संक्रांति के आगमन उपरांत तीरथराज के संगम क्षेत्र की छटा देखते ही बनेगी।

कुंभ मेला सांस्कृतिक चेतना का लोकमंच है। भारतीय दर्शन की परम्परा में कर्म के बाद ज्ञान का स्थान है। यह ज्ञान ही वैष्णव संप्रदायों में भक्ति शब्द से अभिप्रेत है। भक्ति मतलब ईश्वर में संपूर्ण समर्पण। ज्ञान और भक्ति को पा लेने से पहले मानव मन में इच्छाएं बनी रहती हैं। यह अभिलाषाएं असंख्य और अनेक रूपों वाली हैं। इसमें अमरत्व को प्राप्त कर लेने की इच्छा सबसे बड़ी हैं। मनुष्य अमर होने का प्रयास सृष्टि की शुरुआत से कर रहा है। अमरता पाने के लिए उसे अमृत चाहिए। समुद्र मंथन से निकला अमृत, जिसे पाकर मानव मृत्यु से परे चला जाए। मृत्यु से पार पाने की शाश्वत प्रार्थना बृहदारण्यकोपनिषद ने की थी, मृत्योमा अमृतं गमय यानी हे ईश्वर हमें मृत्यु से अमरता की ओर ले जा।

अमृत बांटने का पर्व

पुरातन पर्व कुंभ अमृत बांटने का पर्व है। मर्त्य को अमर्त्य बनाने का उत्सव है। चिर पुरातन कुंभ का अमृत नित-नवीन है। वह गंगा, यमुना और सरस्वती के नीर से घुलकर अपना वितरण स्वयं कर रहा है। वह जो अमरत्व देता है, उसे कभी लौटाना नहीं पड़ता। वह शांति और विश्रांति का दुर्लभ अमृत बांटता है। देव-दानवों द्वारा किए समुद्र मंथन में प्रकटे धनवंतरि के हाथों में रखे अमृत कलश को छलकाता है। कुंभ मेला संसाधनों के बड़े-बड़े रूपों में बंटे समाज को एक साथ समान अवसर देकर समान आनंद प्रदान करता है। कुंभ आध्यात्मिक लोकतंत्र का जीवंत स्वरूप है। तभी तो चाहे जो हो, त्रिवेणी किनारे गंगे च यमुने चैव...मंत्र ने हजारों साल पुराने मानव समाज की एकता को बचा रखा है।

समानता का यह वातावरण अनादि परम्परा का वरदान है, जो कुंभ मेले में प्रकट होता है। ईश्वर का देना सर्वजन-हिताय होता है। वह जाति, वर्ग या व्यक्ति सापेक्ष नहीं, बल्कि सार्वभौम होता है।

इसीलिए कोई किसी श्रद्धालु को कुंभ के इस परमानंद से दूर नहीं कर सकता। प्रयागराज में वितरित हो रहे अमृत पर सबका अधिकार है। इस अमरता को पाने के लिए किसी वर्ग, वर्ण या योग्यता की जरूरत नहीं है। इससे पता चलता है कि कुंभ ऐसा शाश्वत अनुष्ठान है, जो मानव मन की विविधताओं की एकरूपता का प्रतिनिधि है। इसी नाते कुंभ पुकार-पुकार कर कह रहा है कि मेरे पास आकर अमृत ले जाओ।

मेला भी- पर्व भी

कुंभ मेला भी है और पर्व भी। इसकी छवि संस्कृति समन्वयन के विराट अनुष्ठान की है। यह बहुत से सांस्कृतिक अर्थ समेटे हुए है। धार्मिक एकता का सजीव चित्र है। कुंभ वह श्रेष्ठ पदार्थ है जो कभी नष्ट नहीं होता। कुंभ पर सभी संस्कृतियां एकाकार हो जाती हैं। क्या दक्षिण और क्या उत्तर, सारा भारत अमृत की तलाश में प्रयागराज में इकट्ठा है। कुंभ में सिर्फ स्नान नहीं है, इसमें दान संस्कृति, धर्म संस्कृति और निष्ठा-आस्था संस्कृतियां समाहित हैं। कुंभ से तीर्थराज प्रयाग में समरसता का जो प्रयोग हो, वह मनुष्य को बड़ा मन वाला बनाकर अमरत्व की ओर ले जाएगा।

मानव मन में तीन इच्छाएं होती हैं-पुत्र, धन व प्रतिष्ठा। इनसे भी बड़ा वांछा है अमरत्व पा लेना। मृत्यु को छोड़ कर अमर हो जाने की अभिलाषा। दुनिया में कई कठिनाइयां हैं, किंतु मृत्यु का दुख उनमें सबसे बड़ा है। इस दुख से बचाता है कुंभ का अमृत। इसलिए यह अमृतवर्षी कुंभ सिर्फ मेला नहीं है, बल्कि सभी प्रकार के दुखों की आत्यंतिक निवृत्ति कर देने वाला विराट अनुष्ठान है। सनातन परम्परा का वैशिष्ट्य है। सांस्कृतिक चेतना का ऐसा विश्व मंच है, जिस पर पूरी दुनिया अचंभित है।

चार जगह छलका

कुंभ आध्यात्मिक पर्व है, जिसका इतिहास पुराना है। कुंभ शब्द का निहितार्थ समुद्र मंथन से निकले अमृत घट से है। इस घट को आरोग्य के देवता धनवंतरि लेकर चले तो यह चार जगह छलक पड़ा था। जहां-जहां अमृत कण गिरे, वहां यह मेला भरता है। हरिद्वार में गंगा किनारे, प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर, उज्जैन में क्षिप्रा तट और नासिक में गोदावरी की गोद में एक निश्चित अंतराल से कुंभ मेला आयोजित होता है। अनेक विद्वान इसका उद्गम वेदों में खोजते हैं। दूसरे विद्वानों का मानना है कि कुंभ मेला पौराणिक है। पद्म पुराण और स्कंद पुराण में अमृत कुंभ की कथा है। ज्योतिष के विद्वानों के अनुसार कुंभ पर्व का संबंध अमावस्या और पूर्णिमा से है। ग्रहों की गतिविधि से कुंभ में स्नान करने की तिथि तय होती है। इनमें सूर्य, चंद्र और बृहस्पति की गति मुख्य है। वहीं, कुछ विद्वानों का मत है कि जगतगुरु शंकराचार्य ने नौवीं शताब्दी में कुंभ मेले की नींव रखी। वैदिक धर्म की रक्षा के लिए चार पीठों की स्थापना के बाद शंकराचार्य ने लोगों को धर्म चर्चा हेतु एकत्रित करने के लिए कुंभ मेले का प्रवर्तन किया। चौदहवीं सदी में स्वामी रामानंदाचार्य ने इसे मजबूत किया। उन्होंने नागा साधुओं की एक वृहद फौज बनाई। यह शस्त्र और शास्त्र से सुसज्जित साधुओं की जमात थी। इनके दल 'अनी' और 'अखाड़े' कहे जाते हैं। आज भी कुंभ में इनकी प्रधानता है। अब भी सर्वप्रथम स्नान करने का अवसर नागा साधुओं को देकर इन्हें सम्मान दिया जाता है। सन्यासी और वैरागी कुंभ पर्व की सबसे बड़ी शोभा हैं। अखाड़ों के तीन शाही स्नान होंगे। प्रथम मकर संक्रांति 14 जनवरी, द्वितीय मौनी अमावस्या 29 जनवरी और तृतीय और अंतिम शाही स्नान बसंत पंचमी 3 फरवरी।

सब तीरथ बार-बार गंगा सागर एक बार

कुंभ पर्व के दौरान ही गंगा स्नान को महत्वपूर्ण माना जाता है। कोलकाता से 135 किमी दूर गंगासागर मूलतः एक द्वीप है, जिसे सागरद्वीप के नाम से जाना जाता है। सागरद्वीप में गंगासागर मेला 30 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में लगता है। एक कथा के अनुसार गंगा हिमालय पर्वत से निकल कर सात धाराओं, गंगा, यमुना सरस्वती, रथस्था, सरयू, गोमती और गंडक में बहती और राजा भगीरथ के समस्त पूर्वजों को मोक्ष प्रदान कराती हुई आखिर में सागर में समाहित हो गई। प्रत्येक मकर संक्रांति पर यहां भारी भीड़ होती है। कुंभ पर्व के कारण इस बार विशेष प्रबंध किए गए है। गंगा और सागर के इसी संगमस्थल को गंगासागर कहा गया है। गंगासागर का एक छोर बंगाल की खाड़ी है, तो दूसरा छोर बांग्लादेश है। सुंदरवन के दुर्गम और हिंसक जानवर वाले इलाके को छूता हुआ अथाह जलराशि वाला यह संपूर्ण क्षेत्र तकरीबन 27706 वर्ग किलोमीटर तक फैला है। हर साल 14 जनवरी को मकर संक्रांति के मौके पर लगने वाला गंगासागर मेला दरअसल बाबा कपिलमुनि के मंदिर को केंद्र में रखकर लगता है। कपिलमुनि को भगवान विष्णु का चौबीसवां अवतार भी माना गया है। इस बारे में एक कथा प्रचलित है कि कपिलमुनि के शाप देने से राजा सगर के साठ हजार पुत्र भस्म हो गए थे। महाभारत युद्ध की समाप्ति के पश्चात जब भीष्म पितामह शर-शैय्या पर सोए थे, तब उनसे मिलने वालों में कपिलमुनि का उल्लेख भी मिलता है। कपिलमुनि मंदिर का इतिहास बताना वैसे तो मुश्किल है। लोकोक्ति है कि चौदह सौ वर्ष पहले सन 437 में यह मंदिर बना। इस मंदिर में कपिलमुनि नामक एक देवतुल्य सिद्ध महात्मा की मूर्ति है। कहते हैं कि जयपुर राज्य के गुरु संप्रदाय ने कपिलमुनि मंदिर को प्रतिष्ठित किया। बाद में रामानंदी संप्रदाय के सन्यासियों ने इसे अपना आराध्य स्थल बनाया। तब से अयोध्या की हनुमानगढ़ी से इस मंदिर का संचालन होता है। वैसे गंगासागर में बाबा कपिलमुनि का यह चौथा मंदिर है।

प्रत्यूष

स्टूडियो सार को डिजीन आर्किटेक्चर अवार्ड

उदयपुर। लेकसिटी की आर्किटेक्चर कंपनी स्टूडियो सार को अंतरराष्ट्रीय डिजीन पुरस्कार मिला है। लंदन में डिजीन अवार्ड - 2024 की सेरेमनी में स्टूडियो सार को इमार्जिंग आर्किटेक्ट ऑफ द ईयर के अवार्ड से नवाजा गया। यह मल्टीनेशनल कंपनी सिक्योर ग्रुप के सहायक वेंचर स्टूडियो सार से जुड़ी है। स्टूडियो सार के मैनेजिंग पार्टनर और सिक्योर के ज्वाइंट मैनेजिंग डायरेक्टर अनन्य सिंघल ने दावा किया कि इंटरनेशनल लेवल पर आर्किटेक्चर से लेकर डिजाइनिंग के क्षेत्र में डिजीन द्वारा दिया गया। ये पुरस्कार पहली बार भारत की किसी

प्रेसवार्ता को संबोधित करते अनन्य सिंघल

कंपनी को मिला है। यह अवार्ड बीते एक साल में स्टूडियो सार द्वारा किए गए वास्तुकला कार्यों के आधार पर दिया गया है। इसमें उदयपुर में कला, विज्ञान और मनोरंजन के अनूठे थीम सेंटर 'थर्ड स्पेस' का निर्माण और इसी साल लंदन में आयोजित फेस्टिवल ऑफ आर्किटेक्चर में 'रीथिंकिंग होम-एडॉप्ट एंड रीयूज' विषय पर स्टूडियो सार की क्राफ्ट, कम्यूनिटी और कनेक्शन से जुड़ी प्रदर्शनी शामिल रही। इस पुरस्कार के लिए इंग्लैंड, जापान, चीन, भारत सहित 6 देशों के आर्किटेक्चरल स्टूडियोज शॉर्ट लिस्टेड थे। इनमें से भारत को यह अवार्ड मिला है। स्टूडियो सार द्वारा किए गए प्रमुख प्रोजेक्ट्स में उदयपुर में थर्ड स्पेस, उड़ान पार्क का पुर्नविकास; अहमदाबाद के साणंद में सिक्योर की फैक्ट्री और विशेष कैंटीन समेत अन्य काम शामिल हैं।

डीपी ज्वेलर्स के 10वें शोरूम का शुभारंभ

उदयपुर। डीपी ज्वेलर्स के 10वें शोरूम का नीमच में शुभारंभ हुआ। उद्घाटन डीपी, ज्वेलर्स परिवार के वरिष्ठ सदस्य रतनलाल कटारिया ने किया। इस अवसर पर उनके साथ डीपी, ज्वेलर्स के अनिल कटारिया, संतोष कटारिया, विकास कटारिया व परिवार के अन्य उपस्थित रहे। ग्राहकों ने अपनी मनपसंद ज्वेलरी खरीदी।

मार्बल एसोसिएशन कार्यकारिणी का विस्तार

उदयपुर। मार्बल एसोसिएशन उदयपुर की कार्यकारिणी बैठक में 3 नए संरक्षकों की नियुक्ति की गई। अध्यक्ष पंकज गांगावत ने बताया कि उदयपुर मार्बल एसोसिएशन की छठी कार्यकारिणी बैठक का आयोजन मार्बल संघ के कार्यालय पर हुई। इसमें सर्वसम्मति से महिपालसिंह रूपपुरा, नितुल चंडालिया व वीरमदेव सिंह कृष्णावत को एसोसिएशन के संरक्षक के रूप में नियुक्त किया गया।

राष्ट्रपति से कलक्टर संधू सम्मानित

सलूम्बर। सलूम्बर जिला कलक्टर जसमीत सिंह संधू को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हाथों राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग और सुगम्य भारत अभियान के सफल क्रियान्वयन पर दिया गया। इसके तहत बाधा मुक्त वातावरण के सृजन में सर्वश्रेष्ठ राज्य, संघ, जिला के तहत दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने में उत्कृष्ट कार्य किया गया सम्मान समारोह नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में हुआ। कलक्टर ने पुरस्कार प्राप्त करने के बाद कहा कि यह टीम वर्क का परिणाम है। यह सम्मान सलूम्बर जिले की पूरी टीम की मेहनत और समर्पण का प्रतीक है।

मयंक सिंघल

पीआई इंडस्ट्रीज पुरस्कृत

उदयपुर। सीएनबीसी टीवी 18 ने शीर्ष भारतीय कंपनियों में पीआई इंडस्ट्रीज लिमिटेड उदयपुर को वर्ष की सबसे आशा जनक कंपनी का पुरस्कार प्रदान किया है। केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितीन गडकरी ने मयंक सिंघल, उपाध्यक्ष पीआई इंडस्ट्रीज लिमिटेड, उदयपुर को यह पुरस्कार दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रदान किया।

डॉ. दीपक शर्मा एलायंस फ्रांसेज राजस्थान के उपाध्यक्ष

उदयपुर। एलायंस फ्रांसेज राजस्थान ने वार्षिक आमसभा का आयोजन जयपुर में किया, जिसमें क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों से सदस्य एकत्र हुए। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम ने संगठन की उपलब्धियों पर मंथन किया और भविष्य की योजनाओं को निर्धारित करने के लिए मंच प्रदान किया। इस दौरान सदस्यों ने डॉ. तुलिका गुप्ता को फिर से अध्यक्ष चुना। डॉ. दीपक शर्मा को उपाध्यक्ष चुना गया। उल्लेखनीय है कि एलायंस फ्रांसेज राजस्थान फ्रेंच भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में प्रयासरत है।

मेवाड़ पॉलीटेक्स को पुनः बेस्ट एम्पलॉयर पुरस्कार

उदयपुर। द एम्पलॉयर एसोसिएशन ऑफ राजस्थान की ओर से जयपुर में आयोजित समारोह में उदयपुर के मेवाड़ पॉलीटेक्स लि. को लगातार तीसरी बार बेस्ट एम्पलॉयर ऑफ द ईयर - 2024 पुरस्कार दिया गया। समारोह में उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने प्रबंध निदेशक संदीप बापना एवं शिल्पा बापना को पुरस्कार दिया।

सेंट मैथ्यूज मिशन स्कूल में क्रिसमस मनाया

उदयपुर। सेंट मैथ्यूज मिशन स्कूल में क्रिसमस मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने प्रभु ईसा मसीह के जन्म की झलकियों को नाट्य मंचन के जरिए प्रस्तुत किया व कैरोल गायन कर भक्तिमय बना दिया। इस दौरान विद्यालय निर्देशिका ग्लोरी फिलिप ने सभी को प्रेम, त्याग और एकता का संदेश दिया और क्रिसमस की शुभकामनाएं दीं।

दाधीच को पीएचडी की उपाधि

उदयपुर। मेवाड़ बीएससी नर्सिंग कॉलेज के प्राचार्य सुनील कुमार दाधीच को साईं तिरुपति यूनिवर्सिटी उमरड़ा द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। दाधीच ने अपना शोध कार्य डॉ. एम.यू. मंसूरी के निर्देशन में पूर्ण किया।

भंवरलाल नागदा
(पूर्व सरपंच, खरका)
Mob. 9460830849
रमेश नागदा
(बीमा अभिकर्ता)
Mob. 9414158306

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

कैलाश नागदा
9799652244
ललित नागदा
9414685029
देवेन्द्र नागदा
9602578599
रवि नागदा
9929966942

रवि मेडिकल स्टोर, उदयपुर

महाराणा भूपाल चिकित्सालय (जनरल हॉस्पिटल)
के सामने, उदयपुर, फोन : 0294-2412464

सम्बन्धित फर्म : रवि मेडिकल स्टोर, सलूम्बर एवं लसाड़िया

दीपक नागदा
मो.: 9602578599

जय इलेक्ट्रीकल्स

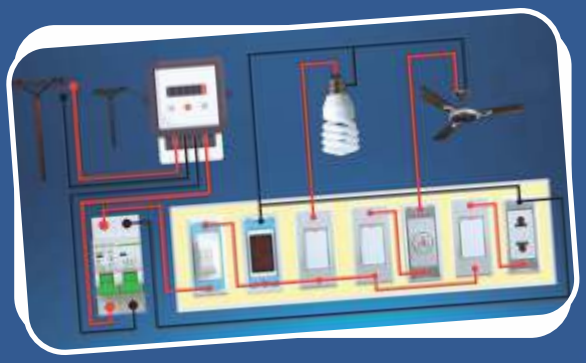

लाइट फिटींग एवं इलेक्ट्रीक
सामान के रिटेल
एवं होलसेल विक्रेता

स्वामी नगर, 100 फीट रोड, पानेरियों की मादड़ी, उदयपुर

जे.के सीमेंट स्वर्ण जयंती महोत्सव

जैसलमेर में उत्पादन शीघ्र : सिंघानिया

चित्तौड़गढ़ प्रत्यूष ब्यूरो

जे.के सिमेंट निम्बाहेड़ा संयंत्र के 50 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव के तहत विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें 6 दिवसीय अति लक्ष्मी नारायण यज्ञ भी शामिल है। कंपनी के प्रबंध निदेशक डॉ. राघवपत सिंघानिया एवं संयुक्त प्रबंध निदेशक माधव कृष्ण सिंघानिया ने मीडिया के साथ वार्ता में बताया कि जे.के ऑर्गेनाइजेशन पिछले सितंबर में अपने 140 वर्ष पूर्ण कर चुका है। निम्बाहेड़ा जे.के सिमेंट जहां अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है, वहीं गौटन का व्हाइट सिमेंट प्लांट भी अपने 40 वर्ष सफलता पूर्वक पूर्ण कर रहा है। उन्होंने भावुक होकर कहा यह प्रगति ठाकुर जी की कृपा एवं कर्मचारियों के कठिन परिश्रम का परिणाम है।

संयुक्त प्रबंध निदेशक माधवकृष्ण सिंघानिया ने कहा कि 1974 में 0.8 मिलियन टन सिमेंट निर्माण प्रति वर्ष की क्षमता के साथ जो शुरूआत हुई थी, वह आज 24 मिलियन टन प्रतिवर्ष तक पहुंच गई है। आने वाले वर्षों में राजस्थान के जैसलमेर में भी 3 मिलियन टन प्रतिवर्ष क्षमता के सिमेंट प्लान्ट का निर्माणकार्य पूरा हो जाएगा। वर्तमान में कंपनी के सिमेंट प्लान्ट निम्बाहेड़ा, मांगरोल, गौटन (व्हाइट सिमेंट एवं पुट्टी), पन्ना, कटनी व उज्जैन (मध्यप्रदेश) मुद्दापुर (कर्नाटक), अलीगढ़, हमीरपुर, व प्रयागराज (उत्तरप्रदेश), वाला सिनौर (गुजरात), झारली (हरियाणा) एवं फूजेराहा (संयुक्त अरब अमीरात) में कार्यरत हैं। बक्सर (बिहार) में ग्राइंडिंग युनिट का भूमिपूजन भी हो चुका है।

स्वर्ण जयंती महोत्सव का समापन 8 दिसंबर को अति लक्ष्मी नारायण यज्ञ की पुर्णाहुति के साथ हुआ। इस अवसर पर केंद्रीय कानून मंत्री अंर्जुनराम मेघवाल विधायक श्रीचंद कृपलानी, जे.के सिमेंट के वाइस चेयरमैन निधिपति सिंघानिया प्रबंध निदेशक राघवपत सिंघानिया, जे.के सिमेंट युनिट हेड मनीष तोषनीवाल, एच.आर. हेड प्रभाकर मिश्रा, कमर्शियल हेड अजय गर्ग सहित बड़ी संख्या में प्लांट के अधिकारी, कर्मचारी एवं प्रशासनिक अधिकरी मौजूद थे।

प्रत्यूष

सांस नली में सूजन की बीमारी है अस्थमा

अस्थमा (दमा) फेफड़ों में सूजन से जुड़ी बीमारी हैं। इसमें सांस लेने में परेशानी होती है। कई तरह की शारीरिक समस्याएं भी होने लगती हैं। अस्थमा के लक्षण तब दिखते हैं, जब वायुमार्ग की परत में सूजन आ जाती है और आसपास की मांसपेशियों में तनाव बढ़ जाता है। इसके बाद बलगम इन वायुमार्गों में भर जाता है, जिससे यहां से गुजरने वाली हवा की मात्रा कम हो जाती है। ठंड के मौसम में यह बीमारी ज्यादा हावी होती है। इन स्थितियों के चलते अस्थमा का अटैक आता है। सावधानी ही इसमें बचाव है।

डॉ. अनिता शर्मा

संभावित लक्षण

सांस लेने में घरघराहट, कर्कश या सीटी जैसी आवाजें, रात में या हंसते, व्यायाम करते समय खांसी आना, सीने में जकड़न, बेचैनी, थकान, छाती में दर्द, तेज-तेज सांस लेना किसी भी काम में मन न लगना, बार-बार इंफेक्शन, नींद न आना आदि।

कारण

अस्थमा के लक्षण बच्चों में भी दिखते हैं। इनमें से ज्यादातर का उम्र बढ़ने के साथ ठीक हो जाता है। जेनेटिक यानी आनुवांशिक, बचपन में किसी प्रकार का वायरल संक्रमण, किसी प्रकार की एलर्जी, बदलता हुआ मौसम, किसी जानवर का फर, पराग कण आदि।

अटैक के कारण

कुछ लोगों की एलर्जी भी अस्थमा अटैक का कारण बन सकती है। फफूंदी, पराग कण और पालतू जानवरों की रूसी जैसी चीजें शामिल हैं। अन्य कारणों में ज्यादा व्यायाम, तनाव, कोई बीमारी आदि।

इसके प्रकार

अस्थमा भी कई तरह के होते हैं जैसे कि बच्चों में होने वाला, वयस्कों को होने वाला, एलर्जी से या फिर रात्रि में होने वाला आदि।

पहचान कैसे हो

वैसे तो चिकित्सक बीमारी के लक्षण देखकर ही

पता कर लेते हैं लेकिन कुछ फेफड़ों की जांचें भी होती हैं। इनमें स्पायरोमेट्री, पीक फ्लो और फेफड़ों के कार्य का परीक्षण शामिल है। थाकोलिन चैलेंज, नाइट्रिक ऑक्साइड टेस्ट, इमेजिंग टेस्ट, एलर्जी टेस्ट, बलगम आदि की भी जांच डॉक्टर सलाह से कराते हैं।

इलाज

इसके इलाज में कई दवाइयां कारगर हैं। आमतौर पर इन्हेलर और एंटी इंफ्लामेटरी दवाएं ज्यादा प्रभावी हैं। इन दवाइयों से ब्रॉकॉडायलेटर्स यानी वायुमार्ग के चारों तरफ कसी हुई मांसपेशियों को आराम मिलता है। इसमें नेब्यूलाइजर का उपयोग भी फायदेमंद रहता है। अस्थमा में गंभीर अटैक आने पर डॉक्टर को दिखाकर ही दवाइयां लेनी चाहिए।

क्या खाएं

हरी पत्तेदार सब्जियां ज्यादा खांए। विटामिन ए, सी और ई और एंटीऑक्सीडेंट्स वाली चीजें ज्यादा मात्रा में लें। लहसुन, अदरक, हल्दी और काली मिर्च अनिवार्य रूप से लेना चाहिए। हमेशा फ्रेश फल-सब्जियां ही खाएं।

कारगर अलसी

अलसी में कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, केरोटिन, थायमिन, राइबोफ्लेविन और नियासिन पाए जाते हैं। यह गनोरिया, नेफ्राइटिस, अस्थमा, सिस्टाइटिस, कैंसर, हृदय रोग, मधुमेह, कब्ज, बवासीर, एक्जिमा के उपचार में उपयोगी है। अलसी को धीमी आँच पर हल्का भून लें। रोज सुबह-शाम एक-एक चम्मच पावडर पानी के साथ लें। इसे सब्जी या दाल में मिलाकर भी लिया जा सकता है। इसे अधिक मात्र में पीस कर नहीं रखना चाहिए, क्योंकि यह खराब होने लगती है। इसलिए थोड़ा-थोड़ा ही पीस कर रखें। अलसी सेवन के दौरान पानी खूब पीना चाहिए। इसमें फायबर अधिक होता है, जो पानी ज्यादा मांगता है। एक चम्मच अलसी पावडर को 360 मिलीलीटर पानी में तब तक धीमी आंच पर पकाएं जब तक कि यह पानी आधा न रह जाए। थोड़ा ठंडा होने पर शहद या शक्कर मिलाकर सेवन करें। सर्दी, खांसी, जुकाम में यह चाय दिन में दो-तीन बार सेवन की जा सकती है। अस्थमा में भी यह चाय बड़ी उपयोगी है। अस्थमा वालों के लिए एक और नुस्खा भी है। एक चम्मच अलसी पावडर आधा गिलास पानी में सुबह भिगो दें। शाम को इसे छानकर पी लें। शाम को भिगोकर सुबह सेवन करें। गिलास कांच या चांदी का होना चाहिए।

प्रत्यूष

हज़ारों वर्ष में बनते हैं पहाड़

ऋषिका नागदा

पहाड़ प्रकृति के अमूल्य रत्न हैं। वे न केवल अपनी भव्यता और सुंदरता से हमें मंत्रमुग्ध करते हैं, बल्कि हमारे ग्रह के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य भी करते हैं। पहाड़ जलवायु संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे नदियों और झरनों का स्त्रोत होते हैं, जो हमें पीने का पानी और सिंचाई के लिए जल प्रदान करते हैं। इसके अलावा पहाड़ी क्षेत्र जैव विविधता के हॉटस्पॉट होते हैं, जहां विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां और जीव-जंतु पाए जाते हैं।

पहाड़ों का महत्व

पर्वत को गिरी, अचल, शैल, धरणीधर, धराधर, नग, भूधर और महिधर भी कहा जाता है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत में एक से एक शानदार पहाड़ हैं, पहाड़ों की श्रृंखलाएं हैं और सुंदर एवं मनोरमा घटियां हैं।

पहाड़ बनने की प्रक्रिया

पहाड़ों का बनना एक लम्बी भूवैज्ञानिक प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया हमेशा पहाड़ों के अंदर होती रहती है। यह प्रक्रिया पृथ्वी के अंदर मौजूद क्रस्ट में तरह-तरह की हलचल होने के कारण होती है। पहाड़ टैक्टॉनिक या ज्वालामुखी से बनते हैं। ये सारी चीजें मिलकर पहाड़ को 10,000 फुट तक ऊपर उठा देती हैं। उसके बाद नदियां, ग्लेशियर और मौसम इसे घटाकर कम कर देते हैं।

भारत में पर्वतों के कारण ही अच्छे तौर पर पांच ऋतुएं होती है, जो किसी अन्य देश में शायद ही देखने को मिलें। ये ऋतुएं हैं वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर। यह मौसम प्रत्येक 2 माह के होते हैं लेकिन आरावली और विध्यांचल की पर्वत श्रृंखलाओं को निरन्तर करने के कारण भारत में अब मौसम परिवर्तन होने लगा है। इस परिवर्तन के कारण भारत की कृषि पर भी असर पड़ा है। विकास के नाम पर काट दी गई कई शहरों की छोटी-मोटी पहाड़ियों से भी जलवायु परिवर्तित हो रहा है।

भारत की प्रमुख पर्वत श्रेणियां

हिमालय, अरावली, सतपुड़ा, विध्यांचल, पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट, नीलगिरि पर्वत, अनामलाई पर्वत, काडिमोम पहाड़ियां, गारोखासी पहाड़ियां, नागा पहाड़ियां। संसार के अनेक पर्वतीय क्षेत्रों की ही भांति भारत के पर्वतों का पर्यावरण भी निरंतर बिगड़ रहा है क्योंकि पर्वतों के वनों को अंधाधुंध तरीके से काट दिया गया है। किसी समय हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं के अनेक क्षेत्रों में अनेक जंगल थे लेकिन इनमें से अनेक क्षेत्रों का जंगल कृषि भूमि के लिए अथवा व्यावसायिक निर्माण कार्य हेतु साफ हो चुका है। इसके चलते यहां के दुर्लभ वन्यजीव भी लुप्त हो चुके हैं। जंगल के काटने से हुई अनेक क्षतियों में वन्य जीवन पर संकट भी विशेष

महत्व रखता है। इससे सम्पूर्ण भारत का परिस्थितिकी तंत्र गड़बड़ा गया है।

पहाड़ों से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य

■ पर्वतीय क्षेत्रों में मौसम तेजी से बदलते हैं।
■ पर्वतारोहरण दुनिया भर में एक लोकप्रिय साहसिक खेल है।
■ माऊंट एवरेस्ट हर साल लगभग 4 मिलीमीटर की दर से बढ़ता (ऊंचा होता) है।
■ विश्व की कई महान नदियां पर्वतीय क्षेत्रों से ही निकलती हैं।
■ पहाड़ों में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव तेजी से देखा जा सकता है।
■ माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने में लगभग 2 महीने लगते हैं।
■ पर्वतीय क्षेत्रों में दिन और रात के तापमान में बहुत अंतर होता है।
■ ओलपस मोन्स, पूरे सौरमंडल में सबसे ऊंचा ज्ञात पर्वत है।
■ हमारे ग्रह का लगभग 80 प्रतिशत से अधिक ताजा पानी पहाड़ों से आता है।
■ समुद्र की सतह के नीचे भी विशाल पर्वत श्रृंखलाएं मौजूद हैं।

खास बातें

■ पहाड़ों का निर्माण मुख्य रूप से टैक्टोनिक प्लेटों के टकराव के कारण होता है।
■ पहाड़ पृथ्वी की सतह का लगभग 24 प्रतिशत भाग कवर करते हैं।
■ दुनिया का सबसे ऊंचा पहाड़ माऊंट एवरेस्ट है, जो हिमालय पर्वत श्रृंखला में स्थित है। यह लगभग 8,848,86 मीटर (29,03,1.7 फुट) ऊंचा है।
■ पहाड़ों पर हवा के दबाव को बैरोमीटर नामक उपकरण से मापा जाता है।
■ प्रतिवर्ष 11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया जाता है।
■ धरती की तुलना में पहाड़ों पर ऑक्सीजन कम होती है।
■ ऑस्ट्रेलिया में स्थित माऊंट वायेचेप्रूफ को दुनिया का सबसे छोटा पहाड़ माना जाता है। यह केवल 43 मीटर (141 फुट) ऊंचा है।
■ पहाड़ के सबसे ऊपरी सिरे को चोटी, पीक, शिखर या सम्मिट कहा जाता है।
■ हिमालय पर्वत श्रृंखला विश्व की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला है।
■ दक्षिण अमरीका में स्थित एण्डीज, विश्व की सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला है।

॥ जय झूलेलाल ॥

Ravi Gorwani
Director

Mob.: 9460828897
8875078128

Raj Readymade Centre

Dhanmandi, Teej Ka Chowk, Udaipur (Raj.) 313001

हर तीसरा बच्चा दृष्टि दोष से पीड़ित

नए अध्ययन के मुताबिक निकट दृष्टि दोष आमतौर पर बचपन में विकसित होता है और उम्र के साथ स्थिति और खराब होती जाती है। यदि कारणों का विश्लेषण करें तो कभी जहां बच्चे खुली हवा में खेला-कूदा करते थे, वे अपना ज्यादा समय बंद कमरों में मोबाइल लेपटाप व टीवी स्क्रीन के सामने बिता रहे हैं।

डॉ. संदीप गर्ग

बच्चों के खेल-कूद की बजाय मोबाइल व लैपटाप पर ज्यादा समय बिताने का असर उनकी आंखों पर पड़ रहा है। यानी उनकी आंखें कमजोर हो रही हैं और देखने की क्षमता लगातार कम हो रही हैं। एक नए अध्ययन में सामने आया है कि वर्तमान में दुनिया में करीब एक तिहाई बच्चे और किशोर निकट दृष्टि दोष से पीड़ित हैं। इसकी वजह से दूर की चीजें देखने में कठिनाई होती है। आशंका है कि अगले 26 वर्षों में इस समस्या से जूझ रहे बच्चों की संख्या बढ़कर 74 करोड़ तक पहुंच जाएगी। यह अध्ययन ब्रिटिश जर्नल आफ आप्थल्मोलाजी में प्रकाशित हुआ है।

निकट दृष्टि दोष आंखों से जुड़ी समस्या है। इससे पीड़ित व्यक्ति को दूर की चीजे धुंधली दिखाई देती हैं। इस विकार में आंखों के कार्निया का आकार बदल जाता है। नतीजन जब रोशनी आंखों में प्रवेश करती है, तो वह रेटिना पर केंद्रित होने के बजाए, रेटिना से थोड़ा आगे केंद्रित हो जाती है। इससे छवि स्पष्ट न होकर धुंधली दिखने लगती है। नए अध्ययन के मुताबिक, निकटदृष्टि दोष आमतौर पर बचपन में विकसित होता है और उम्र के साथ स्थिति और बिगड़ती जाती है। इसके कारणों पर नजर डालें तो कभी जहां बच्चे खुली हवा में खेला-कूदा करते थे, वे अब अपना ज्यादा समय बंद कमरों में मोबाइल, लैपटाप व टेलिविजन स्क्रीन के सामने बिता रहे हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक, कोविड-19

स्मार्ट फोन है कारण

भारत में 8-15 वर्ष के करीब 30 फीसदी बच्चे निकट दृष्टि होष से पीड़ित हैं। बच्चों में स्मार्टफोन एवं डिजिटल डिवाइस के अत्यधिक प्रयोग से एक मीटर की दूरी में जीवन सिमट रहा है। ज्यादा समय तक लगातार पास का काम करना जैसे पढ़ना डिजिटल डिवाइस का लंबे समय तक उपयोग करना, वीडियोगेम खेलना, या टीवी देखना आदि निकट दृष्टि दोष को बढ़ाते है। मायोपिया (निकट दृष्टि दोष) में दूर की चीजें धुंधली दिखाई देती है। इसमें पर्दे की खराबी, ग्लूकोमा एवं मोतियाबिंद जैसी समस्याएं होने के कारण दृष्टिबाधित होने का खतरा बढ़ जाता है। माता पिता में से किसी एक को यह रोग है तो बच्चों में इसके होने की आशंका बढ़ जाती है। मायोपिया से पीड़ित व्यक्ति को बिना चश्मा लगाए स्पष्ट दिखाई नहीं देता है। मायोपिया नामक दृष्टि दोष के उपचार के लिए चश्मे का माइनस नम्बर लगाना आवश्यक होता है। आंखों की जांच हर छह माह में करवाना जरूरी है।

-डॉ. सुरेश पाण्डेय, नेत्र रोग विशेषज्ञ

महामारी के दौरान हुए लाकडाउन ने स्थिति को और बद्तर बना दिया, क्योंकि इस दौरान बच्चो ने स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताया। इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने 276 अध्ययनों से जुड़े आंकड़ों को शामिल किया है। इनमें 50 देशों के 54 लाख से अधिक प्रतिभागियों को शामिल किया गया। अध्ययन में शामिल इन बच्चों और किशारों की आयु पांच से 19 वर्ष के बीच थी। इनमें से 19.7 लाख निकट दृष्टि दोष से पीड़ित पाए गए । शोधकर्ताओं के मुताबिक, यह विकार सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ी चिंता बनकर उभरा है। खासकर एशिया में यह समस्या कहीं ज्यादा गंभीर है। एशियाई देशों जैसे जापान, दक्षिण कोरिया में स्थित सबसे ज्यादा खराब है। जापान में जहां 85 फीसद बच्चे निकट दृष्टि दोष से पीड़ित हैं, वहीं दक्षिण कोरिया में यह आंकड़ा 73 फीसदी दर्ज किया गया है।

इसी तरह चीन और रूस में 40 फीसदी से ज्यादा बच्चे इस विकार से पीड़ित हैं। अध्ययन के मुताबिक, 1990 से 2023 के बीच बच्चों में निकटदृष्टि दोष के मामले तीन गुना बढ़े हैं। 1990 से 2000 के बीच पीड़ितों की संख्या 24 फीसद से बढ़कर 2011-19 में 30 फीसद और 2020-23 के बीच 36 फीसद तक पहुंच गई है। ऐसे में आज दुनिया का हर तीसरा बच्चा इस समस्या से जूझ रहा है। अध्ययन में अंदेशा जताया गया है कि 2050 तक यह समस्या दुनिया के 74 करोड़ बच्चों को शिकार बना सकती है।

इन पर ध्यान दें

1. बच्चों को स्मार्टफोन, कम्प्यूटर व टीवी की आदत न पड़े, इस बात का ध्यान रखें।
2. सप्ताह में एक दिन 15 मिनट से आधा घंटा सनलाइट में बिताएं।
3. वर्ष में दो बार बच्चों की आंखों एवं रेटिना की जांच करवाएं।
4. बच्चे अपनी आंखों को बार-बार न मसलें। क्योकि लंबे समय तक आंखें लगातार मसलने से केरेटोकोनस रोग हो सकता है।
5. डिजिटल विजन सिंड्रोम से बचने के लिए 20-20-20 नियम के अनुसार हर 20 मिनट के बाद 20 सेकंड के लिए 20 फीट की दूरी पर देखें।
6. परिवार में बच्चों के लिए स्क्रीन के उपयोग का समय, सामग्री और नियमों का निर्धारण करें।
7. बड़े स्वयं का उदाहरण पेश करें।
8. घर में कुछ समय तय करें जब डिजिटल गैजेट्स के उपयोग की मनाही हो, जैसे खाने का समय अपास में बात करें।
9. बच्चों को खेलकूद, किताब पढ़ने, संगीत आदि के लिए प्रेरित करें। बच्चों को साइबर सुरक्षा की जानकारी दें।

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

डॉ. विनय भाणावत

TLM

The Lavit Malhar

धीरज भाणावत

द लवित मल्हार इन

9, आशा विहार, टाइगर हिल, उदयपुर

मो. 92144 63390, 93523 68375

मलायका अपनी शर्तों पर जीती है जिंदगी

राजवीर

मलायका अरोड़ा जितना अपने ग्लैमरस रंग–रूप और दिलकश फिगर को लेकर सुर्खियां बटोरती हैं, उतना ही अपनी पर्सनल और प्रोफैशनल लाइफ को लेकर चर्चा में रहती हैं। पिछले साल अक्टूबर में उनके पिता अनिल मेहता का एक इमारत से गिरने पर निधन हो गया था, जिसके बाद वह सोशल मीडिया से दूर हो गई थीं। हालांकि, अब मलायका दोबारा अपनी सोशल लाइफ में लौट आई हैं। हाल ही में उसने मीडिया को एक इंटरव्यू के दौरान अपनी लाइफ, अधूरी ख्वाहिश और अपने फैसलों पर खुलकर बात करते हुए बताया कि उसने अपनी जिंदगी को हमेशा अपनी शर्तों पर जिया है और अपने अतीत पर उन्हें बिल्कुल भी पछतावा नहीं है।

उन्होंने यह भी कहा कि वह जिस तरह अपनी जिंदगी में आगे की ओर बढ़ रही है, वह उसके लिए आभारी है। वह गलतियां करना और उनसे सीखना हमेशा जारी रखेंगी। उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है कि मैंने जिंदगी में जो चुनाव किए, चाहे वे पर्सनल हों या फिर प्रोफैशनल सिलैक्शन, उन फैसलों ने मेरी जिंदगी को किसी न किसी तरह से आकार दिया है। मैं बिना किसी पछतावे के जी रही हूं और खुद को इस मामले में खुशकिस्तम मानती हूं कि चीजें जैसे सामने आई हैं, वैसी हुई भी हैं।'

अधूरी ख्वाहिश

इन्टरव्यू के दौरान मलायका ने अपनी एक अधूरी इच्छा भी जाहिर की। उन्होंने बताया कि वह किसी फिल्म में पूर्ण किरदार निभाना चाहती हैं। 'मैं पिछले करीब तीन दशक से फिल्म इंडस्ट्री में सक्रिय हूं। मैंने फिल्मों में कुछ विशेष भूमिकाएं निभाई हैं और कई फेमस आइटम सॉन्ग भी किए हैं, लेकिन मेरे पास कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है।'

उन्होंने आगे कहा, 'मैंने फिल्मों में गैस्ट अपीयरैंस तक की है और कुछ क्षणिक भूमिकाएं भी निभाई हैं। हालांकि मुझे एक अच्छी तरह से विकसित और महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अनुभव अच्छा लगेगा।'

रेस्तरां बिजनैस पर फोकस

उन्होंने यह भी बाया कि फिलहाल वह स्वस्थ भोजन परोसने में विशेषज्ञता रखने वाले अपने रेस्तरां की फ्रैंचाइजी को फैलाने की दिशा में काम कर रही हैं। इस बात का खुलासा करते हुए वे बोलीं, 'मैं अपने कैफे और रेस्तरां की फ्रैंचाइजी खोलने की दिशा में काम कर रही हूं। इसके जरिए हैल्दी और टेस्टी फूड पर ध्यान दिया जाएगा। जैसा खाना हम घर में पकाते हैं, मैं इसे दूसरों के साथ भी शेयर करना चाहती हूं।'

वह अपने रिश्तों या पेशेवर जीवन के बारे में सोशल मीडिया पर होने वाली आलोचना से कैसे निपटती हैं, पर उन्होंने कहा, 'जितना अच्छे तरीके से हो सकता है, मैं उनसे निपटती हूं। कई बार ऐसा होता है जब आपको लगता है कि चीजें आपको परेशान या प्रभावित नहीं करती हैं, लेकिन निश्चित रूप से वे परेशान करती हैं।'

'मैंने इससे निपटने का एक तरीका निकाल लिया है, इसके बारे में मजबूत हो गई हूं और खुद को निराश होने नहीं देती। मैंने खुद को इन सबसे अलग रखना सीख लिया है। यह जीवन का अभिन्न अंग है, जीवन में जो भी सकारात्मक है, उसके साथ आगे बढ़ने की जरूरत है।' यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मलायका थोड़े अन्तराल के बाद टीवी पर चलने वाले रियलटी शोज़ में बतौर जज फिर से दिखाई देने लगी हैं।

अर्जुन से ब्रेकअप

अरबाज खान से तलाक के बाद मलायका को अर्जुन कपूर का साथ मिला था। लेकिन उस रिश्ते पर भी विराम लग चुका है। अर्जुन कपूर और उसके एक सूत्र ने ब्रेकअप की पुष्टि करते हुए कहा था, कि दोनों का रिश्ता अपना–अपना रास्ता तय कर चुका है। उसके अनुसार, 'मलायका और अर्जुन का रिश्ता बहुत खास था और दोनों एक–दूसरे के दिलों में हमेशा खास जगह बनाए रखेंगे। उन्होंने अलग होने का फैसला लिया है और इस मामले में एक सम्मानजनक चुप्पी बनाए रखेंगे। वे किसी को भी अपने रिश्ते को घसीटने और उसका विश्लेषण करने की अनुमति नहीं देंगे।'

हार्दिक श्रद्धांजलि

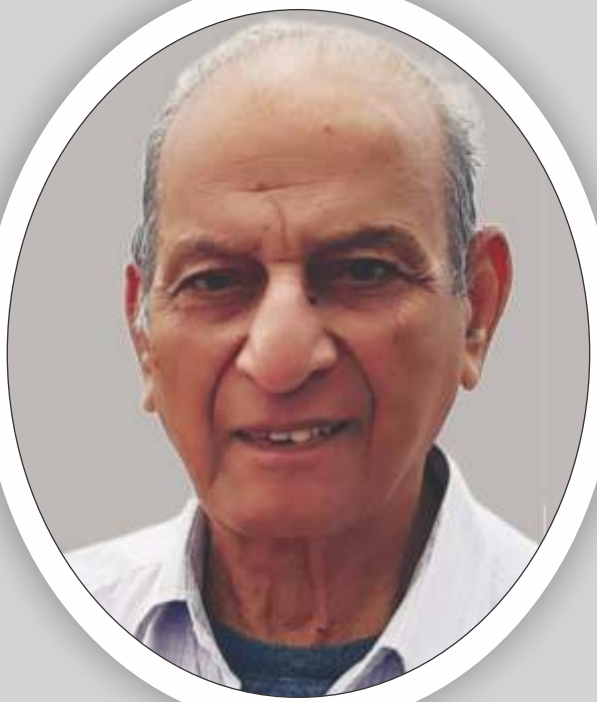

परम आदरणीय

श्री ओमप्रकाश जी उपाध्याय

के 8.12.2024 को देवलोकगमन पर
अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

व्यथित हृदय

श्रीमती विमला (धर्मपत्नी), **देवेन्द्रकुमार– सुनीता, राजेन्द्र प्रकाश–कृष्णा** (भाई–भाभी), **विपिन बिहारी** (भाई), **मिथिलेश–स्व. कुलदीपक शर्मा** (बहन–बहनोई), **मनीष उपाध्याय–अमिता** (पुत्र–पुत्रवधु), **रेणु (प्रबंध संपादक)–पंकज शर्मा (प्रकाशक)**, **शिखा–संजय शर्मा** (पुत्री–दामाद), **उत्कर्ष–हिमिका** (पौत्र–पौत्री), **अभिजय, प्रिशा, सौम्या, सोनाक्षी** (दोहिता–दोहिती) एवं **समस्त उपाध्याय परिवार**

40, न्यू केशवनगर, उदयपुर (राज.) मो: 9414168109, 9079876615

सादर नमन... प्रत्यूष परिवार

स्वप्निल कुसाले : कहानी संघर्ष की

उधारी लेकर खरीदी थी गोलियां

पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत के निशानेबाज स्वप्निल कुसाले (28) ने शूटिंग की 50 मीटर एअर राइफल प्रतिस्पर्धा में कांस्य पदक जीता। हालांकि उनकी इस जीत में संघर्ष की कहानी भी है। एक समय था जब अभ्यास के लिए इनके पास गोलियां खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे भी नहीं थे, पिता सुरेश कुसाले ने कर्ज लेकर बेटे को खेलने के लिए प्रोत्साहित किया। इस समय एक बुलेट की कीमत 120 रूपए थी। इसलिए इन्होंने निशानेबाजी का अभ्यास करते समय हर गोली का सावधानी से इस्तेमाल किया। जब गेम खेलना शुरू किया, तो पूरा सामान भी नहीं था।

कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के रहने वाले स्वप्निल ने निशानेबाजी प्रशिक्षण नासिक के स्पोर्ट्स एकेडमी से लिया । वे पुणे में रेलवे की नौकरी कर रहे हैं। शूटिंग की दुनिया में उनका नाम नया नहीं है। पिछले 10-12 सालों में, स्वप्निल राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में कामयाबी हासिल करते रहे हैं। लेकिन पिछले

साल उन्होंने पहली बार ओलंपिक में प्रवेश किया और सीधे फाइनल राउंड तक पहुंचने में कामयाब रहे। बचपन में ही बेटे की खेल में रुचि को देखते हुए पिता ने नासिक के स्पोर्ट्स सेंटर में दाखिला दिलाया। वहां स्वप्निल ने शूटिंग को चुना और उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। स्वप्निल 2009 यानी 14 साल की उम्र से ही निशानेबाजी का अभ्यास कर रहे हैं। वह 2015 में मध्य रेलवे के पुणे डिवीजन में टीटीई के रूप में नियुक्त हुए। उन्होंने बालेवाड़ी में छत्रपति शिवाजी महाराज स्पोर्टस एकेडमी में प्रशिक्षण लिया। जहां विश्वजीत शिंदे और दीपाली देशपांडे ने उन्हें निशानेबाजी के गुर सिखाए। कोच विश्वजीत शिंदे बताते हैं कि स्वप्निल बहुत शांत प्रकृति के हैं। कभी फिजूल बातों पर ध्यान नहीं देते। उनके अनुसार शूटिंग में राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने के बाद भी स्वप्निल का सफर आसान नहीं रहा। उन्हें शारीरिक तकलीफों का सामना करना पड़ा है। रह रहकर शारीरिक दर्द, बुखार और कमजोरी ने उन्हें बहुत परेशान किया। कभी-कभी टान्सिल से होने वाले दर्द की असहनीय पीड़ा भी झेलनी पड़ती थी। ऐसा क्यों हो रहा है, इसका पता नहीं चल रहा था, लिहाजा उन्हें दर्द के साथ अभ्यास करना होता था। अंत में, दिसंबर 2023 में इस समस्या की वजह का पता डाक्टरों ने लगा लिया। स्वप्निल को दूध से एलर्जी पाई गई जिससे स्वप्निल को दूध और डेयरी उत्पादों का सेवन बंद करना पड़ा। इसके बाद उनकी सेहत में भी सुधार हुआ और वे अभ्यास में लगातार आगे बढ़ते गए।

-अल्फेज खान

प्रत्यूष
समाज में समरसता और भातृत्व भाव की पोषक पत्रिका
प्रत्यूष *(बहुरंगी हिन्दी मासिक)*
के आज ही सदस्य बनें। मात्र 600 रुपए वार्षिक।
पता: 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

मां का दर्द

माँ मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। वाह! मैदान भी हरा-भरा है। चीनू उछलते हुए अपनी माँ से कहने लगा; हम रोज आ कर खेलेंगे न..... ! हाँ बेटा चीनू; माँ ने हँसते हुए हामी भरी। खुले मैदान में चीनू जैसे और भी छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे यह देख चीनू और भी खुश हो गया। चीनू की दोस्ती उन नन्हें-नन्हें बच्चों से हो गई। प्रतिदिन आते और मजे करते। इसी बहाने सबसे मिलना-जुलना भी हो जाता था। नील गगन के नजारे, ठंडी-ठंडी हवाएं, स्वच्छ वातावरण हृदय को छू लेने वाला मंजर होता था।

वहीं; सामने के बालकनी से नन्हीं प्रीत (बच्ची) भी इन्हें खेलते देखती और आनंद लेती; साथ ही साथ सोचती मैं भी इनके साथ खेलने जाती लेकिन..... वह पोलियों से ग्रस्त अपने पांवों की ओर देखती और कुछ पल उदास होकर फिर मुस्कुरा उठती।

आज शाम चीनू खेलते-खेलते थोड़ी दूर मैदान के दूसरे छोर पर चला गया। माँ अपनी सहेलियों से बात करने में व्यस्त क्या हो गई.....जैसे ही चीनू की माँ की नज़र हटी वैसे ही दुर्घटना घटी। एक विशाल दरिंदा बाज आया और चीनू को उठा ले जा रहा था। चीनू जोर-जोर से चिल्लाने लगा। माँ....माँ मुझे बचाओ....बचाओ.....। सभी की नज़र चीनू की तरफ पड़ी। सभी दौड़ने लगे। प्लीज़ माँ मुझे बचा लो..... ! दर्द भरी आवाज से चीनू कराहने लगा। चीनू की माँ सुध-बुध खोने लगी। पैरों तले जमीन खिसक गई। साँसें तेजी से ऊपर-नीचे होने लगी। आँखों से आँसू थम नहीं रहे थे। माँ भी चिल्लाने लगी; मेरे बेटे को कोई बचा लो.....। हे! विधाता ये क्या हो गया..... ? मेरा चीनू मुझे लौटा दो। बाकी बच्चे अपने-अपने माता-पिता से सहम कर लिपट गए। थोड़ी देर बाद..... सभी चीनू की माँ को सांत्वना देने लगे। चुप हो जा री..... चीनू की माँ, चुप हो जा...। होनी को कौन टाल सकता है। हमारा जीवन कब तक है ऊपर वाले के अलावा कोई नहीं जान सकता। वो दरिंदा बाज न जाने कब से चीनू पर नज़र डाल रहा था। चीनू की माँ सुबकने लगी। बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन आँखों से ओझल होते देर न लगी। चीनू की आवाज सुन प्रीत झट से बालकनी में आ खड़ी हुई, जब तक काफी देर हो चुकी थी। चीनू बहुत दूर जा चुका था। एक माँ अपने बच्चे के दूर जाने से कैसे तड़प रही, प्रीत टकटकी लगाए देख रही थी; और मन ही मन स्वयं को कोसने लगी काश.... !! मैं चीनू को बचा पाती। इंसान हो या पशु-पक्षी; माँ तो माँ होती है न.... ! माँ का दर्द माँ ही जाने; आज मैं वहाँ पर जाती तो चीनू जो कि एक मुर्गी का बच्चा था शायद वह बच जाता।

प्रिया देवांगन 'प्रियू'

पाठक पीठ

भारतीय सिने जगत के अविस्मरणीय पार्श्वगायक मोहम्मद रफी साहब की जन्मशती पर 'प्रत्यूष' के दिसम्बर अंक में गौरव शर्मा का आलेख प्रासंगिक और उनके श्रद्धांजलि स्वरूप काफी अच्छा बन पड़ा। उनके निधन के 45 वर्ष बाद भी जब उनके सुरीले गीत सुनते हैं तो लगता है कि वे आज भी मुम्बई के किसी स्टूडियो में खड़े गा रहे होंगे। उनकी स्मृति में उनके जन्म स्थान कोटला सुल्तान सिंह (पंजाब) में बनी 100 फीट ऊंची मीनार उनकी ख्याति पताका को युगों तक फहराती रहेगी।

एस.के. खेतान, *सीएमडी,*
एसके खेतान ग्रुप

'प्रत्यूष' के दिसम्बर अंक का 'क्रिसमस' आवरण काफी आकर्षक था। उतना ही सारगर्मित था क्रिसमस पर आर-सी शर्मा का आलेख। इसके साथ ही शीतल श्रीमाली की कविता 'बड़ी प्यारी होती हैं बेटियां' भी अच्छी लगी। 'प्रत्यूष' परिवार को नववर्ष की शुभकामनाएं।

अरुण मांडोत, डायरेक्टर
माउंड लिट्रा स्कूल

श्वसन संबंधी रोगों के बढ़ने पर चिंता व्यक्त करते हुए उनसे बचाव संबंधी उपाय बताता शमीम खान का आलेख अत्यन्त उपयोगी था। निश्चय ही आपकी पत्रिका अब हर परिवार की अपनी पत्रिका है। इसमें बच्चों से लेकर वृद्धजन तक के लिए पठनीय और उपयोगी जानकारी समाहित होगी है।

राजेश शुक्ला, *पीआरओ*
पारस हॉस्पिटल

बदलते दौर में आर्थिक अपराध के साथ साइबर ठगी का जाल भी देश भर में फैलता जा रहा है। पिछले दिनों एक प्रान्तीय अखाबर ने तो इससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा में बताते हुए बंग्लादेशी अपराधियों के गठजोड़ को उजागर किया था। 'प्रत्यूष' के दिसम्बर अंक में इसी संबंध में अमित शर्मा का आलेख काफी गंभीर था। उनका यह कहना सही है कि इस साइबर ठगी को रोकने के लिए कानून सख्त बनें और धरपकड़ तेज की जाए।

मनोज कटारिया, *डायरेक्टर,*
कजली आर्ट एण्ड क्राफ्ट

क्यों डरना, किससे डरना?

क्यों लड़की यह सोचे
कि वह लड़का होती
तो बच जाती
क्यों ना सब यह सोचें
कि कैसे वह लड़की हो
कर भी बच पाती
जब शक्ति का नाम नारी है
तो कैसी लाचारी है
क्यों कृष्ण बचाने आएँ तुझको
क्यों राम छुड़ाने आएँ तुझको
जब तू पड़ सकती सब पर भारी है
चल अब कर ले खुद को तैयार
उठा ही ले अब तू हथियार
ज़रूरत पड़ने पर उठा
बन्दूक और तलवार
सुन तू
बहुत हुई अदाएं कातिल
होना नहीं इससे कुछ हासिल
शरम लाज का गहना
बेशक तू पहनना
पर तब तक जब तक
कोई ना हो तुझ पर वार
तुझे तो अब करना है
पैनी नज़रों से प्रहार
ऐसी ज्वाला धधका अन्दर अपने की
कोई छूना तो दूर
नज़र भी डाले तो सोचे सौ बार
क्यों डरना, किससे डरना है
खुद को बस मज़बूत करना है
रण भी तेरा युद्ध भी तेरा
तो योद्धा भी तुझको ही बनना है
तू घर चलाए देश चलाए
खेल में भी गोड़ झंडे
तो फिर अपनी ही रक्षा के ख़ातिर
क्यों तू किसी से आस लगाए
यहाँ सब मतलब की यारी है
तेरी रक्षा अब तेरी ज़िम्मेदारी है

-भावना शर्मा

प्रत्यूष

ताकत बढ़ाते-रोगों से बचाते सर्दी में खाएं सेहतमंद लड्डू

सर्दी अपने चरम पर है। यह समय ऐसी खुराक लेने का है, जिसकी तासीर गर्म हो और जो जोड़ों की मौसमी समस्याओं से राहत दे। इस बार यहां ऐसे पांच प्रकार के लड्डू बनाने की जानकारी दे रही हैं *रेणु शर्मा* जो गर्माहट के साथ मौसमी समस्याओं से भी बचाव करते हैं।

बादाम पाक

सामग्री: बादाम – 1 किग्रा, दूध चार लीटर, मिश्री–दो किग्रा और घी एक किग्रा। जड़ी बूटियों में जावित्री, जायफल, काली मिर्च, पीपल, लौंग, दालचीनी, तेज पत्ता, इलायची, बिंदारीकंद, सौंठ ये सभी 5–5 ग्राम, केसर एक ग्राम। इन सभी जड़ी बूटियों को पीसकर चूर्ण बना लें।
विधि: बादाम रात में भिगोकर सुबह छिलके उतार लें। इन्हें अच्छी तरह से पीसकर चार लीटर दूध में डालकर मावा बना लें। इसमें मिश्री और घी मिलाकर उन्हें हल्का भून लें। अब इसमें सभी जड़ी–बूटियों का चूर्ण मिला दें।
कैसे खाएं: इनके दस–दस ग्राम के लड्डू बना लें। रोजाना सुबह एक लड्डू खाएं।
गुण: ये मस्तिष्क व हृदय के लिए लाभकारी हैं। स्मृति तेज होती है। दिमागी रोगों में राहत।

मेथी पाक

सामग्री: मेथी 20 ग्राम, सौंठ 20 ग्राम, घी ढाई किग्रा, दूध चार लीटर और देशी शक्कर दो किग्रा। जड़ी बूटियां, काली मिर्च, पीपलामूल अजवायन, सफेद जीरा, काला जीरा, सौंफ, कचूर, दालचीनी, तेज पत्ता, धनिया सभी को पांच–पांच ग्राम लेकर पीस लें।
विधि: मेथी–सौंठ को कूट–पीसकर कपड़े से छान लें। उसमें चार लीटर दूध मिलाकर धीमी आंच पर पकाएं। जब दूध गाढ़ा हो जाए तो उसमें ढाई किग्रा शक्कर मिला दें। अब इसमें सभी जड़ी–बूटियां डाल दें।
कैसे खाएं: दस–दस ग्राम के लड्डू बनाएं। रोजाना एक लड्डू खाली पेट अच्छी तरह चबाकर खाएं।
गुण: कमजोरी, आमवात में कारगर, गठिया, घुटनों के दर्द और वात रोगों से राहत देता है।

सालम पाक

सामग्री: सालम पंजा 400 ग्राम, बादाम 200 ग्राम, पिस्ता 200 ग्राम, चिरोंजी 100 ग्राम, अखरोट दस ग्राम, सफेद मूसली 10 ग्राम, गोखरू 40 ग्राम, मिश्री आवश्यकतानुसार। अश्वगंधा, तालमखाना, शतावर, कोच बीज, केसर, जायफल, जावित्री, शीतलमिर्च, बंशलोचन व दालचीनी दस–दस ग्राम मिलाकर चूर्ण बना लें।

विधि: सालम पंजों को कूट–पीसकर चूर्ण कर लें। उसमें घी मिलाकर उसे भूनें। मिश्री की चाशनी बनाकर उसमें डाल दें और सभी पिसी हुई सामग्री भी मिला दें।
कैसे खाएं: इसे रोजाना सुबह व शाम मीठे दूध के साथ एक–एक चम्मच खाएं।
गुण: यह शक्तिवर्धक हैं और आलस्य दूर करता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। युवा और बुजुर्गों के लिए उपयोगी है।

सुपारी पाक

सामग्री: सुपारी 100 ग्राम, कमरकस 100 ग्राम, मिश्री पीसी हुई 400 ग्राम, घी 50 ग्राम, शहद 200 ग्राम।
विधि: सभी को पीसकर छान लें। फिर सब को घी में डालकर भून लें और ठँडा करके उसमें थोड़ा–थोड़ा शहद डालकर हिलाते रहें। गाढ़ा अवलेह बनने पर उसे खूब हिलाकर चौड़ा मुंह वाले बर्तन में भर लें।
कैसे खाएं: सर्दियों में एक–एक चम्मच रोजाना सुबह व शाम दूध के साथ लें।
गुण: महिला रोगों में उपयोगी है। शरीर को सुडौल बनाता है। गर्भाशय को ताकत देता है। चेहरे पर चमक लाता है।

उड़द पाक

सामग्री: उड़द मोगर आटा 500 ग्राम, मूंग दाल आटा 500 ग्राम, गेहूं का आटा 500 ग्राम, घी ढाई किग्रा, सफेद देशी शक्कर 3 किग्रा। सफेद मूसली, ताल मखाना, अश्वगंधा, शतावर, कोंच बीज, बिधारा सभी 20–20 ग्राम, इलायची 5 व बादाम 200 ग्राम।
विधि: सभी को आटे घी में भून लें। इसमें सभी जड़ी बूटियों को पीसकर मिला दें व शक्कर डालकर बनाएं, सेहतमंद व स्वादिष्ट लड्डू।
कैसे खाएं: एक लड्डू सुबह खाली पेट खाएं। एक घंटे बाद दूध पी सकते हैं।
गुण: शरीर में शक्ति संचार, खून की कमी पूर्ति।

हार्दिक श्रद्धांजलि

हमारे पूजनीय

श्री उग्रसिंह जी गोरवाड़ा, एडवोकेट

(पुत्र स्व. श्री चतरसिंह जी गोरवाड़ा)

निधन: 9 जनवरी 2024

आपके आदर्श और मार्गदर्शन ही हमारे प्रेरणा स्रोत हैं,
आपका आशीर्वाद एवं पुण्य स्मरण हमारी शक्ति है,
आपके दिव्य चरणों में शत्-शत् नमन्।

श्रद्धानवत

राजीव–साधना, संजीव–रक्षा (पुत्र–पुत्रवधु),
मंजू–महेश राठौड़ (पुत्री–दामाद) एवं समस्त गोरवाड़ा परिवार

प्रतिष्ठान : गोरवाड़ा केमिकल इण्डस्ट्रीज, उदयपुर

प्रत्यूष

ऐसा रहेगा नया साल

पं. शोभालाल शर्मा

मेष :– चू – चे – चो – ला, ली–लू–ले–लो,

ग्रहफल :– वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। परंतु अपव्यय से आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ सकते है। ता. 29 मार्च से शनि की साढेसाती प्रारंभ होगी। कार्य व्यवसाय में गतिरोध के साथ सफलता प्राप्त होगी। अविवाहितों के विवाह हेतु किये गए प्रयासों में अवरोध आ सकते हैं। दाम्पत्य जीवन में सुख–शांति, मधुरता रहेगी। परंतु सप्तमेश शुक्र, शत्रु गुरू की राशि मीन में, व्यय भाव में सूर्य–बुध–राहु के साथ युति होने से जीवन साथी के स्वास्थ्य में गिरावट से चिन्ता रहेगी। व्यवसाय में धन की विशेष प्राप्ति होगी परंतु अपव्यय का पलड़ा भारी रहेगा। आमोद प्रमोद आदि अपव्यय से आर्थिक हालात अस्थिर रह सकते हैं। व्यापार विस्तार योजना से पूर्व मंथन अवश्य करें। इससे भविष्य में आर्थिक समृद्धता शुभप्रद हो सकती है। शिक्षा–परीक्षा, प्रतियोगिता आदि में विशेष प्रयासों द्वारा भी अल्प सफलता के योग हैं। राजनैतिक क्षेत्र में विशेष प्रयासों से लोकप्रियता एवं जनसम्पर्क में वृद्धि होगी। अचानक उच्चपद प्राप्ति भी संभव है। वाणी में संयम एवं कोई भी निर्णय सोच समझ कर लेवें। खिलाड़ियों, संगीतकार, वादकों व फिल्म क्षेत्र से जुड़े कलाकारों हेतु यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपसी विवाद से दूर रहें। अनर्गल वाद–विवाद में ना पड़ें। आपकी राशि में सूर्य, बुध, शुक्र, राहु शुभाशुभ कारक स्थिति में चलेगें। जिससे इस वर्ष कुछ खट्टे–मीठे अनुभव होंगे। अतः सावधानी रखें। मासिक कार्य व्यापार में शिथिलता से परिवार के निर्वहन में कुछ कठिनाईमहसूस होगीं। व्यापारी वर्ग के लिए यह वर्ष कुछ कठिनाई युक्त रहेगा। गुरू भाग्य एवं व्यय भाव के स्वामी होकर धन भाव में विचरण करने से आर्थिक उन्नति में बाधाएं महसूस होंगी।

वृषभ :– ई – उ – ए, ओ – वा – वी – वू – वे – वो

ग्रहफल :– इस वर्ष आपकी राशि में लग्नेश शुक्र लग्न व षष्ठ भाव के स्वामी होकर लाभ भाव में गुरू की राशि मीन में सूर्य, बुध, राहु के साथ प्रतियुति कर रहे हैं। गुरू अष्टम भाव एवं लाभ भाव के स्वामी होकर शुक्र की राशि वृष में गजकेसरी योग बना रहे हैं। जिससे यह वर्ष सामान्य तथा शुभ प्रभावी रहेगा। मधुर वाणी–व्यवहार कुशलता से सम्मान में वृद्धि होगी तथा अपेक्षित कार्यों की सिद्धि होगी। अपने क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ेगा। मंगल इस वर्ष आपकी राशि में सप्तम भाव एवं व्यय भाव के स्वामी होकर धन भाव में बुध की राशि मिथुन में विचरण करने से अचानक उदर विकार, रक्तचाप, मधुमेह, हृदय दुर्बलता जनित रोग हो सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने से व्यय विशेष हो सकता है। अविवाहितों को विवाह के अनुकूल अवसर प्राप्त होंगे। वैवाहिक जीवन में कुछ कठिनाई एवं चिंता की स्थिति मंगल के कारण हो सकती है। अतः वाहन सावधानी से चलावें। दैनिक दिनचर्या नियमित रखें। संतान प्राप्ति योग बनते हैं। परंतु संतान भाव में कन्या राशि के केतु होने से संतान के अकार्यों से मान प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ सकता है। राज्य कर्मचारी एवं राजनेता अधिकारों के गलत उपयोग से बचें। विद्यार्थी एवं प्रतियोगी विशेष परिश्रम से ही सफलता प्राप्त कर सकेंगें। राजनीतिज्ञों एवं कलाकारों को विशेष सफलताएं प्राप्त हो सकती है। शनि भाग्य भाव एवं पराक्रम भाव के स्वामी होकर अपनी राशि कुंभ में विचरण करने से कोई महत्वपूर्ण पद अधिकार या अचल–संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक लेन देन में सावधानी बरतें। भूमि–भवन–वाहन आदि क्रय के योग भी हैं। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अचानक दूर दराज की यात्रा योग भी हैं।

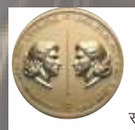

मिथुन :– का – की, कु – घ – ङ – छ, के – को – ह

ग्रहफल :– इस वर्ष आपकी राशि में लग्नेश बुध लग्न और सुख भाव के स्वामी होकर दशम भाव में गुरू की राशि मीन में बुध, सूर्य, शुक्र, राहु के साथ शुभ प्रतियुति करेंगे। गुरू सप्तम भाव और दशम भाव से स्वामी होकर इस वर्ष लग्न कुण्डली में व्यय भाव में शत्रु शुक्र की राशि वृष में विचरण करेंगें। जो शुभाशुभ फलदायी है। इस वर्ष आमदनी–खर्च में संतुलन रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। व्यय भाव में गुरू के कारण स्वास्थ्य नरम रहने से कुछ कष्ट रहेगा। कार्य व्यवसाय में भी यह वर्ष महत्वपूर्ण बदलाव लेकर आयेगा। राजकीय मामलों में स्थिति पक्ष में बनेगी। नौकरी में आशानुरूप धन की प्राप्ति तो होगी परंतु बेवजह खर्च से आर्थिक अस्थिरता भी रह सकती है। इस वर्ष परिवार के लोगों से सुख–सहयोग का अभाव रहेगा। शुक्र पंचम भाव एवं व्यय भाव के स्वामी होकर मीन राशि में चतुर्थ ग्राही योग बनने से शिक्षा परीक्षा, प्रतियोगिता में आशा अनुरूप सफलता प्राप्त हो सकती है। विवाह संबंधी प्रयासों में आपको सफलता मिल सकती है। ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति भी हो सकती है। यदा कदा स्वास्थ्य प्रतिकूल होने से व्यय अधिक हो सकता है। इस वर्ष भूमि, भवन, वाहन आदि क्रय करने के योग हैं। माता–पिता एवं पत्नी का सहयोग रहेगा। बेरोजगारों के लिए रोजगार के सुअवसर हैं। दूर दराज की यात्रा लाभदायक रहेगी। व्यापार का विस्तार हो सकता है। मन की चंचलता एवं क्रोध पर नियंत्रण रखें। कार्य व्यवसाय से संबंधित देश–विदेश की लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। गुरू अमंगल स्थिति में चलने से आर्थिक लेन देन में विश्वासघात एवं अनिदा से नस–नाड़ी, उदर संबंधित परेशानियां उत्पन्न हो सकती है।

कर्क :– ही, हू – हे – हो – डा, डी – डू – डे – डो

ग्रहफल :– इस वर्ष आपकी राशि के स्वामी चन्द्रमा लग्न में स्वग्रही हैं। जो शुभफल कारक हैं। सूर्य धन भाव के स्वामी होकर भाग्य भाव में गुरू की राशि मीन में बुध, शुक्र, राहु के साथ विराजमान हैं। जो शुभ फलप्रद है। गुरू षष्ठ भाव एवं भाग्य के स्वामी होकर भाव में शुक्र शत्रु की राशि वृष में विचरण कर रहे हैं, जो शुभ फलप्रद हैं। वहीं मंगल पंचमी एवं दशम भाव के स्वामी होकर बुध की राशि मिथुन में व्यय भाव में अमंगलकारक स्थिति में चलेंगे। इस वर्ष कार्य व्यवसाय में आशानुरूप धन प्राप्ति होगी। व्यापार विस्तार की योजना भी फलीभूत हो सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष थोड़ा उतार–चढ़ाव भरा है। इससे यदा कदा चोट चपेट, लीवर, वात–उदर, नस–नाड़ी आदि से संबंधित रोग हो सकता है। शनि सप्तम एवं अष्टम भाव के स्वामी होकर अपनी राशि कुंभ में स्वग्रही हैं। जो शुभाशुभकारक हैं। इससे कोर्ट–कचहरी संबंधित कार्यों में अपव्यय हो सकता है। जिससे तनाव की स्थिति रह सकती है। अतः वाद–विवाद से दूर रहें। अविवाहितों को विवाह के अनुकूल प्रस्ताव प्राप्त होंगे। दाम्पत्य जीवन में मधुरता, समरसता बनी रहेगी। लेखक, साहित्यकार, कलाप्रेमी, राजनेता, अभिनेता के लिए यह वर्ष अवरोध पूर्ण सफलता दायक रहेगा। शिक्षा, परीक्षा, प्रतियोगिता में इस वर्ष सामान्य सफलता के योग हैं। व्यय भाव में मंगल अमंगल स्थिति में होने से अकारण व्यय से आर्थिक स्थिति कमजोर बन सकती है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में रूके हुए कार्य पूर्ण होंगे। विरोधियों से राहत एवं ऋण से मुक्ति मिल सकती है। अचानक सफलता के नयें मार्ग प्रशस्त होंगे।

सिंह :– मा – मी – मू – मे, मो – टा – टी – टू, टे

ग्रहफल :– इस वर्ष 29 मार्च से शनि की ढ़ैय्या प्रारंभ होगी। आपकी राशि में लग्नेश सूर्य अष्टम भाव में मीन राशि अन्तर्गत बुध शुक्र राहु के साथ प्रतियुति करेंगे। चन्द्रमा व्यय भाव के स्वामी होकर लग्न में सूर्य की राशि में शुभाशुभफलकारक रहेंगे। मंगल चतुर्थ भाव एवं भाग्य भाव के स्वामी होकर लाभ भाव में शुभफलकारक रहेंगे। गुरू पंचम एवं अष्टम भाव के स्वामी होकर दशम भाव में शुक्र की राशि वृष में शुभाशुभफल कारक रहेंगे। फलतः शारीरिक–मानसिक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष ज्यादा अनुकूल नहीं रहेगा। बीमारी में सावधानी अपेक्षित है। व्यायाम, टहलना आदि संयमित दिनचर्या बनाने का प्रयास करें। कार्य व्यवसाय में गतिरोध के साथ सफलता प्राप्त होगी। नकारात्मक सोच से दूर रहकर ही आप किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। विरोधियों से सतर्कता रहें। कार्य विस्तार की योजना कुछ कष्टदायक रहेगी। अनावश्यक तनाव, विवाद, वाहन दुर्घटना आदि से पीड़ित रहेगे। राजकार्य में भी परेशानी बढ़ेगी। शिक्षा परीक्षा, प्रतियोगिता में गंभीर रहकर ही सफलता प्राप्त होगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सार्थक होंगे। राजकीय कर्मचारियों को प्रतिकूल स्थानान्तरण से कष्ट होगा। हालांकि वर्ष के उत्तरार्द्ध में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है। परिवार के लोगों से वैचारिक मतभेद एवं असहयोग संभव। संपत्ती से संबंधित विवाद उठ सकते हैं। हालांकि जीवन साथी व मित्रों के सहयोग से राहत मिलेगी। अविवाहितों के विवाह में बाधाएं उत्पन्न होगी। निःसंतान दम्पत्तियों को संतान प्राप्ति होगी। यदि आप राजनैतिक या सामाजिक नेता, अभिनेता या कलाकार हैं तो इस वर्ष अच्छी सफलता प्राप्त हो सकती है। उच्च पद प्राप्ति योग बन सकता है।

कन्या :– टो – प (प्र) – पी, पू – ष – ण – ठ, पे – पो

ग्रहफल :– इस वर्ष आपकी राशि में लग्नेश बुध एवं दशम भाव के स्वामी होकर सप्तम भाव में गुरू की राशि मीन में सूर्य शुक्र राहु के साथ प्रतियुति होने से शुभफलप्रदायी हैं। गुरू चतुर्थ एवं सप्तम भाव के स्वामी होकर भाग्य भाव में शत्रु शुक्र की राशि वृष में सामान्य शुभफलकारक रहेंगे। शनि पंचम एवं षष्ठ भाव के स्वामी होकर अपनी ही राशि में विराजमान हैं जो शुभाशुभफलकारक रहेगे। फलतः यह वर्ष सामान्यतः शुभ रहेगा। भाग्येश गुरू होने से आर्थिक उन्नति होगी। दूसरों की भलाई में ही आपका भला निहीत है। पुण्य कर्म का कोई अवसर न छोड़ें। कार्य, व्यवसाय में विस्तार की योजना भी फलीभूत हो सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उतार – चढ़ाव पूर्ण रहेगा। पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अविवाहितों को विवाह के अनुकूल प्रस्ताव प्राप्त होंगे। वैवाहिक जीवन में मधुरता–समरसता बनी रहेगी। पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। पंचम भाव के स्वामी शनि का प्रभाव होने से शिक्षा, परीक्षा, प्रतियोगिता में कठिन परिश्रम से सफलता के आसार बन सकते हैं। नौकरी में अनुकूल स्थानांतरण तथा पदोन्नति के प्रयास सार्थक हो सकते हैं। प्रेम प्रसंगों में प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है। भूमि, भवन आदि के क्रय विक्रय में सतत प्रयास लाभकारी होगें। सामाजिक, राजनैतिक लोगों के लिए यह प्रभावपूर्ण वर्ष रहेगा। बेरोजगारों को रोजगार प्राप्ति की दिशा में सार्थक प्रयास हो सकते हैं। अचानक कोई दूरस्थ धार्मिक यात्रा भी संभव है।

तुला :– रा – री, रू – रे – रो – ता, ती – तू – ते

ग्रहफल :– इस वर्ष आपकी राशि में लग्नेश शुक्र लग्न एवं अष्टम के स्वामी होकर शत्रु गुरू की राशि मीन में षष्ठ भाव में शुक्र, सूर्य, बुध, राहु के साथ प्रतियुति कर रहे हैं। जो शुभाशुभफल कारक है। मंगल धन भाव एवं सप्तम भाव से स्वामी होकर मंगल बुध की राशि मिथुन में भाग्य – भाव में शुभफलप्रद स्थिति में रहेगे। गुरू तृतीय भाव एवं षष्ठ भाव के – स्वामी होकर गुरू अष्टम भाव में शुक्र की राशि में अशुभ फलकारक की स्थिति में चलेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से इस वर्ष सावधानी बरतें। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष साधारण रहेगा। आमदनी कम और खर्च विशेष रहेगा। संयम बनाये रखें। नवीन कार्य व्यवसाय में जोखिम पूर्ण निवेश से बचें। नौकरी में बेवजह वाद विवाद से बचें। अन्यथा मानसिक कष्ट हो सकता है। सामाजिक, राजनैतिक व्यक्तियों के लिए भी यह वर्ष अधिक फलप्रद नही रहेगा। अविवाहितों द्वारा विवाह हेतु किये प्रयास सफल रहेंगे। वैवाहिक जीवन में विरोधाभास, मनमुटाव, आपसी सामंजस्य में कमी आयेगी। परिवार में भी अचानक वैर विरोध की स्थिति बन सकती है। माता–पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

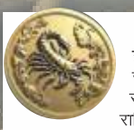

वृश्चिक :– तो, ना – नी – नू – ने, नो – या – यी – यू

ग्रहफल :– इस वर्ष आपकी राशि में लग्नेश मंगल लग्न एवं षष्ठ भाव के स्वामी होकर अष्टम भाव में बुध की राशि मिथुन में शुभफल कारक रहेंगे। जबकि सूर्य दशमभाव के स्वामी होकर पंचम भाव में गुरू की राशि मीन में बुध, शुक्र, राहु के साथ प्रतियुति करेंगे। जो कुछ शुभफल कारक रहेंगे। चन्द्रमा भाग्य भाव के स्वामी होकर लग्न में वृश्चिक राशि में विचरण करेगे। जो शुभ फलप्रद नही है। वहीं शनि तृतीय एवं चतुर्थ भाव के स्वामी होकर स्वयं राशि में शुभ फलप्रद स्थिति में चलेंगे। जिससे यह वर्ष शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। आर्थिक स्थिति उतार–चढ़ाव पूर्ण रहेगी। व्यापार में प्रयास के अनुरूप फल प्राप्त नहीं होगा। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। शिक्षा परीक्षा, प्रतियोगिता में कठिन परिश्रम से ही सफलता प्राप्त होगी। अनजान लोगों से सावधान रहें तथा साझेदारी के कार्य में सतर्क रहें। दाम्पत्य जीवन में सुख–शान्ति व मधुरता बनी रहेगी। धार्मिक यात्रा के योग भी बन सकते हैं। दीर्घकालिक निवेश लाभकारी हो सकता है। राजनैतिक क्षेत्र में पद–प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। वाणी में संयम रखें।

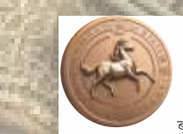

धनु :– ये – यो – भ – भी, भू – ध – फ – ढ, भे

ग्रहफल :– ग्रहीय गणना के अनुसार वर्षारंभ में लग्नेश गुरू लग्न एवं चतुर्थ भाव के स्वामी होकर गुरू षष्ठ भाव में शुक्र की राशि वृष में शुभाशुभ रहेंगे। बुध सप्तम एवं दशम भाव के स्वामी होकर चतुर्थ भाव मे बुध मीन राशि के अन्तर्गत चतुरग्राही योग बना रहे हैं, जो शुभ फलकारक रहेंगे। शुक्र षष्ठ भाव एवं लाभ भाव के स्वामी होकर चतुर्थ भाव गुरू की राशि मीन में यह सूर्य बुध राहु के साथ प्रतियुति करेंगे। 29 जनवरी से शनि की ढैय्या प्रारंभ होगी। फलतः इस वर्ष स्वास्थ्य नरम–गरम ही रहेगा। आर्थिक स्थिति उतार चढाव पूर्ण रहेगी। इस वर्ष संपत्ति के रख रखाव एवं नव निर्माण में खर्च विशेष हो सकता है। कार्य व्यवसाय के विस्तार में अवरोध आ सकते हैं। नौकरी में उच्चाधिकारियों से वैचारिक मतभेद से परेशानी हो सकती है। कोर्ट–कचहरी में जाना पड़ सकता है। जीवन साथी के स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। मंगल अष्टम भाव के स्वामी होने से अचानक खर्च से भी चिंता रहेगी। संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होने से परिवार में खुशी होगी। यदि आप राजनेता, खिलाड़ी, संगीतकार, वादक, अभिनेता हैं तो इस वर्ष शुक्र के शुभ प्रभाव से सफलता मिल सकती है। वाणी की उग्रता साथियों में वैर–विरोध उत्पन्न कर सकती है।

मकर :– भो – जा – जी, खी – ख – खे, खो, ग – गी

ग्रहफल :– ग्रहीय गणना के अनुसार आपकी राशि में लग्नेश शनि एवं लग्न व धन भाव के स्वामी होकर शुभफल कारक रहेंगे। चंद्रमा सप्तम भाव के स्वामी होने से शुभशुभकारक रहेंगे। वहीं सूर्य अष्टम भाव के स्वामी होकर तृतीय भाव गुरू राशि मीन में बुध शुक्र राहु के साथ प्रतियुति से शुभाशुभ फलकारक रहेंगे। गुरू तृतीय एवं व्यय भाव के स्वामी होकर पंचम भाव में शुक्र की राशि में शुभाशुभफल कारक रहेंगें। मंगल चतुर्थ एवं लाभ भाव के स्वामी होकर षष्ठ भाव में बुध की राशि मिथुन में कुछ शुभफलकारक रहेंगे। फलतः यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से नरम रहेगा। कार्य व्यवसाय भी सामान्य रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष कठिन है। आमदनी की अपेक्षा खर्च अधिक रहेगा। फालतू खर्च से आर्थिक स्थिति थोड़ी डांवाडोल रहेगी। दूसरों के कार्य–व्यवहार से अप्रियता उत्पन्न हो सकती है। अतः वाणी एवं व्यवहार पर संयम रखकर कार्य करना ही बुद्धिमानी है। अविवाहितों को विवाह के प्रस्ताव मिलेंगे एवं निः संतान दम्पत्तियों को संतान प्राप्ति होगी। शिक्षा–परीक्षा, प्रतियोगिता में अपेक्षित सफलता प्राप्त हो सकती है। भूमि, भवन, वाहन आदि क्रय विक्रय में विशेष सावधानी अपेक्षित है। राजनैतिक क्षेत्र में विशेष पद लाभ प्राप्त हो सकता है।

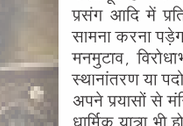

कुंभ :– गु – गे, गो – सा – सी – सू, से – सो – द

ग्रहफल :– ग्रहीय गणना के अनुसार शनि की साढ़ेसाती चल रही है। इस वर्ष लग्नेश शनि लग्न एवं व्यय भाव के स्वामी होकर अपनी राशि कुंभ में विचरण कर रहें हैं। जो शुभाशुभ फलकारक रहेंगे। फलतः यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष थोड़ा उतार–चढाव भरा रहेगा। व्यापार में आशानुरूप सफलता मिलेगी। परंतु व्यय भाव के स्वामी शनि होने से माता–पिता पुत्र या पत्नी की धन व्यय भी हो सकता है। अचानक किसी मंगल कार्य में भी धन व्यय हो सकता है। कार्य–व्यवसाय व नौकरी के विस्तार की योजना फलीभूत हो सकती है। शिक्षा परीक्षा, प्रतियोगिता में प्रतिकूल स्थिति बन सकती है। प्रेम प्रसंग आदि में प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है। अविवाहितों को विवाह में कुछ परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव के स्वामी सूर्य पर शनि की दृष्टि होने से दाम्पत्य जीवन में मनमुटाव, विरोधाभास, आपसी तालमेल का अभाव बना रहेगा। नौकरी में अनुकूल स्थानांतरण या पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। प्रशासनिक सेवा के अधिकारी हैं तो इस वर्ष अपने प्रयासों से मंत्रियों के विश्वास पात्र बन सकते हैं। अचानक परिवार के साथ – दूरस्थ धार्मिक यात्रा भी हो सकती है। भूमि, भवन, वाहन आभूषण आदि के क्रय का लाभ प्राप्त हो सकता है। आवश्यकता से – अधिक किसी पर विश्वास ना करें। मंगल पंचम भाव में होने से संतान के अकार्य से मानहानि, धनहानि हो सकती है। यदि आप खिलाड़ी, गायक, वादक, नेता, अभिनेता हैं तो इस वर्ष विशेष सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। कुछ भाग्यशाली कलाकारों को विशेष अवार्ड भी प्राप्त हो सकते हैं।

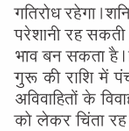

मीन :– दी, दू – थ – झ – ञ, दे – दो – चा – ची

ग्रहफल :– ग्रहीय गणना अनुसार शनि की साढ़ेसाती चल रही है। – इस वर्ष आपकी राशि में लग्नेश गुरू लग्न एवं दशम भाव के स्वामी होकर – तृतीय भाव में शुक्र की राशि वृष में विचरण करेंगे। जो शुभाशुभ फलकारक रहेंगे। बुध चतुर्थ एवं सप्तम भाव के स्वामी होकर लग्न में गुरू की राशि मीन में सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, राहु के साथ प्रतियुति करेंगे जो शुभफलप्रद है। मंगल धन भाव एवं भाग्य भाव के स्वामी होकर चतुर्थ भाव में बुध की राशि मिथुन में कुछ शुभ फलकारक स्थिति रहेगी। फलतः इस वर्ष स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। चिकित्सक से नियमित परामर्श लें। आर्थिक स्थिति भी उतार–चढाव पूर्ण रहेगी। जिससे कार्य व्यवसाय में गतिरोध रहेगा। शनि व्यय भाव में स्वामी होने से अनर्गल खर्च अधिक रहेगा। इससे मानसिक परेशानी रह सकती है। दूसरों के आचार विचार एवं व्यवहार से अप्रसन्नता एवं परेशानी का भाव बन सकता है। किसी वाद विवाद में ना पड़े। पंचम भाव के स्वामी चन्द्रमा इस वर्ष मित्र गुरू की राशि में पंचग्राही योग बनने से शिक्षा, परीक्षा, प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब हो सकता है। दाम्पत्य जीवन अनुकूल रहेगा परंतु स्वास्थ्य को लेकर चिंता रह सकती है। व्यापार में सुअवसर प्राप्त होंगे। कलाकारों को उच्च स्तरीय सम्मान प्राप्त हो सकता है। प्रशासनिक सेवा के अधिकारी को पदोन्नति प्राप्त हो सकती है। इस राशि के राजनेताओं के लिए यह वर्ष शुभ सूचक है। उच्च पदाधिकारियों से समन्वय बना कर रखें। अचानक सुदूर यात्रा योग बन सकता है। परंतु वाहन से कष्ट हो सकता है, अतः सावधानी रखें। गुरू कुछ निर्बल स्थिति में होने से आर्थिक स्थिति अस्थिर रहेगी।

बैंड, बाजा और बारात की रौनक 16 से

15 दिसंबर से शुरू हुआ धनु मलमास पौष शुक्ल तृतीया 14 जनवरी (मकर संक्रांति) को समाप्त होगा। इसके बाद फिर से शादी एवं अन्य मांगलिक कार्य शुरू होंगे। बसंत पंचमी 2 फरवरी को शादियों का अबूझ सावा माना गया है।

14 जनवरी 2025 को सुबह 8 बजकर 55 मिनट पर सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करते ही खरमास समाप्त हो जाएगा। इसके साथ ही शुभ व मांगलिक कार्यों से रोक हट जाएगी।

नव वर्ष 2025 का पहला नौ रेखीय सावा 16 जनवरी को, छह रेखीय सावा 18 जनवरी व सात रेखीय सावा 19 व 21 व 30 जनवरी को नौ रेखीय 22 जनवरी को छह रेखीय, 3 फरवरी को सात रेखीय, 7 फरवरी को सात रेखीय, 13 फरवरी को सात, रेखीय, 14 फरवरी को सात रेखीय, 15 फरवरी को सात रेखीय, 18 फरवरी को छह रेखीय, 20 फरवरी को आठ रेखीय सावे होंगे। पांच मार्च के सावे के बाद 7 मार्च को होलाष्टक लग जाएंगे। जिससे दोबारा शुभ व मांगलिक कार्यों पर विराम लग जाएगा और 14 मार्च को मीन मलमास शुरू हो जाएगा।

प्रत्यूष समाचार

राजस्थान विद्यापीठ सर्वश्रेष्ठ डीम्ड विवि से सम्मानित

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी यूनिवर्सिटी) को आईआईआरएफ इम्पैक्ट अवाड्र्स 2025 में शिक्षा और शोध की कैटेगरी में सर्वश्रेष्ठ डीम्ड यूनिवर्सिटी का पुरस्कार मिला है। यह पुरस्कार विवि के प्रताप नगर परिसर में भारतीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (आईआईआरएफ) के प्रतिनिधि शिव शंकर शर्मा ने प्रदान किया। कुलपति प्रो. कर्नल एसएस सारंगदेवोत और कुल प्रमुख बीएल गुर्जर ने विश्वविद्यालय की ओर से यह सम्मान प्राप्त किया। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि यह सम्मान हमारे संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के अथक सफल प्रयासों का प्रमाण है। राजस्थान विद्यापीठ में हम परंपरागत शिक्षा को आधुनिकता के साथ मिलाने का प्रयास करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे शैक्षणिक और शोध प्रयास समाज में सार्थक योगदान दें।

कृषि पर्यवेक्षक भर्ती में रॉयल संस्थान को सफलता

उदयपुर। कालका माता रोड स्थित रॉयल इंस्टीट्यूट उदयपुर के छात्रों ने कृषि पर्यवेक्षक परीक्षा 2023 में सफलता हासिल की। निदेशक जीएल कुमावत ने कहा कि हमारा लक्ष्य केवल परीक्षा में सफलता दिलाना ही नहीं, बल्कि छात्रों को अपने सपनों को साकार करने का विश्वास दिलाना है। इस बार संस्थान से प्रियदर्शिनी राणावत उदयपुर, दिनेश कुमावत मावली आदि सहित कई छात्रों ने सफलता हासिल की।

सेंट मेरिज की छात्राएं राष्ट्रीय प्रतियोगिता में चयनित

उदयपुर। सेंट मेरिज स्कूल न्यू फतहपुरा की चार छात्राओं का राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन के आधार पर राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है। स्कूल की संस्थाप्रधान सिस्टर ज्योत्सना ने बताया कि बास्केटबॉल वर्ग 14 में मेघाश्री शेखावत, तैराकी वर्ग 17 में मनसांची कौर बग्गा, शतरंज वर्ग 19 में सांची जैन और बास्केटबॉल वर्ग 19 में वैभवी मेहता का राष्ट्रीय प्रतियोगिता में चयन हुआ है। यह सभी खिलाड़ी शिविर में प्रशिक्षण लेने के बाद राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगी।

बीएन की डॉ. शैलजा का सम्मान

उदयपुर। भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय में कार्यरत एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट शैलजा राणावत ने सशक्त महिला के रूप में स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। यह सम्मान समारोह उदयपुर के थूर में आयोजित हुआ। इसमें विभिन्न क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रतिभाशाली महिलाओं को सम्मानित किया गया।

महेश पालीवाल प्रदेश अध्यक्ष

घासा आदर्श ब्राह्मण फाउंडेशन की हाल ही में हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में डबोक निवासी महेश पालीवाल को सनातन धर्म के प्रति उनकी निष्ठा, लगन और समर्पण को देखते हुए राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है।

प्रिया को 'नारी शक्ति' सम्मान

उदयपुर। इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ मटीरियल्स मैनेजमेन्ट की नेशनल अवार्ड कमेटी ने नेशनल काउंसलर प्रिया मोगरा को 'नारी शक्ति 2024' अवार्ड से सम्मानित किया। राष्ट्रीय स्तर का यह अवार्ड मोगरा को दूसरी बार प्राप्त हुआ है। भिवाड़ी में हुए समारोह में 'बेस्ट चेयरमैन अवार्ड 2024' आईआईएमएम की उदयपुर शाखा को मिला। इसके लिए जेके टायर के मुख्य महाप्रबंधक अनिल मिश्रा को सम्मानित किया गया ।एससीएम के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए अविनाश भटनागर को प्रतिष्ठित मेम्बरशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया।

डॉ. अतुल लुहाड़िया को फैलोशिप अवार्ड

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के टीबी एंड चेस्ट रोग विशेषज्ञ डॉ. अतुल लुहाड़िया को एनसीसीपी के फैलोशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. लुहाड़िया को तमिलनाडु में आयोजित राष्ट्रीय चेस्ट सम्मेलन नैपकॉन में नेशनल कॉलेज ऑफ चेस्ट फिजिशियंस (एनसीसीपी) की फैलोशिप अवार्ड से नवाजा गया।

जिमनास्टिक चैम्पियनशिप का समापन

उदयपुर। राजस्थान राज्य जिमनास्टिक संघ के तत्वावधान में, नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में गत दिनों तीन दिवसीय सीनियर स्टेट जिमनास्टिक चैम्पियनशिप का समापन हुआ। उदयपुर जिला जिमनास्टिक संघ के अध्यक्ष हिम्मत सिंह चौहान ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि नारायण सेवा के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल थे। नितुल चंडालिया, अतुल चंडालिया, अंतर्राष्ट्रीय तैराकी कोच दिलीप सिंह चौहान, राजेन्द्र नलवाया, राजस्थान राज्य जिमनास्टिक अध्यक्ष चैन सिंह राठौड़, परमेश्वर कुमार एवं कान सिंह राठौड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रतियोगिता में महिला वर्ग में जोधपुर की टीम प्रथम तथा नागौर व अजमेर की टीम द्वितीय एवं तृतीय रहीं। वहीं

पुरुष वर्ग में जोधपुर की टीम प्रथम, भीलवाड़ा की द्वितीय और उदयपुर की टीम तृतीय स्थान पर रहीं। व्यक्तिगत स्पर्धा में दिशा - प्रथम, ईशा - द्वितीय एवं दीपा - तृतीय स्थान पर रहीं। यह तीनों विजेता जोधपुर से हैं। तथा पुरुष वर्ग में जोधपुर के शुभम-प्रथम, भीलवाड़ा से प्रतीक - द्वितीय और उदयपुर के कृष्ण - तृतीय रहे।

'अर्न एंड लर्न' कार्निवाल में झलका उत्साह

उदयपुर। भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय की कन्या इकाई में 'अर्न एंड लर्न' थीम पर कार्निवाल का उद्घाटन विश्वविद्यालय के चैयरपर्सन प्रो. कर्नल शिवसिंह सारंगदेवोत, मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड और प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़ ने किया। इस अवसर पर प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों के लिए लाभकारी होते हैं, क्योंकि यह उन्हें बाजार की मांग और आपूर्ति को समझने का अवसर प्रदान करते हैं। वहीं, डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि यह आयोजन विद्यार्थियों को व्यावसायिक कौशल सिखाता है और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में मदद करता है। कुलसचिव डॉ. निरंजन नारायण सिंह राठौड़ ने लकी ड्रा के परिणामों की घोषणा करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन स्वरोजगार के लिए प्रेरणादायक होते हैं। मेला संयोजक डॉ. कंचन राठौड़ और डॉ. लोकेश्वरी राठौड़ ने बताया कि चालीस से अधिक स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी स्वनिर्मित वस्तुएं बिक्री के लिए प्रस्तुत की।

डॉ. सुशील और डॉ. मनु को राज्यस्तरीय सम्मान

उदयपुर। आरएनटी मेडिकल कॉलेज के माइक्रोबायोलॉजी विभाग अध्यक्ष डॉ. सुशील कुमार साहू को विश्व एड्स दिवस पर जयपुर में राज्य स्तर पर राजस्थान स्टेट एड्स नियंत्रण सोसायटी ने सम्मानित किया। डॉ. साहू को मुख्य स्वास्थ्य सचिव गायत्री राठौड़ तथा परियोजना निदेशक शाहीन अली खान ने मरीजों के लिए एचआईवी/एड्स जांचों को सुगम बनाने तथा एचआईवी जांचों की गुणवत्ता के लिए उल्लेखनीय कार्यों पर प्रशस्ति पत्र दिया। इसी समारोह में उदयपुर जिला एड्स नियंत्रण सोसायटी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मनु मोदी को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में डॉ. अरविंदर सिंह का सौ फीसदी स्कोर

उदयपुर। अर्थ ग्रुप के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह ने जेनरेटिव ए आई और प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग का कोर्स मॉड्यूल पड्यू यूनिवर्सिटी, अमरीका से पूरा किया और गूगल सर्टिफिकेशन इन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्राप्त किया। उन्होंने कोर्स के विभिन्न मॉड्यूल्स में सौ फीसदी स्कोर हासिल किया। डॉ. सिंह इससे पहले तीन वर्ल्ड रिकॉर्ड्स और सिंगापुर में ग्लोबल मास्टर माइंड अवार्ड हासिल कर चुके हैं। वे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग का उपयोग करके डायग्नॉस्टिक सर्विसेज को बेहतर बनाने, मेडिकल प्रक्रियाओं को तेज करने और मेडिकल प्रोफेशनल्स के लिए आसानी से सुलभ प्लेटफॉर्म स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

खनि अभियंताओं की तकनीकी वार्ता

उदयपुर। माइनिंग इंजीनियर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया, उदयपुर चेप्टर कार्यालय पर 'अनुबंध निर्माण निष्पादन प्रबंधन विवाद समाधान और मध्यस्थता' विषयक तकनीकी वार्ता आयोजित की गई। इसमें लगभग 30 खनि अभियंताओं तथा भू-वैज्ञानिकों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता हिंदुस्तान जिंक के सेवानिवृत्त वाइस प्रेसीडेंट व एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर कानसिंह चौधरी थे। प्रश्नोतरी काल के दौरान डॉ. आर चौधरी, आर.सी. कुमावत ने बात रखी। मुख्य वक्ता का स्वागत आर. पी गुप्ता एवं पूर्व अध्यक्ष ए.के.कोठारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सचिव आसिफ एम अंसारी ने एवं संचालन डॉ. सुनील वशिष्ट ने किया।

बसंत त्रिपाठी बने संयोजक

उदयपुर। अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकर्ता समिति कलकत्ता के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष ठाकुर अनिल सिंह ने मावली निवासी साहित्यकार एवं समाज सेवी बसंतकुमार त्रिपाठी को संस्था के शिक्षा प्रकोष्ठ का राष्ट्रीय सलाहकार नियुक्त किया है। इस नियुक्ति से मेवाड़ जन तथा कांग्रेसजनों में प्रसन्नता है।

नाम लेखन पुस्तिका लोकार्पण

उदयपुर। हिंद सेवा मानव कल्याण ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री सीताराम श्री हनुमत कृपा नाम जप लेखन पुस्तिकाओं का लोकार्पण समारोह आलोक संस्थान में सम्पन्न हुआ। ट्रस्ट के अध्यक्ष दिव्य कुमार ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक फूल सिंह मीणा थे। अध्यक्षता आलोक संस्थान के निदेशक डॉ प्रदीप कुमावत ने की। विशिष्ट अतिथि ट्रस्ट के मुख्य संरक्षक डॉ ओ.पी. महात्मा, महंत इंद्रदेव दास ब्रह्मचारी, गुलाब दास, महंत नारायण दास वैष्णव, महंत दयाराम रामसनेही, महंत राधिका शरण शास्त्री थे। संचालन पूर्णिमा व्यास ने किया। डॉ. ओ.पी. महात्मा ने श्री हनुमान जी को सप्त चिरंजीवियों में से एक बताते हुए कहा कि सीताराम नाम लेखन एवं जप से मन में ऊर्जा एवं शक्ति का संचार होता है। ट्रस्ट के उपमुख्य संरक्षक अशोक मारू ने ट्रस्ट के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों पर रोशनी डाली। ट्रस्ट के पदाधिकारी कुंवर विजय सिंह कच्छवाहा, राजा भंडारी, मांगीलाल सालवी, गौरी शंकर वसीटा, ओमप्रकाश सेन, राजेंद्र सिंह भाटी ,हरीश राजोरा, यशवंत चौधरी, पन्नालाल मेनारिया,संत एच.आर. पालीवाल आदि भी उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन गौरव त्रिवेदी ने किया।

पीएमसीएच में गहन चिकित्सा इकाइयों का विस्तार

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में उन्नत तकनीक से युक्त बाल चिकित्सा एवं नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई का विस्तार किया गया। उद्घाटन पीएमयू के चेयरपर्सन राहुल अग्रवाल, प्रेसीडेंट डॉ. एमएम मंगल, पीएमसीएच के एग्जीक्यूटिव डॉयरेक्टर अमन अग्रवाल, सीईओ शरद कोठारी, बाल एवं नवजात शिशु रोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सुधीर मावड़िया एवं डॉ. पुनीत जैन ने किया। इस अवसर पर राहुल अग्रवाल ने बताया कि हमारा उद्देश्य उदयपुर और आसपास के क्षेत्रों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है। इस विस्तार के माध्यम से गंभीर चिकित्सा स्थितियों में बच्चों को तत्काल और प्रभावी उपचार की सुविधा मिलेगी।

आवास ऋणों पर 1.80 लाख रुपए तक ब्याज सब्सिडी

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑपरेटिव बैंक अध्यक्ष डॉ. किरण जैन ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना पार्ट 2 में ग्राहकों को ऋण उपलब्ध करा कर उन्हें सब्सिडी दिलाने के लिए बैंक द्वारा नेशनल हाउसिंग बैंक के एजीएम रविकुमार सिंह के साथ एमओयू साइन किया गया। महिला समृद्धि बैंक यह एमओयू करने वाला राजस्थान का दूसरा सहकारी बैंक एवं पहला महिला सहकारी बैंक बन गया है। बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना पार्ट 2 के अंतर्गत वित्तीय रूप से कमजोर से मध्यम आय वर्ग के लोगों को दिए जाने वाले आवास ऋण पर 4 प्रतिशत की दर से अधिकतम 1.80 लाख रुपए तक की सब्सिडी दी जाएगी।

डॉ. खराड़ी व प्रीतम को अटल सेवाश्री अवार्ड

उदयपुर। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय समता स्वतंत्र मंच जयपुर की ओर से आयोजित भारत नेपाल सांस्कृतिक सम्मेलन में पूर्व सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी को अटल सेवाश्री अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. खराड़ी वर्तमान में डूंगरपुर मेडिकल एंड हॉस्पिटल में कार्यरत है। यह सम्मेलन 16 दिसम्बर को सुबह 11 बजे जयपुर में हुआ। डॉ. खराड़ी को यह सम्मान उनके द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य के साथ ही सामाजिक उत्थान की दिशा में लगातार प्रयासों के लिए दिया गया। कार्यक्रम में उदयपुर के योगाचार्य प्रीतम सिंह चूण्डावत को भी अटल सेवाश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। चूंडावत नेशनल योगा रैफरी और शिवोहम योग केन्द्र उदयपुर के निदेशक हैं।

नीरजा मोदी स्कूल को इंडिया स्कूल मेरिट अवार्ड

उदयपुर। सोजतिया ग्रुप संचालित नीरजा मोदी स्कूल को एजुकेशन टूडे ने इंडिया स्कूल मेरिट अवार्ड 2024 से सम्मानित किया। चेयरमैन डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि प्रतिष्ठित एजुकेशन टूडे समूह द्वारा अवार्ड के लिए नीरजा मोदी स्कूल उदयपुर का चयन किया गया। द ताज बेंगलुरू में आयोजित समारोह में स्कूल की निदेशिका साक्षी सोजतिया ने यह प्रतिष्ठित अवार्ड प्राप्त किया। विद्यालय की इस उपलब्धि पर संस्था के फाउंडर प्रोफेसर रणजीतसिंह सोजतिया, ट्रस्टी रीना सोजतिया, डॉ. ध्रुव सोजतिया और नेहल सोजतिया ने खुशी जाहिर की।

मैगनस में सुपर मॉम-सुपर किड्स सेल्फी स्पर्धा

उदयपुर। मैगनस हॉस्पिटल की ओर से सुपर मॉम सुपर किड्स सेल्फी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पिस्टल शूटर दीपक शर्मा एवं बलदीप कोर थे। प्रतियोगिता में उदयपुर शहर से कई महिलाओं एवं बच्चों ने अपनी सेल्फी भेज कर प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगियों को मैगनेस हॉस्पिटल की डायरेक्टर डॉ शिल्पा गोयल एवं डॉ नवीन गोयल ने पुरस्कार वितरित किए। डॉ. बीडी मंगल ने सभी प्रतियोगियों को बधाई दी।

एकमे फिनट्रेड की बिजनेस कॉन्क्लेव संपन्न

उदयपुर। एकमे फिनट्रेड इंडिया लिमिटेड की बिजनेस कॉन्क्लेव मीटिंग संपन्न हुई। बैठक में मुख्य कार्यकारी अधिकारी सीएमडी निर्मल कुमार जैन एवं वरिष्ठ पदाधिकारी शिवप्रकाश श्रीमाली, केशूलाल मालवी, राजेंद्र चित्तौड़ा, आकाश जैन, जिनित जैन एवं सुरेश चन्द्र गुप्ता मौजदू रहे। मीटिंग में गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्य प्रदेश राज्यों की टीमों ने भाग लिया। यह आयोजन कलेक्शन और सेल्स को प्रोत्साहन देने और व्यावसायिक योजनाओं पर विचार-विमर्श के उद्देश्य से किया गया। यशपाल जैन और उनकी टू-व्हीलर टीम, कमलेश जैन एवं उनकी कमर्शियल व्हीकल टीम, दिनेश मटे कलेक्शन टीम, मुंबई को उत्कृष्टता कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

जादूगर आंचल का मैजिक शो

उदयपुर। लेकसिटी की जादूगर आंचल के मैजिक शो का उद्घाटन ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा व कलक्टर अरविंद पोसवाल ने किया। इस मौके पर देहात जिलाध्यक्ष चन्द्रगुप्तसिंह चौहान, डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री, महंत इन्द्रदेव दास, महंत अमर गिरी महाराज, नारायण सेवा संस्थान के फाउंडर कैलाश मानव, एमबी हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. आरएल सुमन, डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री मौजूद रहे।

चमन शेखर सुथार बने अध्यक्ष

उदयपुर। विश्वकर्मा सुथार समाज के चुनाव श्रीराम वाटिका में हुए। सबसे पहले आराध्य देव विश्वकर्मा की दीप प्रज्वलित कर आराधना की गई। समाज विकास संस्थान का नया अध्यक्ष चमन शेखर सुथार को चुना गया। सुरेश सुथार को संयोजक पद पर निर्विरोध निर्वाचित किया गया। महासचिव कन्हैयालाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गोवर्धन लाल, कोषाध्यक्ष गिरधारी लाल को जिम्मेदारी दी गई।

वरिष्ठ अधिवक्ता जैन दिल्ली में सम्मानित

उदयपुर। अधिवक्ता दिवस पर बार एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता रोशनलाल जैन का नई दिल्ली के हैबिटेट सेंटर में आयोजित समारोह में सम्मान किया गया। जैन के विधि क्षेत्र में 48 वर्ष के उल्लेखनीय योगदान पर न्यायमूर्ति ऋषिकेश राय एवं कोटेश्वर सिंह भारत के अटॉर्नी जनरल आर वैंकटरमणि ने सम्मानित किया।

राजेंद्र सेन बने संभाग प्रभारी

उदयपुर। श्री सेन समाज सम्राट समिति राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष विजय कुमार सेन ने समाजसेवी राजेंद्र सेन को उदयपुर संभाग प्रभारी मनोनीत किया है। सर्व ओबीसी समाज महा पंचायत ट्रस्ट के संस्थापक दिनेश माली एवं अध्यक्ष लोकेश चौधरी के नेतृत्व में राजेंद्र सेन का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में प्रवक्ता नरेश पूर्बिया, उपाध्यक्ष भेरूलाल कलाल एवं पी एस पटेल, कोषाध्यक्ष बालकृष्ण सुहालका, दिनेश माली, ओमप्रकाश डांगी, सरक्षक मणिबेन पटेल, धारावती सुहालका, मंजू सुथार दीपमाल मेवाड़ा सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

डॉ. छतलानी का सातवां विश्व रिकॉर्ड

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ में सेवारत डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी ने ओरिएंट बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना सातवां रिकॉर्ड दर्ज कराया है। डॉ. छतलानी ने एक वर्ष में विद्यार्थियों के लिए डिजिटल शिक्षा और अभिनव शिक्षण समाधानों को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न विषयों में सॉफ्टवेयर डिजाइन किए।

गुप्ता मेवाड़ जनशक्ति दल के संरक्षक

उदयपुर। मेवाड़ जनशक्ति दल राजस्थान द्वारा संगठन के प्रेरणा पाथेय स्वामी हितेश्वरानंद सरस्वती की अनुशंसा पर मेवाड़ जनशक्ति दल के संस्थापक नरेश कुमार शर्मा ने कोर कमेटी की बैठक में सर्व समिति से स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के समन्वयक के के गुप्ता को संगठन में संरक्षक पद पर मनोनीत किया। यह जानकारी जिला अध्यक्ष देवेंद्र बोयल ने दी।

चुघ असिस्टेंट गवर्नर नियुक्त

उदयपुर। रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3056 की नियुक्त प्रांतपाल रोटेरियन प्रज्ञा मेहता ने 2025-26 की डिस्ट्रिक्ट टीम की घोषणा की। इसमें रोटरी क्लब उदयपुर उदय के पूर्व अध्यक्ष रोटेरियन राजेश चुघ को वर्ष 2025-26 के लिए असिस्टेंट गवर्नर नियुक्त किया गया।

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्रीमती चन्द्रकांता जी याग्निक धर्मपत्नी स्व. मनोहरलाल जी याग्निक का 13 नवम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र देवकीनंदन, ऋषिनंदन, राजेन्द्र वल्लभ व भूपेश बिहारी पुत्रियां श्रीमती मधु व अनुसुइया तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व देवर-देवरानी तथा भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री विश्वजीतसिंह जी शक्तावत का 3 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यक्ति हृदय माता-पिता श्रीमती सरोजकुंवर-अमरसिंह जी, भ्राता दिग्विजयसिंह, निर्भयसिंह सहित ताऊ-ताईजी का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती आशालता जी कोठारी (धर्मपत्नी स्व. श्री अनोखीलाल जी) का 4 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र अजीत व आनंद कोठारी, पुत्री श्रीमती आभा व देवर-देवरानियों, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों तथा भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री ओमप्रकाश जी पाहुजा का 26 नवम्बर को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी पदमादेवी, पुत्र दिलीप, पुत्रवधु रिया (स्व. मनोजजी), पुत्री उर्वशी केसवानी, पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री एवं भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। चतुर्भुज हनुमान राष्ट्रीय व्यायामशाला के संस्थापक श्री ओमप्रकाश जी सेन का 28 नवम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी मंजूदेवी, पुत्र क्रिश, पुत्रियां कुनिका व प्रियंका तथा भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। एडवोकेट चन्द्रप्रकाश जी शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा जी शर्मा का 15 नवम्बर को निधन हो गया। पुत्री ममता मित्तल, दोहित्र गीत व देवर-देवरानियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री भंवरलाल जी शर्मा मांदीवाल का 21 नवम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती शांता, पुत्र कनिश, पुत्रियां ऋतुदेवी, ऊषा, कीर्ति तथा भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री किशनलाल जी दया का 28 नवम्बर को देहांत हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पिता रामलालजी, धर्मपत्नी तारादेवी, पुत्र भूपेश, पुत्री रिद्धिमा गटकणिया, पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री एवं भाई-भतीजों, चाचा-चाचियों का वृहद एवं संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। नांदेशमा वाले चुन्नीलाल जी चपलोत की धर्मपत्नी श्रीमती तुलसा देवी जी का 15 नवम्बर को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र राकेश व राजकुमार, पुत्रियां श्रीमती शशि बिसलोत, गिरिजा नाहर व शीला धाकड़ सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व जेठ-जेठानियों का संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। प्रो. डॉ. संगीता शर्मा का 29 नवम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पति डॉ. सुशील निम्बार्क, पुत्र धवन निंबार्क, पुत्री दीवा निंबार्क एवं जेठ-जेठानियों व भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। वे मीरा गर्ल्स कॉलेज में अंग्रेजी प्राध्यापिका थीं। उनके पिता प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. डॉ. के. के. शर्मा का भी कुछ माह पूर्व ही निधन हुआ था।

उदयपुर। श्रीमती यशोदा जी कोठारी (धर्मपत्नी स्व. श्री अमरसिंह जी कोठारी) का 6 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र सम्पत कुमार दुर्गेश व हेमंत कोठारी, पुत्रियां श्रीमती निर्मला, प्रभा देवी, संतोष देवी, प्रमिला देवी, राजकुमारी, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रयों एवं भ्राता अम्बालाल जी बोहरा समेत भानेज-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। आकाशवाणी उदयपुर से सेवानिवृत्त कार्यक्रम अधिशासी डॉ. इन्द्रप्रकाश जी श्रीमाली का स्वर्गवास 11 नवम्बर को हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी पुष्पादेवी, पुत्र जयंत प्रकाश, सुधीर, योगेश, कौस्तुभ, वैभव एवं पुत्रियां विशेषता डॉ. धारणा, चंचल, डॉ. यामिनी, निशा व चेष्टा सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री बसंतीलाल जी कालानी का 3 दिसम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती समरथ देवी, पुत्र कैलाश व विमल, पुत्री श्रीमती विनीता मण्डोवरा तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री माणकलाल जी काबरा का 5 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती शांता देवी, पुत्र वीरेन्द्र, राकेश, राजकुमार, गिरिराज व मंगल काबरा तथा पौत्र-पौत्रियों, भाई-भतीजों सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

Rakesh Kumawat, CMD
94141 62686

Shubham Kumawat
+91 9001161614 (M)

ER. Rajat Kumawat
+91 7568347991 (M)
+ 91 7230051822 (O)

Wholesaler

Retailer

- Bathroom Tiles
- Elevation Tiles
- Kitchen Tiles
- Poster Tiles
- Sanitary ware
- Imported Ceramic Tiles
- Table Tops
- SS Kitchen Sink
- Bathroom Mirror
- Bathroom Basins
- PVC Pipe & Fitting
- Decorated Wall and Floor Tiles

CERA · Alient · MULTISTONE TILES · ACURA BATH FITTINGS · UltraTech CEMENT · LV GRANITO

SHUBHAM TILES

18, 120 Feet Main Road, H.M. Sector-5, Udaipur- 313001, Rajasthan
10, R.M.V. Compound Road, Surajpole, Udaipur - 313001, Rajasthan
Email: shubhamtilesudaipur@gmail.com

Hotel Yois
A unit of bhmpl

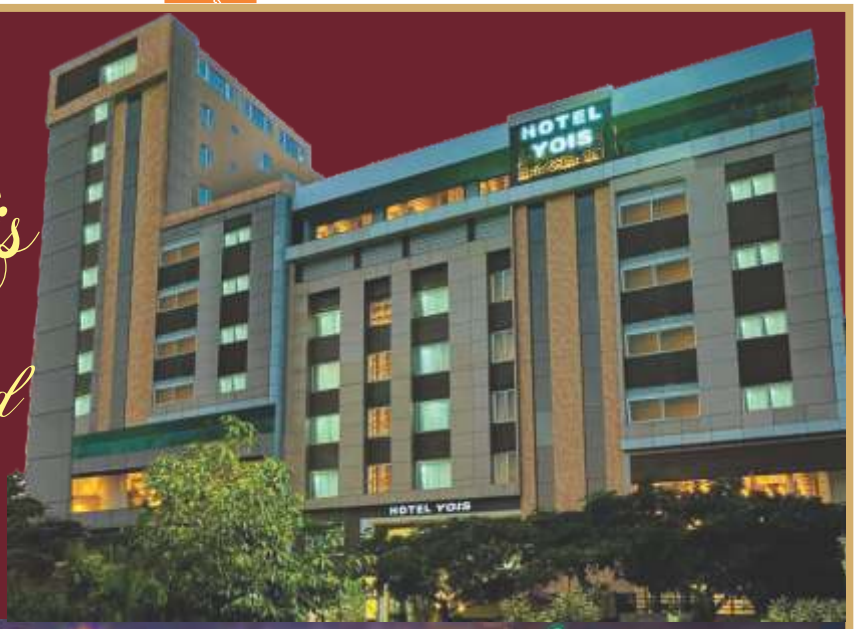

Hotel Howard Elegant
Multi-Functional Hall

The Occasion
Wedding & Special Events

Silver Spoon
Multi-cuisine Restaurant ■ Pure Veg.

The Regal
Multi-Functional Garden

Ramada Encore
A Unit of J&J Enterprises

Plot No.8 Nr. Mahila Police Thana, 100 FEET Road, Roop Nagar Bhuwana,
Opp. The Occasion Wedding & Special Event Garden,
Udaipur 313001 Rajasthan, India.
Contact : 8239366888, 8239466888, 9828596555 email: gm@hotelyois.com reservations@hotelyois.com

Abhishek Vaswani
Dev Vaswani

Happy New Year

Hardik Vadhavana
Jainesh Shah
Jatin Nagani

CLUB elrow UDAIPUR

Omega Leisure Lounge Private Limited

Elrow Club & Cocktail Garden

Badi Main Road, Badi, Udaipur
For Reservation : 8306154666, 8306154777

PMCH
HEALTH ADVISORS

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, बेदला

नव वर्ष के शुभ अवसर पर

नि:शुल्क

चिकित्सा परामर्श, जाँच, भर्ती एवं ऑपरेशन शिविर

दिसम्बर 23 2024 से जनवरी 23 2025

समय: प्रात 9.00 बजे से दोपहर 3.00 बजे तक

नि:शुल्क परामर्श

नि:शुल्क रक्त एवं मूत्र की जाँच

नि:शुल्क वार्ड में भर्ती

नि:शुल्क ECG, X-Ray, सोनोग्राफी, इकोकार्डियोग्राफी मैमोग्राफी

नि:शुल्क बच्चेदानी का ऑपरेशन (दवाइयों सहित)

नि:शुल्क सभी तरह के ऑपरेशन

CT Scan मात्र ₹1500/-

MRI मात्र ₹2500/-

नि:शुल्क डिलीवरी
(सामान्य एवं सिजेरियन)
(नवजात शिशु की सम्पूर्ण सुरक्षा के साथ)
(दवाईयों सहित)

नि:शुल्क ऑपेरशन (दवाईयों सहित)
बवासीर (पाईल्स), फिशर,
फिस्टुला एवं अपेंडिक्स
रजिस्ट्रेशन अनिवार्य : 9549597248

हर्निया एवं पित्त की थैली की
पथरी का दुरबीन द्वारा ऑपेरशन
मात्र ₹5000/- (दवाइयों सहित)
रजिस्ट्रेशन अनिवार्य : 9549597248

IVF@₹70,000*

अंबेरी पुलिया से पेसिफिक हॉस्पिटल बेदला के लिए आने एवं जाने के लिए मरीजों को नि:शुल्क वाहन की सुविधा

योजनाओं एवं सभी इंश्योरेंस एवं TPA के कैशलेस ईलाज के लिए अधिकृत हॉस्पिटल

24/7 EMERGENCY SERVICES

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल

भीलों का बेदला, एन.एच.-27, प्रताप पुरा, अम्बेरी, उदयपुर - 313011 (राजस्थान)
फोन : 7976547277, 95495 97248, 9828144314

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 22 अंक 9, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2024-26 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur
'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001